Vol . 0 1 - No 02

काल ज्ञान सिद्धि महा विशेषांक

Second Issue

Feb - 2011

Dedicated

To

The Divine Holy Lotus Feet of
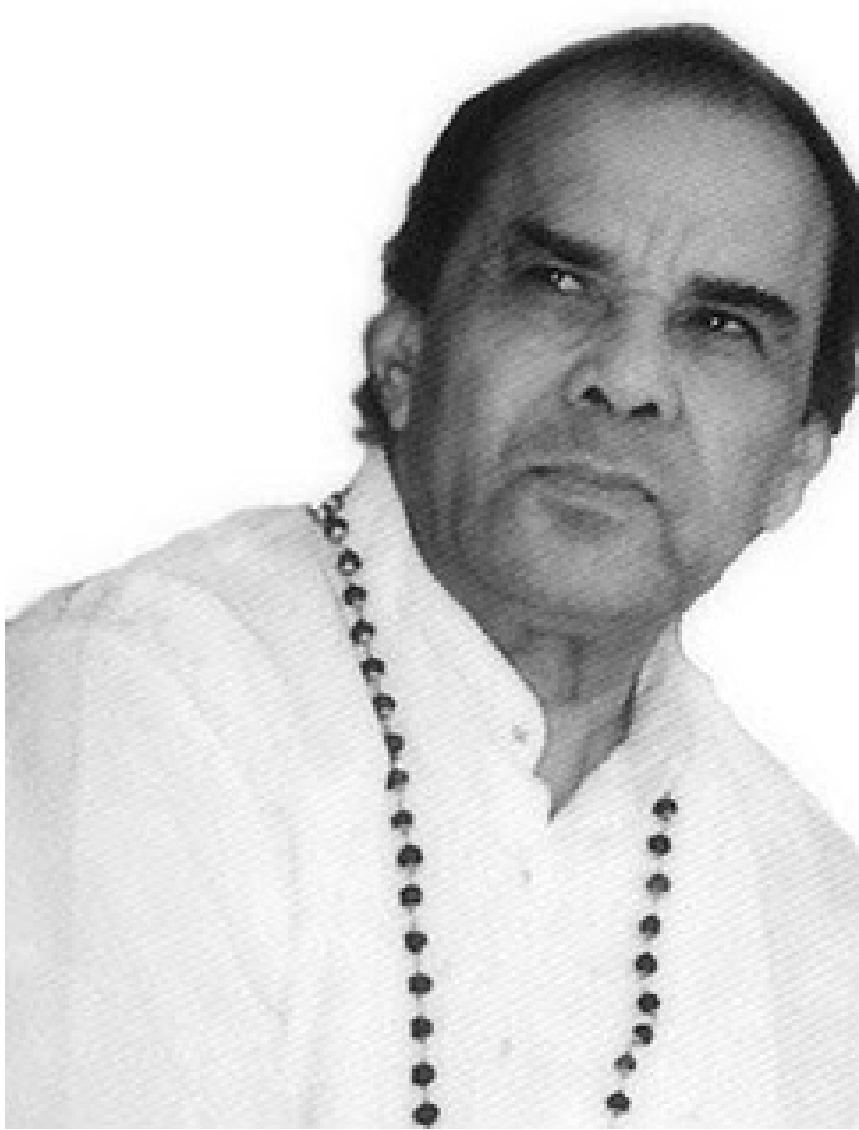
Param Poojya Sadgurudev Dr. Shri Narayan Datt Shrimali JI

(Paramhansa Swami Nikhileshwaranand ji)

Name of the Articles | Page #

General Rules :

This free e magazine available only to the follower register in the blog Nikhil-alchemy2.blogspot.com. and also nikhil-alchemy groups memeber . the article appear here, are /will be based on the divine wisdom of **SadGurudev Dr Shri Narayan Dutt Shrimali ji** , and his sanyasi shishyas . we as a your fellow guru brother, here just providing words to their thought. For the address of these mahayogi's are not known to us, as they all are wondering saints.

The sadhana and mantra appeared /mentioned in any article can be practiced ,on your own responsibility, if would be much better ,if prior related diksha ,and permission and direction ,guidance opt from sons of poojya paad sadgurudevji .

Poojya Gurudev Shri Nandkishor shrimali ji,
Poojya Gurudev Shri Kailash Chandra shrimali ji,
Poojya Gurudev shri Arvind shrimali ji,
can be contacted at Jodhpur Rajasthan(India).

Please do not ask us for any type of sadhana related material, and also for Diksha related Queries , for that you have to contact directly poojya guru Trimurti at jodhpur.

Since sadhana is a very complex matter for success and failure of any sadhana mentioned in any article here , many things required , to get success , that's why ,we do not take any responsibility in this connection. we also request, not to do any sadhana ,which is adverse and not permitted as per legal, morel, society belief.

This e magazine will be published monthly. You are receiving this magazine ,means that you are accepting the term and condition . at any time , you can withdraw your registration . this e magazine just a forum to share knowledge between us (All guru brother and sister of Sadgurudev ji),

if still any one raises ,question regarding the authenticity of articles published here , for them treat all articles just as a fiction and a ear say.

सम्पादकीय ……

मेरे भाइयों और बहनों, जय गुरुदेव,

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

पत्रिका का ये दूसरा अंक 'काल सिद्धि महाविशेषांक' है. पत्रिका का पहला अंक आपको बहुत पसंद आया , इसके लिए हम सभी हृदय से आपके आभारी हैं. और पत्रिका को और बेहतर करने के लिए आप सभी के सुझावों का स्वागत है. काल शब्द अपने आप विशाल पर्यायवाची अर्थों को समेटे हुए है. हम भी आप सभी के मात्र गुरु भाई हैं. ये जो भी ज्ञान श्रृंखला को आप सभी के सम्मुख हमने रखने की चेष्टा की है , ये सारा का सारा ज्ञान सदगुरुदेव और हमारे परम पूज्य गुरु त्रिमूर्ति द्वारा प्रदत्त है, बिना उन के आशीर्वाद और मार्गदर्शन के ये सब सहज रूप में कभी नहीं हो सकता था. एक महत्वपूर्ण बात मैं यहाँ पर जरुर कहना चाहूँगा की ये पत्रिका सिर्फ हमारे गुरु भाई बहनों और उन जिज्ञासुओं के लिए है जो तंत्र या साधना के पथ पर गति शील हैं या होना चाहते हैं, और बाकि जिन लोगो की कोई आस्था नहीं है ,

वे कृपया सभी सामग्री को गप्प ही समझे तो उचित होगा. हम उन लोगो के लिए ऐसा कोई दावा नहीं करते , ना ही हम ऐसी किसी बहस में शामिल होंगे और ना ही उसके ऊपर कोई टिप्पणी हमें मंजूर है यदि आपको इसमें कोई भरोसा नहीं है तो मात्र इसे कहानी ही समझे या पढ़ने में अपना बहुमूल्य समय ही न लगाये. काल का अर्थ है समय , मृत्यु, पर ये तो वो अर्थ है जो हमने अभी तक सुना है. वास्तव में काल सिद्धि का अर्थ होता है अपराजेय होने की क्रिया का ज्ञान . और इसके बहुत से आयाम हैं. जिन्हें एक साथ समेटना अत्यधिक दुष्कर था , परन्तु उनमे से कुछ सरल प्रयोगों या जानकारियों को चुनकर आपके समक्ष रखा है , यदि आप लोगो को इस जानकारी से जरा सा भी लाभ हुआ तो हम अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे.

मेरे दोनों भाइयों श्री अनुराग सिंह जी और श्री रघुनाथ निखिल जी के बगैर मेरा ये स्वप्न साकार नहीं हो पाता, सोचने को विवश कर देना ही 'तंत्र कौमुदी' का उद्देश्य है. हमने जो भी प्रयोग दिए हैं वो तीन ही प्रकार के हैं.१- वो प्रयोग जिन्हें खुद अनुभूत किया है.२- जो जिन्होंने सिद्ध किया है उनसे प्राप्त हुए हैं और ३- वे प्रयोग जो गुरु परंपरा से प्राप्त हुए है. इसलिए हमारे लिए तो संदेह का कोई अर्थ ही नहीं है. कृपया अपना आत्म बल देखकर और गुरु से सम्बंधित मार्गदर्शन लेकर ही आगे बढे. ये कोई एक दिन में हो जाने वाली क्रिया नहीं है बल्कि सतत चलने वाली क्रिया है, तभी सफलता प्राप्त होती है. अतः धैर्य हो तभी आप आगे बढे अन्यथा अपना कीमती समय व्यर्थ में न बर्बाद करे. तंत्र आपके जीवन में सरस और सुगम बने यही प्रार्थना हम आप सभी के लिए अपनी गुरु परंपरा से करते हैं.

आपका ही

आरिफ

SADGURUDEV - PRASANG

सदगुरुदेव प्रसंग

****

काल तंत्र और पंचमहाभूत संस्कार

In Sadgurudev ji presence ,Without any hesitation simply put my question in his divine holy feet , and many times I received answer of mine queries even much before I put them. One such a occasion when I was sitting in his divine presence, very politely I asked him	सदगुरुदेव के सानिध्य में मैं निःसंकोच अपनी जिज्ञासाओं को उनके समक्ष रख देता था और बहुतेरे बार तो जिज्ञासाओं को रखने के पहले ही उनका समाधान उनके द्वारा मुझे दे दिया जाता था . ऐसे ही एक अवसर पर जब मैं उनके श्री चरणों में बैठा था तब मैंने उनके समक्ष अत्यंत ही विनीत भाव से अपने प्रश्न को रखा- की गुरुदेव शिष्यता का मापदंड क्या है ?
"Gurudev what is the bench mark of shishyta (being a true disciple). ?	कैसे सही अर्थों में शिष्य कालंजयी हो सकता है?
How a shishy can become kaljayi (one who control kaal i.e .samay)?	और कब उसकी शिष्यता सार्थक होती है ?
And when his shishyta (discipleship) became reaches its truthiness in real sense.?	काल का अर्थ क्या होता है?
What is the meaning of kaal?	क्या हम काल पर विजय पा सकते हैं?
Can we get victory /control over kaal?	ये कहकर मैं चुप चाप उनके अद्भुत तेजस्विता से भरे चेहरे की और देखने लगा.
After asking the questions I was just saliently watching his face full of divine	तब सदगुरुदेव ने मुझे प्यार से मेरी जिज्ञासा का

radiance .

Than Sadgurudev ji very lovingly and blissfully replied me that " to become a shishy or to absorbs the true shishyta's quality is very difficult ,that's the reason many of the sadhak due to emotion take Diksha but their chetna (mental quality) does not keep stand still on the bhav bhumi of shishyta . that's why lacking of such ability ,their life also not reach purntav (full and true meaning of life).

That we all know that human body is made of panch maha bhut (basic five great element) means that prathvi (earth) ,jal (water) , gagan(sky), vayu(air) ,agni(fire) . Butt his creation happened only on the physical level and till than these panch mahabhut associated with five element , spiritual or mental progress can not be possible .understand that way until that panchbhut get Sanskarised(a special way to purified) till than sadhak /person lives only on the general plain and his life is based on Annmaykosh (one of the special five body lies in human body).and his suppressed vasnaye (unfulfilled wishes)lies in base root of his Annmay kosh .if sadhak truly want to achieve highness and completeness in his life than he has to go for Annmaykosh to Pranmaykosh and from that to anomay kosh(another

समाधान करते हुए कहा की – वास्तव में शिष्य बनना या शिष्यत्व के गुणों को प्राप्त कर पाना अत्यधिक कठिन है , यही वजह है की बहुत से साधक आवेश में दीक्षा तो ले लेते हैं लेकिन शिष्यत्व की भावभूमि पर उनकी चेतना स्थिर ही नहीं होती है और इसी कमी के कारण उनका जीवन पूर्णत्व नहीं प्राप्त कर पाता.

ये तो हम सभी जानते हैं की मनुष्य शरीर का निर्माण पञ्च महाभूतों से होता है अर्थात पृथ्वी,तेज,गगन,वायु और जल से इस शरीर का निर्माण हुआ है . परन्तु ये निर्माण शारीरिक स्तर पर हुआ रहता है और जब तक इन महाभूतों को पञ्च तत्वों से योग नहीं कराया जाता , तब तक आत्मिक विकास या मानसिक विकास नहीं हो पाता . बल्कि ये समझ लो की यदि जीवन में पंचमहाभूतों का संस्कार नहीं हो पाता तो साधक या व्यक्ति सामान्य स्तर पर ही जीवन जीता रहता है और अन्न मय कोष पर ही उसका जीवन टिका रहता है , और अन्नमय कोष के मूल में होती है दमित वासनाएं . यदि साधक सच में जीवन में उच्चता प्राप्त करना चाहता है, पूर्णत्व प्राप्त करना चाहता है तो उसे अन्नमय कोष से प्राणमय कोष और वहाँ से भी मनोमय कोष में अपने आपको पंहुचा कर अवस्थित होना पड़ता है .

higher body). Veda Purana Upnishad Samiriti Shruti Theses are the five element by which the Sanskar of pannch mahabhut can be done . but here the true secretive aspect of theses five element is need to be understand instead of their material meaning . In reality what we understand the meaning of veda, veda's real meaning are very secretive, and veda that they are in existence today their kriyatmak paksha is being kept secretive. Their highly effective mantra mentioned in that very secretive way, only the reason that any misuse of that could not be possible. Like that way punished and purna should be practiced ,not only by the way of only reading. Veda are Apourushey meant that they are not made by any human nor devi , daivta .upnishad are the elaboration of veda through which general masses can associate themself with the highly effective ,secretive gyan of veda.. but in reality what we understand the meaning of vead and purna and upnishad is just a shadow .since to	वेद पुराण उपनिषद स्मृति श्रुति ये पञ्च तत्व हैं जिनके द्वारा शरीर के निर्माण मूल पंचमहाभूतों का संस्कार किया जाता है , यहाँ पर इन पञ्च तत्वों का लौकिक नहीं बल्कि गूढतम पक्ष समझना ज्यादा अनिवार्य है . वास्तव में वेद का जो अर्थ हम समझते हैं , वेद तो अत्यधिक गूढतम हैं और वर्तमान में जो वेद प्रचलित हैं इनका भी तो क्रियात्मक पक्ष गोपनीय ही रखा गया है. इनके उच्च मन्त्रों को गुह्यतम रूप से कूट भाषा में ही रखा गया है जिससे की अपात्र इसका दुरूपयोग न कर सके . ठीक इसी प्रकार पुराण और उपनिषदों के भी सार को समझ कर प्रयोग किया जाये न की पढकर . वेद अपौरुषेय हैं अर्थात इनका निर्माण किसी मनुष्य या देवी देवता ने नहीं किया है , उपनिषद उन वेदों की व्याख्या है जिससे की जन सामान्य उन वेदों में छुपे गुप्त और महाप्रभाव्कारी ज्ञान से अपने आपको जोड़ सके और उन्हें समझ सके . परन्तु वास्तव में हम जो अर्थ वेद, पुराण, उपनिषद का समझते हैं वो आभास मात्र हैं. क्यूंकि इन्हें समझने के लिए हमें श्रुत बनना पड़ेगा.

understand that we have to became shrut .

If I literally define what is shrut , that is .. to attentively listening the experience of any great person and absorbs that facts and experience in our life in full/true sense is shrut. And without applying the this gyan if we express others than that becomes smriti. What we have got directly and what other get from us there is much difference.

Your knowledge/talk till become smiriti until you experienced in the same way as you have been told , and after that real experiencing if we pass this gyan to other than that becomes converted to smiriti to shruti .

Any kriya (action) by which In true and in full sense absorbing any knowledge is possible is known as shrut.

That is misfortune of this country that we are living in memory ...smiriti instead of shruti .means we have not experienced any thing but what we listen from our forefather and still living and absorbing in base less ego .if our country was a golden bird then we first experience that and than we have to told /pass this too others. but we never tries to understand guru 's gyan and chintan (mental foresightedness) in practically. And that happens since

यदि मैं श्रुति को सामान्य शब्दों में परिभाषित करूँ तो वो ये है की- किसी महापुरुष से उने अनुभवों को सुनना और पूर्ण रूपें आत्मसात कर लेना श्रुति है और इस सुनी बात को बगैर क्रियान्वित करे आगे हम जो कहते हैं वो स्मृति होती है . हम जो ग्रहण करते हैं और फिर हमसे आगे जो ग्रहण करता है उसमे बहुत अंतर होता है .

आपकी बातें तभी तक स्मृति रहती है जब तक आप उसे ठीक उसी प्रकार से अनुभूत नहीं करते जैसे की वो आपको मिली थी थी और यदि हम उन्हें पूर्ण अनुभूत करके आगे पहुचाते हैं तो वे भी स्मृति न होकर श्रुति ही तो बन जाती है

सही अर्थों में ज्ञान को पूर्णता के साथ पी जाने की क्रिया ही श्रुति कहलाती है

हमारे देश का दुर्भाग्य ही ये रहा है की हम श्रुतियों के सहारे नहीं स्मृतियों के सहारे जी रहे हैं. मतलब हमारा कुछ भी अनुभूत किया हुआ नहीं है अपितु हमने जो अपने पूर्वजो से सुना है बस उसी मिथ्या अभिमान अहंकार में निरंतर डूबे हुए हैं. यदि हमारा देश सोने की चिड़िया था तो उस बात को पहले खुद परखते फिर बताते लेकिन हमने कभी गुरु के ज्ञान और चिंतन को प्रयोगात्मक रूप से आत्मसात करने की कोशिश ही नहीं की , और इसका मूल कारण था की हम स्मृतियों में जीते हैं श्रुतियों में नहीं . आज धर्म का जो विकृत स्वरुप है वो स्मृतियों

we live in smiriti not in shruti. Today's dharma also in misunderstood forms only because of smiriti. What the founder had said to us ,we had not taken the meaning what he wants to say we take that according to our limited way. through adding to our limited thought to shruti we converted that in smiriti.

The downfall of spirituality also happened because of that . what Bhagvaan Krishna told us in Gita if we truly understand that , what is the necessitates of so many teekas (books containing the meaning of that). That simply show that we have taken the meaning of his divine word through our understanding. if that happens than we is the meaning of that . than the said teeka becomes smiriti for us. Without understanding the true real managing chintan how we can understand what is the real meaning of gita.

We falsely behave that we are the shishya and without understanding/absorbing the real meaning of that if we spread that than its natural that kriyatmak dosha will come. basic root soul of that almost died.

Whenever in our life ours paanch bhut get sankarised than all our atoms energized and we through becoming one to gurus chetna achieve fullness and

की वजह से ही है. जैसा उस धर्म प्रवर्तक ने कहा हमने उसका वो अर्थ नहीं लगाया जो की उनका चिंतन था बल्कि उस श्रुति को अपने विचारों से जोड़ कर स्मृति में परिवर्तित कर दिया .

आध्यात्म का पतन भी तो इसी कारण से है, यदि भगवन कृष्ण ने गीता में जो कहा और हमने उसे पूर्ण रूपें श्रुति किया तो उसकी विभिन्न अर्थ लिए हुए हजारों टीकाओं का अर्थ क्या है , इसका तो एक ही अर्थ है की हमने उसका अपने अपने अनुसार अर्थ निकाला है और यदि ऐसा किया है तो जो अर्थ हमारे सामने है उसका हमारे लिए क्या महत्त्व? क्यूंकि तब वो टीका तो हमारे लिए स्मृति हो गयी है. और हम बगैर भगवान कृष्ण के मूल चिंतन को समझे कैसे उस गीता के भावार्थ को समझ पाएंगे. हम शिष्य बनने का ढोंग करते हैं पर जो गुरु का चिंतन होता है , उनकी मूल अवधारणा को बगैर पूर्ण आत्मसात करे , बगैर उस क्रिया को समझे आगे फैलाते हैं , जिससे क्रियात्मक दोष होना स्वाभाविक है और मूल धारण की आत्मा तो समाप्त प्रायः ही समझो.

जीवन में जब हमारे पंचमहाभूतों का संस्कार हो जाता है तभी हमारे अणु,परमाणु चैतन्य हो पाते हैं और हम गुरु की चेतना से एकाकार होते हुए , उनके समस्त ज्ञान को आत्मसात करते हुए पूर्णत्व प्राप्त कर पाते हैं , क्यूंकि तब हम ज्ञान को प्राप्त नहीं करते अपितु ज्ञान को

completeness in life than we not onl;y receive gyan but it has been absorbs in our pranschetna (soul's).

There are three main necessary things need to have ..be human ,be ready to learn , to have Sadgurudev.

We can only understand and absorbs in heart the true meaning of veda ,purna and upnishad only if we became truly shrut. Life get fortunate if we became shrut. and completeness can be only achieved. Through shriti , chaitnyata and jagrat (complete awakening and mental attentiveness) can be gained. When we be with this panchch mahabhut Sanskar ,than there is no difference between him and us. Through direct contact to him , we always get the authentic gyan kriya its not the matter where our guru is .than there is no isht, we became our self isht. we our self become the fountain , than there is no other meaning of guru vaky and veda opens us since we receive their true chintan (real meaning). And practically get successful.

But shishytav only can be achieved if we set aside completely our ego and fully became mumukshu , and offer ourselves to guru's lotus feet. and than all the holy teerth visible in his lotus feet and also through their divine hand we get sanskarised our panch bhuta. Than we became shriti and through that

समाहित करती है हमारी प्राणश्चेतना.

शिष्य बनने के लिए तीन आवश्यक तथ्य होते हैं. मनुष्य होना,मुमुक्ष होना और सद्गुरु की प्राप्ति होना.

वेदों, पुराणों,उपनिषदों,स्मृतियों को पूर्णरूपेण उनके सही चिंतन के साथ तभी आत्मसात किया जा सकता है जब हम सही श्रुति बने हो. जीवन का सौभाग्य होता है सही श्रुति बनना , पूर्णत्व तभी प्राप्त हो सकता है. श्रुति से ही चैतन्य और जाग्रत हुआ जा सकता है . हम जब इन पञ्च महाभूतों के संस्कार से युक्त हो जाते हैं तो गुरु और हम्मे कोई भेद नहीं रहता . सीधा संपर्क स्थापित होने से क्रियाओं का प्रामाणिक ज्ञान हमें ज्ञात होता है फिर गुरु चाहे कही भी हो . फिर कोई और इष्ट नहीं होता हम स्वयं ही इष्ट होते हैं स्वयं ही झरना होते हैं. फिर गुरु वाक्यों का, वेदों का, कोई और अर्थ नहीं निकलता, बल्कि हम उनके मूल चिंतन को ही आत्मसात करते हैं और प्रयोगात्मक रूप से उसमे सफलता भी प्राप्त करते ही हैं. परन्तु शिष्यत्व को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब अहंकार को पूर्णरूपेण त्याग कर गुरु चरणों में साधक जाये और पूर्ण मुमुक्ष बनकर अपने आपको गुरु चरणों में प्रस्तुत करे , जब गुरु के चरणों में सभी तीर्थ दृश्यमान हो.और हमारे पंचमहाभूतों का संस्कार हम उनके कर कमलों से करवा सके . तभी हम पूर्ण श्रुति बन पाते हैं और श्रुति बनकर सार को हृदयंगम करके उसी सार को आगे प्रवाहित कर पाते हैं,

we absorbs essence and flow onward that essence. this shruti kriya happened not only through ear but all our five karamendriya and gyannedriya work together than true shishytav achieved all the secretive doors of sadhana opens us, than completeness finally achieved us.

And the question of kaal or becoming kaaljayi , we need to understand tantra first.

Tantra is not based on dev vaad. But in the beginning this made a person to worshipper of shakti . that's the grass root fact that through either worshipping various different daivta and lastly worship param shakti whom tri dev also worship or directly taking help from gurus lotus feet reach to param shakti, understand this way, why we worship various different daivta just to gain shakti/power. And from where that daivta give you power? He also receive that from param shakti. So worshipping directly that pram shakti is not better.

Tantra believes in only two section man and woman. And all the power of man is also comes from the param shakti, brahma's creative power, Vishnu caring power and destruction power of shiv where it comes from ,

तब श्रीती की क्रिया सिर्फ कानो से नहीं होती बल्कि पंचो कर्मेन्द्रिय और पंचो ज्ञानेन्द्रियाँ उस ज्ञान को सुनकर आत्मसात कर क्रियान्वित कर लेती हैं.तभी सही शिष्यत्व प्राप्त होता है और साधना के सभी गुह्य पक्ष खुल जाते हैं जिससे पूर्णता प्राप्त होती ही है.

और रही बात काल की या कालंजयी बनने की तो इसके लिए सबसे पहले तंत्र को समझना होगा.

तंत्र देववाद पर नहीं चलता बल्कि वो मनुष्य को शुरू से ही शक्ति का उपासक बना देता है . क्यूंकि ये मूल तथ्य है की या तो आप विभिन्न देवों की पृथक उपासना करते हुए आखिर में उस परमशक्ति की उपासना करो जिनकी उपासना सम्पूर्ण देव शक्तियां या त्रिदेव भी करते है . या फिर सीधे ही गुरु चरणों का आश्रय लेकर उस परमशक्ति का सानिध्य प्राप्त कर लो . इसे ऐसे समझों की हम किसी भी देवता की साधना क्यूँ करते हैं. उससे शक्ति की प्राप्ति के लिए ही ना. और तुम्हे वो शक्ति कहाँ से देगा???? उसी परम शक्ति से प्राप्त करके. तो जब शक्ति प्राप्ति का मूल स्त्रोत वही परम शक्ति है तो फिर सीधे सीधे उसी परम शक्ति की साधना करना क्या उचित नहीं होगा.

तंत्र सिर्फ दो जाति को मानता है स्त्री और पुरुष. और पुरुष को भी समस्त क्षमताओं की प्राप्ति उसी परम शक्ति से ही होती है देखो विष्णु

from that param shakti . parammaba is the centre of all the shakti in universe. Rising from pashu bhav to reaching veer bhav is through a process known tantra. And that not stop here it raise sadhak upto daivtv bhav. Becoming/ reaching that is the real true meaning of being a taking birth as a human. this the fact when we raise our existence root to spread it that in whole universe. This experience can not be define ,this experience is beyond the limit of time and place.

This can only be understand when our mind reaches its completeness and this became possible only when we do kriya and mantra jap as directed by our guru, theses mantra awaken the dormant power inside us. And gives us a new direction to our mental attentiveness . this is well known fact that when we do jap of any mantra , energy gets generated in any amount .and also various geo metrical shape also created that we can not see through hour naked eyes, theses figure are not imaginary one.

In tantra kriya , it is not advocated to suppress our feeling sand wishes but to accept that since tantra knows that through suppression various mental

को पालन की , ब्रह्मा को सृजन की और महेश को संहार की शक्ति उसी पराम्बा से प्राप्त होती है अर्थात सभी की मूल प्रकृति के सभी क्षेत्रों में वही पराम्बा केंद्रस्थ हैं. तंत्र पशु भाव से ऊपर उठकर वीरभाव तक पहुचने की क्रिया है और ये यही नहीं रूकती बल्कि वीरभाव से भी ऊपर उठाकर साधक को देवत्व पद पर अवस्थित कर देता है. यही मानव जन्म की सार्थकता है . जब हम अपने अस्तित्व के मूल तक पहुचकर अपना विस्तार अखिल ब्रह्माण्ड में कर दे . परन्तु इस अनुभव को परिभाषित नहीं किया जा सकता , ये अनुभव काल अर्थात समय और स्थान की सीमा से परे है.

इसे तभी समझा जा सकता है जब हम अपने मन को पूर्ण विकसित कर ले , और ऐसा तभी संभव हो पाता है जब हम गुरु निर्दिष्ट प्रक्रियाओं को और मन्त्र को जप करे . ये मन्त्र अपने भीतर की सुषुप्त शक्तियों को जाग्रत कर देते हैं . तथा व्यक्तिगत चेतना को नयी दिशा देता है . ये एक महत्वपूर्ण तथ्य है जब भी हम किसी मन्त्र का उच्चारण करते हैं तो वो ध्वनि किसी न किसी मात्रा में उर्जा उत्पन्न करती है तथा निर्दिष्ट ज्यामितीय आकार भी निर्माण करती है जिसको की सामान्य नेत्रों से देख पाना संभव नहीं है . ये आकृतियाँ काल्पनिक नहीं होती है.

तांत्रिक प्रक्रियाओं में अपनी भावनाओं और संस्कारों को दबाया नहीं जाता है अपितु इन्हें

dieses can be possible, to break all the bounding string of the mind and move freely in his way is the basic aim of tantra. To free from all the bonding and pasha and become energized through self energy is the aim of tantra. The universe is created by that energy. The flow of energy is starts from that metal awaking point and theses all we know that the expansion of bindu is the universe. When we expanse bindu the circle is created, and in the circumference of that time , gap(space),aim, bhavatit chetna (transdentional meantal attentiveness lies. And the bindu at the centre represent that pram shakti through that atiindriyta can be achived.

Time and space both are in the mind .in reality they are both apart , if one lies in the end than others on the other end. One represent shiv other is shakti. When we contact our bindy lies in physical body to our trikut though our pranuschetana (menatal attentiveness) or say that raise bindu to upward motion than on trikut .shiv and shakti kaal and space meets . and through this meeting or adding ,a explosion occurs, by that energy ,mind /man is divided in uncountable parts. All theses single part can create a new universe. and this expansion can became a sadhak universal un limit. and that is the ultimate goal /aim of the tantra. and

स्वीकार कर लिया जाता है , क्यूंकि तंत्र जानता है की इन्हें दबाने से साधक विभिन्न मानसिक रोगों से ग्रस्त हो सकता है. मन के बंधनों को तोडकर उसे स्वछंद गति में विस्तृत करना ही तो तंत्र का मूल लक्ष्य है. सभी बंधनों, पाशों से मुक्त कर स्वयं की उर्जा से युक्त करना ही तंत्र का उद्देश्य है और इसी उर्जा से तो ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुयी है . उर्जा का प्रवाह उसी प्रनाश्चेतना के बिंदु से होता है और ये हम जानते हैं की बिंदु का विस्तार ही तो ब्रह्माण्ड है . बिंदु को जैसे जैसे बढ़ाते हैं तो जो वृत्त बनता है उसी वृत्त की परिधि में समय(काल), अंतराल,लक्ष्य और भावातीत चेतना होती है. और केंद्र का बिंदु उस परम शक्ति का प्रतिक है जिससे अतिन्द्रियता की प्राप्ति होती है .

मन के अंतर्गत ही ये काल और अंतराल आते हैं , वस्तुतः ये दोनों ही बहुत दूर दूर हैं एक इस छोर पर है तो दूसरा दुसरे छोर पर . एक शिव का प्रतिक है तो दूसरा शक्ति का . जब हम शरीरस्थ बिंदु का योग त्रिकुट से अप्नी प्राणश्चेतना के बल पर करते हैं या ये कहे की उस बिंदु को उर्ध्व गति देते हैं तो त्रिकूट पर काल और अंतराल अर्थात शिव और शक्ति दोनों का ही योग हो जाता है ,और जैसे ही योग होता है एक तीव्र विस्फोट होता है जिससे निसृत उर्जा से मन के असंख्य टुकड़े होते हैं और ये प्रत्येक कण एक नवीन ब्रह्माण्ड को जन्म दे सकते हैं. यही विस्तार तो साधक को ब्रह्माण्ड स्वरुप ही

this stage also called kaal jayi stage. Where the sadhak after attaining all the ultimate power still behave a fellow to nature and help her. Now this depend upon the sadhak that how far he can expand himself in this kaaljayi stage.

Is that any special kriya for achieving that .i again questioned.

Yes it is why not. If daily two hours reciting/chanting of a special mantra for continuous 21 days through full concentration if any sadhak does and also reach to Sadgurudev holy feet in person and ask to have this PANCHMAHABHUT SANSKAR DIKSHA , than very compassionate Sadgurudev through giving this great Diksha to him , clears a way to go for this great holy path to become purntav. Than no kriyas related to tantra is became secretive to him. success definitely achieved by that sadhak. In real sense he became shrut ,so time and distance dose not matters for that, he can ever get directly gyan from Sadgurudev any place and any time reaches the ultimate heights of shishyta.

Than he gave me the mantra and PANCH MAHABHUT SANSKAR DIKSHA on appropriate time, the mantra still with me and the foundation of what

कर देता है जो की तंत्र का परम लक्ष्य होता है . और यही काल पर विजय प्राप्त कर कालंजयी हो जाने की स्थिति होती है. जहा साधक सर्वसमर्थ होने के बाद भी प्रकृति का सहचर ही होता है और उसका सहयोग ही करता है , अब ये साधक के ऊपर होता है की वो इस कालंजयी अवस्था में अपने आपको कितना विस्तारित कर पाता है .

क्या इसके लिए कोई विशेष क्रिया है????? मैंने पुनः प्रश्न किया .

हाँ है क्यूँ नहीं , एक विशेष मंत्र को नित्य प्रति दो घंटे तक एकाग्र मन से जप किया जाये और ऐसा २१ दिन तक करके सद्गुरु के चरणों में उपस्थित होकर पंचमहाभूत संस्कार दीक्षा प्रदान करने की प्रार्थना की जाये तो करुणाशील सद्गुरु शिष्य को इस मंत्र से सम्बंधित पंचमहाभूत दीक्षा दे कर पूर्णत्व के पथ पर आगे बढ़ाते ही हैं, फिर कोई तंत्र कोई पद्धति गुप्त नहीं रह पाती उस साधक से . सफलता को वरन करना ही पड़ता है उस साधक का और वो सही मायने ने श्रुति बन पाता है , तब गुरु से दूरी और काल का कोई अर्थ नहीं रहता साधक के समक्ष , वो कभी भी कही भी सीधे उनसे ज्ञान को प्राप्त कर सकता है और सही मायने में शिष्यत्व की पराकाष्ठा को प्राप्त कर लेता है.

तब उन्होंने मुझे उस मंत्र को प्रदान किया और उचित समय पर उस अद्भुत पंचमहाभूत संस्कार दीक्षा को प्रदान कर कृतार्थ किया . आज

ever achieved by me till date. new page of secretive gyan opens that day to me. I am here mentioning you the same mantra after praying to Sadgurudev ji.

Mantra :

Aing hreeng kleeng praan utthay chaitanya kleeng hreeng aing phat.

When ever any curiosity comes, without any hesitation I put in front of Sadgurudev ji and get the solution of that why all of you do not do that way. Through that completeness in life and reaching to siddhshram is possible. Still are you thinking ?

जो भी मेरे पास है उसका आधार है ये दीक्षा और ये अद्भुत मंत्र. अज्ञात रहस्यों का एक नवीन पृष्ठ ही खुला था उस दिन मेरे सामने. मैं उस पूर्ण प्रामाणिक मंत्र को भी सदगुरुदेव से प्रार्थना करके आप लोगो के समक्ष बता रहा हूँ.

मंत्र- **ऐं ह्रीं क्लीं प्राण उत्थाय चैतन्य क्लीं ह्रीं ऐं फट .**

मुझमे जिज्ञासा आती है तो मैं बिना किसी झिझक के अपने सद्गुरु के समक्ष उसे रख कर उसका समाधान प्राप्त करता हूँ पर आप सभी ऐसा क्यूँ नहीं करते . आज हमारे समक्ष हमारे गुरु त्रिमूर्ति है , फिर हम ऐसी अद्भुत दीक्षा के लिए क्यूँ प्रार्थना नहीं करते जिससे की जीवन में पूर्णत्व एवं सिद्धाश्रम की प्राप्ति हो जाये. क्या अब भी आप विचार करते रहेंगे!!!

कठिनाई के समय में ही मित्रों की परीक्षा होती हैं,भाई से भी ज्यादा मूल्यवान ओर स्नेही , सच्चा मित्र होता हैं , मित्र के व्यवहार का प्रभाव तो पड़ता हैं ही इसमें दोनो पक्ष प्रभावित होते ही हैं , इसलिए मित्रों का चुनाब सोच कर ही करे..

आचार्य चाणक्य

friend ship can be tested on the time of need, true friends are more valuable and lovable than brother , friendship also affects you thats why choose friend very wisely.s ....

Aachary chanakya

Shree Singh Ganpati Sadhana

श्री सिंह गणपति साधना

तेजस्वी और निडरता युक्त व्यक्तित्व प्राप्त करने का अद्भुत विधान

In bhartiya sadhana kram i.e. way of life who is not knew about bhagvaan ganpati ,who is sarv vardyak (every boon giver), sarv mangal dayak (every blissful condition creator), 12 well known name are a essential part of starting any sadhana by every sadhak. This special form of almighty can be made/created every possible way a human mind can thinks and also Bhagvaan Ganpati form are available every where in different ,different forms and type. Bhagvaan Ganesh is present in every shakti peeth though forms may be different but he is there to fulfill every sadhak wish and clearing the way for his success. One of such a form of Bhagvaan ganesh is Shree SINGH GANPTI form, when like a loin's force power and fearlessness is added to this form of shree Ganesh than why not the sadhak

भारतीय साधना क्रम में ऐसा कौन होगा जो सर्व वरदायक ,सर्व मंगल कारक भगवान् गणपति के बारे में न जानता हो , द्वादश गणपति नाम तो हर साधक अपनी साधना के प्रारंभ में करता ही हैं , भगवान् के इस अद्भुत सरल रूप को तो जैसे चाहे वैसा बनाया जा सकता हैं ,

वैसे भी सबसे ज्यादा चित्रांत्मक कला युक्त श्री गणेश भगवान् की ही चित्र या मूर्ति हर जगह प्राप्य हैं . हर शक्ति पीठ में भगवान अलग अलग रूपों में विराजित ही हैं हर साधक की मनोकामना पूर्ण करने ओर उसके मार्ग में आने वाली विपत्तिय हरने के लिए पर एक ऐसा भी भगवान का अद्भुतरूप हैं जिसका पता बहुत ही कम लोगों को हैं और उस रूप में भगवान् श्री गणेश श्री सिंह गणपति के रूप में हैं ,

जब स्वयं भगवान् में सिंह के समान बल और निडरता कीकल्पना से युक्त से उनका स्वरुप सामने आया हैं तो उनके साधक में फिर क्यों नहीं बल ,तेजस्विता , साहस न रहेगा , जीवन के हर पथ पर सफलता वरमाला लिए हुए ही खड़ी मिलेगी क्योंकि जहाँ मगल दायक श्री भगवान् हैं वहीं उसके साथ सिंह के रूप की तेजस्विता भी.

of that be with same quality. Than fearlessness , forcefulness are the part of sadhak personality. Than success is a way of life for the sadhak since when every boon giver Bhagvaan is with him . this sadhana can be started from night of any Wednesday specially after 11 PM and is of 11 days only. This sadhana you need to place siddh Ganpati yantra in front of you and red colored aasan and red colored clothes is required for this sadhana .This dhyan(mental prayer) have to be done in the beginning.(offer sindur before and after the dhyan)

Veena kalap latamri ch dakshe vidhante karee vamo taam rasam ch ratn kalashm sanmanjari chaa bhayam|

Shundadandal sanmrgendra vadah shankhendu guar shubho divyadratna nibhanshulo ganpatih payat sanah||

Then do panchopchar poojan mentally And do mantra jap of 11 round of rosary with sphatik rosary for next 11 night continuously.

Mantra -om singh ganpatye namah .

You will also move forward to have same forcefull and effective personality

किसी भी बुध वार की रात्रि ११ बजे के बाद से से यह प्रयोग प्रारंभ किया जा सकता हैं , ११ दिवसीय इस साधना में सामने सिद्ध गणपति यन्त्र रख कर , लाल रंग के आसन और लाल रंग के ही वस्त्रों का साधक प्रयोग करे . ध्यान के पहले ओर ध्यान के बाद भी सिन्दूर अर्पित करे

निम्न ध्यान मंत्र करे ..

वींणा कल्प लता मरि च वरदं दक्षे विधन्ते करै वामी तामरसम च रत्न कलशं संमंजरी चा भयं|
शुंडा दंडल संम्रगेन्द्र वदनः शन्खेंदु गौर : शुभो दीव्यद्रत्न निभांशुलो गणपतिः पयात सन :||

फिर मानसिक पंचोपचार पूजन कर
निम्न मन्त्र का जप ११ माला ,स्फटिक माला से अगले १४ रात्रि तक प्रति दिन तक करे .

मंत्र

ॐ सिंह गणपतये नमः

आप भी इस मंगल दायक , बिपत्ति निवारक , सिंह समान व्यक्तिव्य प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होंगे ही ..

Dattatrey Sadhana

नाथ संप्रदाय के आदि गुरु भगवान दत्तात्रेय साधना

भूतकाल वर्तमान काल और भविष्य काल का ज्ञान करने की सरल अद्भुत दुर्लभ साधना

When I became completely hypnotized with attraction towards Tantra field, I went on. With a wish to run away from home, I started roaming here and there. At some point of time, I reached to Girnaar. Have heard that the Siddhas could be found in that region, but there was something else in my mind. After reaching at mountain range, took blessings of lord Bhavnath. The atmosphere of surroundings was strange. Some Naga sadhus were roaming here there. At many places the Stuti of Bholenath was going on. "Your strange surroundings have made a strange play, no body had understood you, a sage came to the town" A real fact. Who had been able to understand the world of siddha peoples...	तंत्र साधना का आकर्षण जब मुझे पूर्ण रूप से सम्मोहित कर चूका था, तो निकल पड़ा में. घर से भागने के ख्याल से और घूमने लगा इधर उधर. एक मर्तबा चल पड़ा गिरनार पर. सुना था बहुत ही सिद्ध जगह हैं यदा कदा सिद्ध मिलते रहते ही हैं , पर मेरे मानस में तो कुछ और ही विचार था. तलहटी पर पहुँच कर भगवान् भवनाथ के दर्शन किये. चारो तरफ अजीब सा वातावरण बना हुआ था. यहाँ वहां नागा साधू विचरण कर रहे थे. कई जगह भोलेनाथ की स्तुति हो रही थी... अजब हे तेरी माया अजब सा खेल रचाया तुझे कोई समझ न पाया नगर में जोगी आया सही ही तो हैं, कौन समझ पाया हैं जोगिओ/ योगियों के सिद्ध संसार को..

Girnar, the residence of siddh Dattatrey looks a like a face of some sage from distance. Climbing a strais, I was wondering about God dattatrey, the Maha siddha which was compound of shiva, Vishnu and bramha's power; the one who gave proper establishment of Aghor sadhanas.; The one who were ancient accomplished men. Pillar of Naga and nath sect. and at that same moment voice came from behind " Hari om tat-sat jai gurudatt", A group of sadhu were seated lost in their own joy. This had been heard many times but every time, don't know why I used to think that these are not just a word but something special in it, went ahead while wondering this. The secret of siddh people do not been revealed so simply, lost in this thought, I reached to a mountain peak.

Hardly of 10 feet, had that peak used to be residence of God Datt. It is said that he is still alive in his body and give Darshan at this place sometime, at that time only a voice came from behind " Hari om tat-sat jai gurudatt". I looked back; a naga sadhu was there with a peacock feather in his hand, scary look, long hairs and obis. Looking at me he smiled a bit and then went back into the forest. This time I became a bit nervous, but then too I removed this thought by taking it as co incidence. Took blessing of god Gurudatt's foot stamp, I started went back. But those words were running in my ears. In some hours when I reach down, I was tired

सिद्ध दत्तात्रेय का निवास स्थान वह गिरनार दुर से देखने पर एक साधू का चेहरा सा लगता हैं. सीढ़ीया चढ़ते हुए मैं सोच रहा था भगवान् दत्तात्रेय के बारे में, शिव, विष्णु और ब्रम्हा की शक्ति से सम्मिलित वह महान सिद्ध जिसने अघोर साधनाओ को स्थायित्व दिया था. वह जो आदि सिद्ध थे. नागा और नाथ संप्रदाय के स्तम्भ. और तभी पीछे से आवाज आई " हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त ", एक साधुओ का मंडल अपनी ही मस्ती में बैठा हुआ था . ये तो कई बार सुना था मैंने . पर पता नहीं क्यों हर बार लगता था की ये कोई शब्द मात्र नहीं हैं कुछ और विशेष ही हैं यही सोचते हुए आगे बढ़ गया. सिद्धो के रहस्य एसेही कहा सुलभ खुलते हैं यही ख्याल में खोया हुआ पहुँच गया मैं शिखर के ऊपर.

मुश्किल से १० फीट घेराव में वह चोटी, जो निवास स्थान हुआ करती थी दत्त भगवान् की. कहते हैं आज भी वे सशरीर मौजूद हैं और कभी कभी इसी जगह पे दर्शन देते हे, तभी पीछे से एक आवाज आई " हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त " . पीछे मुड़के देखा तो एक नागा साधू हाथ में मोरपंख लेके खड़ा था, देख के ही डर लगे, उलझी हुयी जटायें डील डोल. मुझे देख के वो किंचित मुस्कुराया और फिर वापस लोट गया जंगलो में. अबकी बार में कुछ विचलित हुआ, पर फिर भी इसे संयोग मानते हुए ख्याल दिमाग से निकल दिया. चोटी, पर बने दत्त भगवान् के पदचिन्ह को नमस्कार कर में लौट पड़ा उलटे पैर.

badly. The time went past evening and was about to dark. Went ahead with a though to go back in city, at both side of the road it was a dark forest. And at the same moment, cant say from where a Aghori came. From the road side, he turned and started towards forest. 5 feet far from me, do not know why but I too went beside him. In some steps only when I looked a while....it ca not happen...he was just here...in a second he was invisible in air...and a word were fold eco " Hari om tat-sat jai gurudatt". It was not far to understand that it was a message from nature to me. And I started researching on this Maha mantra, but the answer which can satisfactory trouble shoot my mind, couldn't be received anywhere.

लेकिन वो शब्द अभी भी कान में गूंज रहे थे, आखिर क्या राज़ हैं इसमे. कुछ घंटो में जब नीचे जब पहुंचा तब तक थक के चूर हो गया था. रात घिरने लगी थी. शहर की तरफ वापस लौटने का निश्चय करके आगे बढ़ा, रास्ते के दोनों और प्रगाढ़/ घनघोर जंगल था. तभी पता नहीं कहा से एक अघोरी प्रकट हुआ . रास्ते से मुड के वो एक तरफ जंगल में चल दिया. मुझसे ५ कदम दूर, न जाने क्यों मैं भी चल पड़ा उसीके पीछे , बस कुछ ही कदम और एक पलक झपकी मेरी. नहीं ये नहीं हो सकता. अभी तो वो यही था. एक ही क्षण में वो हवा में ही विलीन हो गया... ......और पीछे शब्द गुंजरित होने लगे..." हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त " समझते देर न लगी मुझे की कुछ सन्देश हैं ये प्रकृति का. खोज शुरू कर दी इस महा मंत्र के रहस्य की, पर मुझे सांत्वना मिले ऐसा जवाब कही न मिला...

Well, after some years when the topic went towards this in discussion with sadgurudev, I became very surprised. Sadgurudev said "this is the base mantra od Dattatreya. Yog mantra tantras are incorporated in this mantra. This alone single mantra can give basic siddhis to the very high level siddhis. And that some nath yogis do accomplished Jalgaman and vayugaman even through this mantra." After that he made me understood many process of this mantra which are to be kept secret. From which one used to be for kaal gyanm. Quickly I decided to do this sadhana...as was willing to know a secret which I was searching from

आखिर कुछ साल बाद जब सदगुरुदेव से इस बारे में बात हुयी तो मैं दंग रह गया . सदगुरुदेव् ने कहा " यह दत्तात्रेय का मूल मंत्र हैं, योग, मंत्र, तंत्र सब इसमे समाविष्ट हैं. यह अकेला मंत्र ही सामान्य सिद्धियों से ले के अत्यंत उच्चकोटि की सिद्धिया प्रदान कर देता हैं . यहाँ तक की कई नाथ योगी इस मंत्र मात्र से जल गमन और वायुगमन तक भी सिद्ध कर लेते हैं ." इसके बाद उन्होंने मुझे इस एक मंत्र मात्र की कई विधिया समझाई . जो की अत्यंत गोपनीय हैं . जिनमें से एक विधि काल ज्ञान सबंधित भी थी. तुरंत ही मैंने निश्चय कर

years.

And that last day of sadhana, was just slept after mantra chanting. Certainly a fragrance started floating in air, till the time I come out of this strange feeling, before that second fragrance, third...forth...that way nine different fragrances kept on floating. I was willing to see what is happening by coming out of bad but the body had become faint. Before I come to conciousness, 9 different shadows came to existence, in dark I wasn't able to see completely but they were in dress of sages. Certainly my memory made me remember a sentence of gurudev "in dattatrey sadhana sometimes 9 Nath even gives darshan in shukshma Swaroop". So, are they 9 Nath? At that time all 9 shadows became invisible and a ball of light existed in front. It was indescribable joy of light. In some time only, that light went inside me. And I felt a bit shock. For a while I remained unconsciousness. Woke up in a strange joy and went towards window. " alakh bum bum, khushi rahe hard um shivjoyi..." speaking this, I took a smoke. It was raining out side, the drops of the rain were looking like million stars are coming to earth from sky to be with me in this joy...with no reason a smile came on my lips...and why it do not come...years passed off, but the secret I wanted to know been knew now.

लिया इस साधना को करने के लिए..आखिर सालो पुराना राज़ जानना ही था.

और आज साधना का वह अंतिम दिन. मंत्र जाप करके मैं सोया ही था. अचानक एक सुगंध सी हवामे तैरने लगी, विस्मय से बाहर निकलू उससे पहले दूसरी सुगंध, फिर तीसरी, चौथी, इसी तरह नौ अलग अलग सुगंध प्रवाहित होती रही. उठके देखना चाहता था लेकिन मानो शरीर को तो जैसे लकवा मार गया. हिल डूल भी नहीं पाया. अभी इस आश्चर्य से बाहर निकलू उससे पहले ९ छाया मेरे आसपास प्रकट हो गयी, अँधेरे में कुछ ज्यादा तो नहीं दिखा मगर सभी साधूवेश में थे. अचानक कथन याद आ गया गुरुदेव का " दत्तात्रेय साधना में कभी कभी नौ नाथ भी सूक्ष्म रूप में दर्शन देते हे". तो क्या ये वही नौ नाथ हैं ? तभी अचानक सभी छाया अद्रश्य हो गयी और एक प्रकाश पुंज प्रकट हुआ . एक अवर्णनीय प्रकाश का आनंद. और देखते ही देखते वो पुंज मेरे अंदर समा गया. और एक गहरा झटका सा लगा मुझे. कुछ देर तो सुन्न सा पड़ा रहा. एक अजीब नशे था में, आनंद में उठा और खिडकी के पास गया. "अलख बमबम, खुशी रहे हरदम, शिवजोगी..." यही कहके दम लगाया एक...बाहर बारिश हो रही थी, बुँदे बनके जेसे लाखो सितारे व्योम मंडल से मेरी खुशी में शामिल होने के लिए जमीं पर उतर रहे थे ...अकारण ही मुस्कान तैर गयी अधरों पर...और क्यूँ न आए...सालो लग गए पर वो राज़ तो मेने

जान ही लिया था अब...

For kaal gyan maha mantra has a kind of this process. Prepare a lamp from a cow's clarified butter and make Soot. While preparing that soot keep on chanting " Hari om tat-sat jai gurudatt" .Then take a mirror and place it in front of your eyes. Make a dot of that Soot prepared, in the mirror. The distance between you and mirror should be one and half to two feet. Sit in padmasana with gyan mudra. First pray lord dattatrey for success in the sadhana and then looking at the dot chant " Hari om tat-sat jai gurudatt" mantra for 3 hours. Need not of any rosary. In whole room only light should be of a lamp. Mantra chanting should be done after 11 PM only. With all rules of sadhana, this should be continuing for 21 days. Slowly one will start looking various scenes and if sadhana is completed in proper way, sadhak gets capacity to see past present and future like a film.

काल ज्ञान के लिए इस महा मंत्र का प्रयोग कुछ इस प्रकार से करना हैं . गाय के घी से एक दीपक जलाए और उसका काजल इकठा करे. काजल का निर्माण करते वक़्त " हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त " का जाप करते रहे. फिर एक आइना लाए और ठीक अपने आँखों के ही उसे सामने स्थापित करे. उसमे काजल से एक बिंदी लगाये. आपसे आईने का अंतर(दूरी) डेढ़ से दो फीट रहे. फिर पद्मासन में बैठ जाए और ज्ञान मुद्रा बनाए. पहले भगवान दत्तात्रेय को साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करे, फिर बिंदी पर त्राटक करते हुए " हरिओम तत्सत जय गुरुदत्त " का ३ घंटे जाप करे. इसमे कोई माला की जरुरत नहीं हैं. पूरे कमरे में सिर्फ एक दीपक की रोशनी रहे. जप रात्रि में ११ बजे के बाद ही हो. यह क्रम साधना के सभी नियमों के साथ २१ दिन तक चलते रहना चाहिए. धीरे धीरे साधक को विभ्भिन द्रश्य दिखाई देना शुरू हो जाता हैं और साधना सही रूप से करने पर साधक में वह क्षमता आ जाती हैं की वह भूत भविष्य और वर्तमान को चलचित्र की तरह देख सकते हैं .

" Do not seek experience in the meditation The path to god is not a circus so that various vision will be shown for your entertainment "
... Parmahansa Yoganand

ध्यान में अनुभव मत खोजो, क्योंकि यह ईश्वरीर रास्ता कोई सरकस नहीं हैं, जो आपके मनोरंजन के लिए तरह तरह के द्रश्य दिखाए जाएँ. परमहंस योगानंद

kaal Gyan aur jyotish Sandarbh
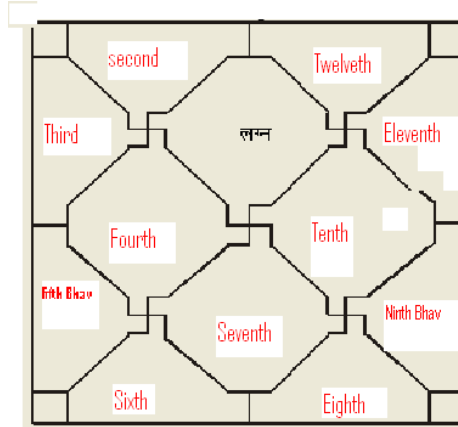
Kaal or time in rough sense is a unbreakable link which never break, it is us who, who divided it in three part ***present, past, future***, some says only present exists and past and future have no sense. Since there existence is nowhere. Some says only past and future exist , present is no where, since it is just a line where future become past, say 1, as you speak, till that, is part of past. present is just s transition. I remembered once some ones asked swami viveakanad ji, ***are you swamiji not getting late. he replied, my son you live in time, I***	साधरणतः काल या समय एक ऐसी धारा हैं जो अविभाजित हैं इसे हमने अपनी सुविधा के लिए तीन भागों में, उसे भूतकाल वर्तमान ओर भविष्य काल में बाट दिया हैं. |कुछ कहते हैं की केबल वर्तमान काल ही हैं क्योंकि भूतकाल (गया/समाप्त हैं) और भविष्य काल (आया ही नहीं हैं) उनका आस्तित्व ही नहीं हैं |कुछ कहते हैं की केबल भूतकाल ओर भविष्य काल ही हैं क्योंकि वर्तमान काल तो मात्र एक बिभाजन की रेखा हैं|मानलो आप १ कहते हैं जब तक कह पाए वह तो भूत काल का हिस्सा बन गया |वर्त्तमान केबल एक बिभाजन की रेखा हैं एक काल से दूसरे काल में जाने के लिए | मुझे याद आता हैं की कभी किसी ने स्वामी विवेकानंद जी से कहा की "स्वामीजी आप लेट हो रहे हैं " उन्होंने कहा की " मेरे बेटे तुम समय के अन्दर जीते हो मैं

live in timeless time.

So kaal gyan should not be consider only reading knowing the future date of any event going to happen. But its a science by which you can learn about yourself that what are the tendency hidden in you and what will be the out come, so through various means you can reduce or accelerate it, as par the case.

Destiny/Fate is already fixed :

If everything is fixed than what is the need of guru , sadhana, mantra, etc. just leave on almighty and wait, since all these serve no purpose. Someone asked to his master. His master asked him, just lift one leg, his disciples did as he ordered. His master replied, when I asked you to lift one leg, it depend upon you totally whether you could lift, left or right leg, this is the matter of your choice and when you lift left legs, now you cannot lift at the same time right leg, since it is fixed, so is the case of karma(you have a choice., once you do that, its result bound to happen, so it is the case with the karam result, say either fate, destiny , whatever you can say.

Simple Astrological points:

Here n this article mentioning some

समयातीत काल में हूँ "|

इसलिए काल ज्ञान का तात्पर्य मात्र किसी भी भविष्य की घटनाकर्म जो की होने वाली हो , की तारीख जानने मात्र को नहीं कहते बरन इस विज्ञानं के माध्यमसे आप अपने आप को ,तथा आपके अन्दर की संभावनाओ ,व उनके क्या परिणाम होंगे ,जिसके माध्यम से उनके परिणामानुसार आप उनको घटा या बढा सकते हैं |

भाग्य क्या पहले से ही निश्चित हैं :

यदि हर बात पहले सही निश्चित हैं तब गुरु,साधना , मंत्र ,तंत्र ,की क्या जरुरत हैं, सब कुछ उसपर छोड़ दें.क्योंकि इन सबसे /सबको करने पर कोई फरक नहीं पड़ता , किसी ने यह प्रश्न अपने गुरुदेव से पूछा, ,उसके गुरु जी ने उससे कहा की कोई एक पैर ऊपर उठाओ ,जैसा कहा गया शिष्य ने वैसे ही किया ,उनके गुरु के उत्तर दिया की जब मैंने पैर उठाने को कहा तब ये पूरा तुम पर निर्भर करता था कि दाहिना या बायां कोई एक पैर उठाओ , ये तुम पर निर्भर हैं ,पर जैसे ही एक पैर उठाया ,दूसरा पर स्थिर हो गया, उसे अब नहीं हटा सकते, ठीक इसीतरह कर्म करने के पहले चुनाव की सुविधा हैं पर कर्म करते साथ ही उसका परिणाम तो सहन कारण पड़ेगा ही .|

इसी कर्म फल को चाहे तुम इसे भाग्य कहो या कुछ भी ,निश्चितता परिणाम को सहन करना ही पड़ेगा |

सामान्य ज्योतिषीय बिंदु :

यहाँ पर कुछ सामान्य ज्योतिषीय बिंदु रखे जा रहे हैं,

very simple astrological point (not carrying any difficult combination or description)you can check with your horoscope and find it will help you to understand yourself.	जो की बेहद सरल हैं ओर कोई भी कठिन योग पर आधारित नहीं हैं आप अपनी कुंडली में इन्हें देख कर परिणाम समझ सकते हैं ,और अपने बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं
1. If Saturn planet is in 3 rd house , means you are the younger among your brothers, and you can have younger sister. And you will face a lot of trouble from your elder brothers, or not much support from the.	1. यदि शनि ३ रे भाव में हैं तो आप अपने भाइयों में सबसे छोटे होंगे ,हाँ आपसे छोटी आपकी बहिन हो सकती हैं , और यदि आपके बड़े भाई हैं आपके तो उनसे समस्या ही ज्यादा रहेगी सहयोग प्राप्त न होगा |
2. If moon is in fourth house ,surely in your work field related to general masses, means a lot of people come into contact, you cannot be isolated.	2. यदि चन्द्रमा आपके ४ थे भाव में हैं तो आप का कार्यक्षेत्र लोगों से मिलने वाला/ जन सामान्य से संपर्क वाला होगा अर्थात आप अकेले काम नहीं कर रहे होंगे .|
3. If Jupiter in eight house ,later or sooner you will be interested to occult sciences, interested in yoga etc.	3. यदि गुरु आपके ८ वे भाव में हैं तो अभी या कुछ दिन बाद आप रहस्य मय विद्याओं में और योग में रूचि रखेंगे |
4. If mercury planet is in fifth house, than you will be much interested in business.	4. यदि बुध पंचम में हैं तो आप व्यापार में रूचि रखेंगे ही |
5. If Venus is very far away in horoscope from mars and very close to Jupiter than you will not much interest in worldly sukh.	5. यदि शुक्र ,मंगल से दूर ओर गुरु के पास में हैं तो आप सांसारिक सुखों में ज्यादा रूचि नहीं लेंगे |
6. If Jupiter is with Venus or its	6. यदि गुरु शुक्र के साथ में हैं या शुक्र पर दृष्टी रख

aspect on Venus than he will have no interest in sense pleasure.	रहे हैं तो आप इन्द्रिय सुखो में रूचि नहीं लेंगे।
7. If fourth house have a aspect of exalted Jupiter ,than person will be very wise.	7. यदि ४ थे भाव में उच्च गुरु हो तो व्यक्ति अत्याधिक बुद्धिमान होगा.।
8. If Jupiter is in 5 t bhav or in 7 th bhav or in 9 th bhav , any wrong doing is done by the person, he will have much pain in his soul.	8. यदि गुरु ५ या ७ या ९ वे भाव में हो तो इस व्यक्ति के द्वारा गलत काम करने पर उसे आत्मा /ह्रदय में बेहद कष्ट होगा।
9. If Saturn is in 1st bhav, ot in 4 th bhav or in 8 th bhav, he has to work very hard.	9. यदि शनि १ भाव ,या ४ थे या ८ वे भाव मैं हो तो उस व्यक्ति को आजीविका काफी परिश्रम वाली होगी हैं।
10. If Saturn is in 4th or in 7 th or in 11 th person will be very introvert.	10. यदि शनि ४ थे, या ७ वे या ११ वे भाव में हो तो व्यक्ति बेहद अंतर्मुखी होगा।
11. If Jupiter is strong than person will have faith in god, religious activity.	11. यदि गुरु बेहद शक्तिशाली हो तो व्यक्ति इश्वर में बिश्वास रखने वाला ओंर धार्मिक कार्य करने वाला होगा।
12. Person born in Aquarius lagan will like to live very simply.	12. कुम्भ लग्न के व्यक्ति अंत्यत सादगी से रहते हैं
13. If Venus is with moon then person will have very energies mental capacity.	13. यदि शुक्र ,चन्द्र के साथ हो तो व्यक्ति की मानसिक क्षमता बेहद उर्जा युक्त होगी।
14. If moon is with ketu is not consider good for metal health.	14. यदि चन्द्र ,केतु के साथ हो तो व्यक्ति की मानसिक क्षमता के लिए यह अच्छा नहीं हैं।
15. If mercury in in sixth than he	

will win his enemy with his love.	15. यदि बुध ,६वे भाव में हो तो व्यक्ति अपने शत्रुओं को भी स्नेह से जीतेगा |
16. If moon ,Jupiter, and mercury is in one bhav the person will have excellent memory.	16. यदि ,गुरु बुध और चन्द्र एक साथ हो तो याददास्त बेहद तेज होगी |
17. If is in Aquarius lagan and rahu is there , person will be having philosophical nature. and will be having very shy nature.	17. यदि कुम्भ लग्न में राहू लग्न में हो तो व्यक्ति दार्शनिक और शर्मीले प्रकृति का होगा |
18. If mars is in 6th or 7th or on 10 th bhav , person will be having short temper.and lots of hair on his body.and strong body.	18. यदि मंगल ६ वे या ७ वे या १० वे भाव में हो तो व्यक्ति गुस्सेल स्वभाव का ,मजबूत शरीर के साथ ही शरीर पर बड़े रोम युक्त होता हैं |
19. If lagnesh (lord of lagna) is in 2,5,8,11, sign than he will undertake no / less travel.	19. यदि लग्नेश २ रे,५ वे ,८ वे या ११ वे राशी में हो तो व्यक्ति यात्राये बहुत ही कम करेगा |
20. If venus is in 12 th bhav person will attain very richness, and if in 6 th than also have sufficient money for his living .	20. यदि शुक्र १२ वे भाव मैं हो तो व्यक्ति अत्याधिक धनी ,तथा ६ वे भाव में हो तो संतोष जनक धन युक्त होगा जो उसके जीवन के लिए उपयुक्त होगी |
21. Jupiter is in 9 th or 10 th bhav ,person will have philosophical nature.	21. यदि गुरु ९ वे या १० बे भाव में हो तो व्यक्ति दार्शनिक स्वभाव का होगा |
22. Moon is in Taurus sign, the person will not change his mind very easily.	22. वृषभ राशी स्थित चन्द्र वाले व्यक्ति अपना मन आसानी से नहीं बदल पाते |
23. If ketu is in lagna, person will	23. यदि केतु लग्न में हो तो व्यक्ति

have some amazing exp.	को कई अलौकिक अनुभव होते हैं |
24. Mercury or in Jupiter is in 4 th bhav shows very good education career.	24. चन्द्र और शनि साथ में हो तो करुणा युक्त प्रकृति का व्यक्ति होगा |
25. If Saturn is with moon person will have a lot of compassionate character.	25. बुद्ध या गुरु ४ थे भाव में हो तो अच्छा शैक्षिक लाभ (पढाई) को बताते हैं |
26. If , Saturn ,mars. rahu, sun like planet is in 3rd bhav or in 9 th bhav , than person will take bold decision.	26. यदि शनि, या मंगल राहू या सूर्य यदि ३रे भाव में हो तो व्यक्ति साहसिक निर्णय ले सकता हैं |
27. If Saturn is in 3rd bhav than person will face all type of struggle, only than get success. and also that he usually lives in ancestral house.	27. यदि ३रे भाव में शनि हो तो व्यक्ति को सफलता अत्याधिक कठि नाइयों बाद ही मिल पाती हैं और वह अधिकतर पूर्वजों के मकान में ही रहता हैं |
28. If rahu is in lagna, than person thinking will not be easily understand by his near and dear one.	28. यदि लग्न में राहू हो तो उसकी विचार धारा उसके निकट के लोगों द्वारा नहीं समझी जाती हैं |
29. If Very strong malefic planet in 12 th bhav, person nature be very kind hearted.	29. यदि १२ वे भाव में शक्तिशाली पाप गृह हो तो व्यक्ति दयालु स्वाभाव का होगा |
30. If Venus is in 2ndbhav than the person will strongly attached to opposite sex.	30. यदि शुक्र २रे भाव में हो तो व्यक्ति बिपरीत सेक्स के व्यक्ति से अत्यधिक सम्पर्कित होगा |
31. Mars and Venus if found in any bhav ,the person/child must be brought up in religious environment.	31. यदि शुक्र और मगल कहीं भी साथ में हो तो उस बालक/बालिका की परवरिश धार्मिक वातावरण में करें|

32. If week moon is in horoscope than eye and stomach problem will be there.	32. कमजोर चन्द्र ,कुंडली में कहीं भी हो तो ये पेट सम्बंधित व आँखों से संबंधित समस्या को बताता हैं |
33. If some planets is in fixed sign ,an some in movable then person will be having many qualities.	33. यदि कुछ ग्रह स्थिर राशी में कुछ चार राशी में हो तो व्यक्ति में कई प्रतिभाये होंगी |
34. Saturn and sun is in one bhav or Saturn and sun is in 7th to each other, person has to face many difficulty from father side, means pitra sukh will be very less.	34. सूर्य और शनि एक साथ हो या आमने सामने हो तो उस व्यक्ति को पितृ सुख बहुत ही कम या पिता से सम्बंधित समस्या होगी |
35. Person born in April may have strong aatam power since sun is strong so person born in oct and nov will face little more hard ship since sun is very weak in that month.	35. अप्रैल मई में जन्मे व्यक्ति की शक्तिशाली आत्म शक्ति संपन होगे और सफल भी, वहीं नवम्बर ,अक्टूबर में जन्मे व्यक्ति को शंघर्ष अधिक करना पड़ता हैं क्योंकि इस समय सूर्य कमजोर रहता हैं |
36. Strong mars gives you courage and patience and very ,very strong mars turn you too religious nature. weak marsgives very shorttemper and tendency to suicide .	36. शक्तिशाली मगल साहस धैर्य देता हैं, पर अत्याधिक शक्तिशाली होने पर आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्मुख कर देता हैं |वहीँ कमजोर मंगल ,गुस्सेल स्वभावके साथ ,आत्महत्या की प्रकृति को भी दर्शाता हैं |
37. If Jupiter is anyway related to 10 th bhav, any of teaching will be apart of his work.	37. यदि गुरु किसी भी तरह से १० वे भाव से जुड़े हो तो ,किसी न किसी प्रकार से व्यक्ति दूसरों को शिक्षित करेगा ही|
38. If any bhav and more than one bhav is totally vacant between all the all the planet	38. यदि कुंडली में ग्रहों के मध्य भाव यदि कुछ खाली हैं तो सफलता रुक रुक के ही प्राप्त होती

(in between continuous)than success will be attain part by part.	हैं।
39. If rahu is in 2 nd bhav, person some times will use very hard word on his respected one or religious person/things.	39. यदि राहू २वे भाव में हो तो व्यक्ति कभी कभी सम्मानित और धार्मिक व्यक्तियों के प्रति बेहद कठोर शब्दों का इस्तेमाल करता हैं।
40. If second bhav is having Jupiter, mercury , venus , or having aspect on that ,person voice will be soft and embedded with meaning and wisdom.	40. यदि २रे भाव में गुरु शुक्र और बुद्ध हो या उनकी दृष्टी हो तो व्यक्ति की आवाज नम्र और ज्ञान ओर गहरे अर्थ लिए होगी।
41. If mars is in 7 th,or in8th or11 th bhav person will be good in logical talk.	41. यदि मंगल ६वे या ७ वे या ११ बे भाव में हो तो उसमे तार्किक क्षमता अधिक होगी।
So some simple astrological point , those I found while studying in this subject ,not metioninghere for starting any debat purpose but just for help and still you want to know more ,try to consult with any expert in this science.but a word of caution, pleases do not take it as it is, and nothing change cannot be happened, we have given one surya sadhana related to aakarshan to not only planet sun but other the remaining planet too, also have afaith that god has given you mental power and divine sadhana too so why not use	ये कुछ सामान्य ज्योतिषीय बिंदु हैं। इन्हें मैंने अपने ज्योतिष अध्ययन में पाया था इन्हें मैं कोई बहस का विषय के लिए नहीं लिख रहा हूँ, आप इनका उपयोग करे और यदि ज्यादा जानने की इच्छा रखते हो तो किसी भी योग्य ज्योतिषी से संपर्क करे , हाँ एक सावधानी जरुर रखे इन्हें जैसा लिखा हैं केवल वैसा ही नहीं माने ,ओर कोई परिवर्तन नहीं हो सकता हैं न ही ऐसा माने।हमने पिछेले अंक में नव ग्रहों के वशीकरण से सम्बंधित सूर्य साधना दी हैं उसे आप करे , साथ ही साथ आप ये बिस्वास रखे की ईश्वर ने आपको ये मानसिक क्षमता और दिव्य साधनाए दी हैं उसे

that and remove many misery of life.	इस्तेमाल करके आप इन्हें निश्चय ही बदल या कम ज्यादा उनके प्रभाव को कर सकते हैं ,इसलिए इनका प्रयोग कर अपने जीवन की कमिया क्यों नहीं दूर करे	

"work unto death- I am with you, and when I am gone ,my spirit will work with you, this life comes and goes, wealth fame enjoyment are of a few days, it is better , far better to die on the field of duty , preaching the truth ,than to die like a wordly worm .advance."   swami Vivekananda

अतिम समय तक कार्य रत रहो , मैं तुम्हारे साथ हूँ,और जब मैं चला जाऊंगा , तब मेरी आत्मा तुम्हारेसाथ होगी ,ये जीवन आता और जाता हैं ,धन यश कीर्ति खुशियाँ केबल कुछ दिन के लिए ही हैं . इससे ज्यादा बेहतर तो ये हैं कि सत्य के मार्ग पर ,हम कर्मक्षेत्र में जीवन दे दे , बनिस्पत कि हम सांसारिक कीड़े बन कर म्रत्यु प्राप्त करे. .   स्वामी विवेकानंद

.

"every duty is holy, and devotion to duty is the highest form of the worship of god"   swami Vivekananda

हर कार्य पवित्र हैं , अपने कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा , ईश्वर के प्रति उच्चतम पूजा हैं.   स्वामी विवेकानंद

Muslim Tantra Sadhana

काल तंत्र की अद्भुत साधना – हमजाद सिद्धि

अपनी छाया को सिद्ध करने का दुर्लभ विधान

On reaching that ruins of the house evening started .here I came to meet Hasad Baqs. when Sadgurudev was in sanyasi life Hasad Baqsnot only understood very rare miraculous prayogs of muslim tantra sadhana but also get fully successfully complete that. He has various unmatched gems of muslim tantra what he got from Sadgurudev ji. mine aim towards learning and understanding the mystry and process was, so since that were the times tasted ,self realized, fully effective gyan of Sadgurudev ji,,I already have hundreds of hazraats and other prayog received directly from Sadgurudev ji. sadgurudev ji told that any sadhana or tantra from any religion/dharma if help you to progressed on the path of completeness than learning that

उस खँडहर तक पँहुचते पँहुचते शाम ही हो गयी थी . यहाँ मैं हसद बक्स से मिलने आया था. सदगुरुदेव जब सन्यस्त जीवन में थे तो ***हसद बक्स*** ने उनसे मुस्लिम तंत्र के अद्भुत प्रयोगों को ना सिर्फ समझा था बल्कि पूरी सफलता के साथ क्रियान्वित भी किया था .

मुस्लिम तंत्र के एक से एक नगीने थे उनके पास जो की उन्हें सदगुरुदेव से प्राप्त थे ...... और मेरा रुझान उन विधियों और रहस्यों को समझने में इसलिए था क्यूंकि वो सदगुरुदेव प्रदत्त ज्ञान था जो उनके अनुभूत और पूर्ण प्रायोगिक सिद्धि प्रदायक अनुभव सूत्रों से युक्त रहे हैं. वैसे सदगुरुदेव से मुझे व्यक्तिगत तौर पर सैकडो हाजरात और अचूक प्रयोग प्राप्त हुए थे और सदगुरुदेव ने बताया था की किसी भी धर्म का कैसा भी तंत्र प्रयोग या साधना हो यदि पूर्णता की और अग्रसर करता हो तो वो कदापि अनुचित नहीं है. उसी दौरान उन्होंने मुझे कहा था की यदि कभी तुम्हे अवसर मिले तो जबलपुर जाकर हसद बक्स से जरुर मिलना.

could not be wrong or mistaken .in that duration he told me if you have time than go to Jabalpur and definitely meet hsad baqs there. When you already solve and provide solution of mine queries than why should I go to meet others in this respect, I told him.	परन्तु जब मेरी जिज्ञासाओं का शमन कर देते हैं तो भला मैं अन्यत्र क्यूँ जाऊँ ? मैंने कहा. बेटे इन प्रयोगों को प्रायोगिक रूप से समझने के लिए वो स्थान उपयुक्त भी है और उसका निवास स्थान चौसठ योगिनी के पास ही है , जहा वो काम चांडाली की साधना को कर रहा है. उसे भी विभिन्न मतों से साधनाओं को सिद्ध करने और उन अनुभूतियों से दो-चार होने में आनंद आता है . सदगुरुदेव ने कहा और उसका पूरा पता मुझे समझा दिया.
My son that place is very suitable for practically learning these prayog and he lives very near to choushat yogini where he is doing kaam chandali sadhana. He also enjoy the sadhana of various sects and mat and enjoy the experiences on that Sadgurudev ji replied and gave me full details of his residence. On reaching home what I learnt from him ,try to understand/do practically all the aspect of that like that 3 years had been passed, my progress on the muslim tantra was satisfactory, truly my inclination towards doing that sadhana was on difficult and rare sadhana, off course I thoroughly understand and practiced shamshan sadhana very efficiently but most effective and powerful sadhana	घर आकार मैंने जिन क्रियाओं और प्रयोगों को समझा था उनके व्यावहारिक पक्षों को आत्मसात करने का प्रयास करने में जुट गया , इसी उहा-पोह में ३ साल बीत गए और मेरी गति भी कुछ ठीक ही हो गयी थी मुस्लिम साधनाओं में...... इन्ही साधनाओं को करते समय मेरा रुझान कुछ कठिन और दुसाध्य साधनाओं की तरफ हुआ . हलाकि श्मशान साधनाओं को मैं भली भांति समझ कर संपन्न भी कर चूका था,परन्तु मुस्लिम पद्धति की तीव्रतम साधनाओं को करने का भी बहुत मन था. तभी मुझे हसद भाई की याद आई और एक दिन मैं वहाँ के लिए निकल पड़ा. श्रीधाम से पैदल चलते चलते शाम हो गयी तब जाकर मैं उस जगह पर पंहुचा जहा हसद भाई का रहवास था, मैंने उन्हें आवाज़ दी तो थोड़े ही देर में चरररररर की आवाज़ से उस खँडहर का पुराना दरवाजा खुला और, एक ५५-६० साल के दाढ़ी से भरे हुए चेहरे वाले व्यक्ति ने दरवाजा खोला था. नूर (आभा) से भरा हुआ चेहरा , कसरती शरीर और

of muslin tantra also attaracts me.

Then thought of meetting hasad bhai come to mine mind and one day I went to meet him, from shree dham to reaching his house through walking alone , evening started. I called him, than with sound the doors of that old ruins of the house opend and 55-60 years old person with fully grown beard on his face in front of me .radiance on his face, well built body and effective voice were his first introduction. On seeing me he told come inside come inside I was waiting for you , had not face any difficulty on reaching here.

No not at all, I safely reach here, now what more trouble left for me. Yes too much hungry and trusty I am ,but can you tell me why such a distance from town you live here, do you not face any difficulty to get general house hold things.

Ha ha ha ,oh no not at all ,my master gave me such an vidya through that all the needed things here itself arranged, I devote my time to learn new,

रुआबदार आवाज के मालिक ही थे वो. मुझे देखते ही बोले आजाओ आ जाओ तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था , कोई तकलीफ तो नहीं हुयी यहाँ तक पहुचने में????

जी नहीं , सही सलामत तो पहुच गया , फिर अब क्या तकलीफ. हाँ भूख बहुत जोरो से लगी है. प्यास से गला भी सूख रहा है, पर क्या आप बताएँगे की आप शहर से दूर इतने दूर इस उजाड में क्यूँ रहते हैं . क्या आपको दीगर जरुरी सामान को इतनी दूर से लेन के लिए जाने में परेशानी नहीं होती.

हाहाहाहाहा ..... अरे नहीं मेरे बच्चे मुझे बिलकुल भी तकलीफ नहीं होती .... मेरे उस्ताद ने मुझे ऐसी तौफीक अता की है की मुझे सभी जरुरत का सामान यही मुहैया हो जाता है. मैं तो अपना सारा समय नए नए तजुर्बों के लिए लगाता हूँ. इसके अलावा इनसे जुड़ी सारी चीजे मुझे मेरी रूहानी ताकते ही जुटा देती हैं.

हैं.......... भला वो कैसे ...... और कौन सी ताक़ते आपको ये सहुलियते देती हैं????

बहुत सी हैं मेरे बच्चे ...पर... मुझे किसी बाहरी ताकत की जरुरत ही नहीं होती. मेरा अपना वजूद मेरी जरुरत पूरा कर देती है .

आपका अपना वजूद मैं समझा नहीं ????

new prayog and all the necessity things realted to that already made available to me through ruhani forces.(astral forces).	समझाता हूँ...समझाता हूँ ....पर... पहले कुछ खा पी तो लो. जाओ पहले हाथ –मुह धो लो. वहाँ उस सपन्ने (स्नानागार) में गरम पानी रखा हुआ है.
What .. how is that possible what are the forces help you in this context???	पर वो आपने कब किया !!!! आप तो यही बैठे हुए हैं. क्या कोई और भी है यहाँ पर???
There are many , my child but I do not need help from any outer forces mine own existence fulfils mine needs.	अरे नहीं नहीं मेरे अलावा कोई और नहीं है यहाँ पर .... मैंने कहा ना की मेरा अपना वजूद ही ये सब काम करने के लिए पर्याप्त है.
Your own existence I could not understand????	अरे वो तो मैं समझ रहा हूँ पर भला ये कैसे संभव है की आप यही हो और आपके काम भी आप ही कर रहे हो!!!!!!!!!!
I will clear the situation but before that have some food , go and first wash you hand and face ,there are hot water available in sampanne (bathroom).	बेटा ऐसा ही है.... पर मैंने कहा न की जाओ पहले मुँह हाथ धोकर कुछ खा लो.
When did you do that !!!! you are sitting here with me , is here any body else ????	
Oh no no one except me live s here, I told you mine existence is capable enough to do that .	जी , जैसा आप कहे. ये कहकर मैं उठा और हाथ मुँह धोकर दस्तर खान(चटाई) पर बैठ गया. सामने ही थाली ढंकी हुयी थी ,जिसे मैंने खोला तो........... दांतों तले अंगुली दबाने को ही विवश हो गया ... क्यूंकि, उस थाली में गर्मागर्म चावल, दाल,रसेदार आलू गोभी की सब्जी और पापड़ रखा हुआ था(ये सब मेरा पसंदीदा खाना ही था). खैर भोजन करने के बाद मैं जब उनके पास बैठा तो उन्होंने कहा की चलो साधना कक्ष की और चलते हैं.
I am understanding that but how is that possible that you sitting here with me and all the house hold work you are doing same time.	
Thais as it is my son.... But i told you to go and wash you face and	

hand and have some food.

Yes as you like , I stand up and after washing mine face and hand sit on the dastarkhan (matt) for taking food. When I opened the thali (set aside its covering plate).i was about to chewue my own finger that mine all favorite dish like hot rice ,daal, sabji of alu and ghobhi and papad was there. After finishing mine food when I sit next to him , he told me let's move to the sadhana room. One room than other room like that after crossing the five room we finally reached the room filled with books and essential sadhana materials and very attractive, soothing fragrance was in that room. One important thing I would like to share that that house was not even a little dust .every room was very clean and in good shape, there was two kambal on the floor on that we sit .

Yes, now tell me what you are saying to me.

My child, when I talk about existence that has very deep meaning each person has two existence one that we feel every moment ,walk all the time with

एक कमरा, दूसरा कमरा ऐसे पांच कमरों को पार करने के बाद हम उस कमरे में पहुंचे जहा पर ढेर सारी किताबे और साधना की जरूरात के सभी सामान मौजूद थे. एक मनमोहक खुशबु वहाँ फैली हुयी थी. एक बात बताना मैं जरुरी समझता हूँ की उस पूरे घर में जरा सा भी कचरा नहीं था बल्कि सभी कमरे अंदर से दुरुस्त और साफ़ हालत में थे. वह पर दो कम्बल बिछे हुए थे जिन पर हम बैठ गए.

जी अब बताइए आप क्या बता रहे थे??

मेरे बच्चे मैं जब वजूद की बात करता हूँ तो उसका एक बहुत ही गहरा मतलब है. हर इंसान के दो वजूद होते हैं.एक जिसे हम हर पल महसूस करते है जो हमारे साथ ही चलता फिरता है , हमारे साथ हमारे समान ही जीवन की सुख सुविधाओं का उपभोग करता है, लेकिन दूसरा वो जो हमारे साथ जन्म लेता है रहता है पर हमारे मरने पर भी उसका अंत नहीं होता है .पर शक्ति सामर्थ्य में वो हमसे कही कही कही बहुत ज्यादा होता है , असंभव को भी संभव कर सकता है

जो. मनुष्य के शरीर से जो भी जुडा हुआ है, वो अपने आपमें ताकत से भरा हुआ है पर हम जब अपने उस अंग का उस भाग का प्रयोग सही तरीके से नहीं कर पाते तो ऐसे हालत में वो शक्तिहीन होकर मृतप्रायः ही हो जाता है .

उसकी समुचित क्षमता का प्रयोग न कर पाने से हम हमारी ताकत को ही कम करते चले जाते हैं. जैसे हमारी परछाई अपने आपमें शक्ति शाली होती है और ये हमारा ही वजूद होता है . चाहे प्रकाश हो या न हो

us, like us he also enjoy all the things and comfort enjoyed by us, and other one is that who born with us and with us even after our death, but on power he is much much capable , that can makes impossible to possible. What ever attached to with human body that is filled with power, but when we did not use that through proper way than become powerless and almost died. So on not utilizing that our own power we are reducing our own strength. Like that our shadow , yes that is also our part and highly powerful and also our existence , either in dark or light its existence never end, yes that is another thing that in dark its is invisible to us. Through that our hamzaad can be controlled.

Is that kriya is very easy.????

No not that easy, those one who lacks wisdom, cleverly, courage , that can not get siddhta in this and should not even try for that.

What type of works this can do ???

Through flying it can reach from one place to other .

Gives us information about anything available between

इसका अस्तित्व खत्म नहीं होता हाँ ये अलग बात है की ये तब आँखों से ओझल ही रहता है. इसके द्वारा ही अपने हमजाद को वश में किया जा सकता है .

क्या ये क्रिया सरल है ???

नहीं ये सरल नहीं है , जिसमे बहादुरी,चतुराई नहीं है और जिसका दिल मजबूत नहीं है वो इसे सिद्ध नहीं कर सकता और ना ही ऐसे लोगो को ऐसा कोई प्रयास करना चाहिए.

ये क्या क्या कर सकता है ???

उड़ कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुच सकता है .

आकाश से लेकर पाताल तक की किसी भी जानकारी को लाकर दे सकता है .

पहाड़ों को उठाकर पल भर में ला सकता है.

असाध्य बिमारियों को साध्य कर सकता है.

भविष्यगत घटनाओं को बता सकता है .

किसी को भी वश में कर सकता है .

पर एक बात याद रखो की कोई भी बुरा काम करवाने पर ये खुद तुम्हारे लिए ही मुसीबत खड़ी कर देता है और तब उस मुसीबत से तुम चाह कर भी दूर नहीं हो पाओगे. सच्चे कामो में ही इसकी मदद लेनी चाहिए. आपकी जिंदगी को आप आसान बनाओ ये गलत नहीं है पर उसके लिए दूसरों का बुरा करके तो कभी नहीं.

earth to sky.

Within second lift mountains for us.

Can Cure ant type of incurable disease

Fore tell future for us.

Can hypnotized anyone.

But keep remember that if used in bad karam that this can makes a terrible problem for you and for that you cannot escape, even if you tried hard. Always take help him in good work, to make your life easy is not bad but not on the cost of others.

What are the way for this..

That can be possible through 4 ways.

Day time in sunlight, in night time in the light of deepak ,in day or night in front of mirror, or in night only.

Till that finally process end ,one should not talk to hamzaad, neither accept any things from him, when he told you that now I am here and stop the process, you should not end the kriya. When the process end than very

इसका तरीका क्या है?

इसको ४ तरीको से किया जा सकता है –

दिन में धूप में,रात में चिराग के उजाले में ,शीशे के सामने दिन या रात में या फिर सिर्फ रात में.

और जब तक क्रिया खत्म ना हो तब तक हमजाद से कोई बात नहीं करना चाहिए. ना ही कोई वस्तु उससे लेनी चाहिए .चाहे वो ये कहे की अब तो मैं आ गया हूँ और क्रिया खत्म कर दो तब भी अपनी क्रिया को बंद नहीं करना चाहिए .जब क्रिया पूरी हो जाये और वो आपसे बात करे तो बहुत ही होशियारी से उसका जवाब देना चाहिए, क्यूंकि वो बदले में अपनी शर्ते आपके सामने रखता है .

इस प्रकार कई ऐसी बाते हैं जो की उन्होंने मुझे समझाई और जिनका प्रयोग मैंने करके सफलता भी पाई. और बहुत से विधान भी समझाए पर वो अत्यधिक कठिन भी है और उन्हें पूरा करने के लिए बता की आत्म शक्ति भी चाहिए.और यदि मैं उन तरीको को यहाँ पर रखता तो आप सभी को लगता की हम कठिन क्रियाओं को ही बताने के लिए लिख रहे हैं पर उन्ही तरीको में से एक सरल परन्तु अचूक विधि मैं आपके सामने रख रहा हूँ जिसका प्रयोग मैंने भी करके देखा है और शतप्रतिशत सफलता भी पाई थी.

विधि मात्र ये है की आप अपना नाम ९० दिनों तक प्रतिदिन ३१२५ बार कहे पर जब भी नाम ले तब नाम के आगे या लगाया करे , जैसे की मान लीजिए आप

wisely replied him on only asking by him. Since he place many condition in front of you. He also mentioned many important things about this and applying of that I became successful in this sadhana, he also told me various other prayog though they are very difficult and successfully completing that requires a great degree of atam bal .if here I am mentioned all that you can think that for tough things I am mentioning here, but in that way one of very easy and accurate process describing here, I applied and became completely successful.

Process is like.. for 90 days continuously say your own name 3125 times like that use prefix" ya". suppose your name is Aditya so while time of amal say "ya Aditya" ,this process need to be done alone having only such a light that you can only see your shadow. If practicing in night light up the Deepak filled with sarson oil(mustard seed oil). Practices on the same time each and every day. the number of days you are practicing the sadhana be careful no one except you, can enter that place/room.

का नाम आदित्य है तो अमल के समय 'या आदित्य' कहे . ये क्रिया अकेले में करना जरुरी है

जहा इतना प्रकाश हो की आप को आपका साया दिखाई देता हो इसके लिए यदि रात में अभ्यास कर रहे हो तो मिट्टी के दिए में सरसों के तेल का चिराग जला ले . और एक नियत समय पर इस अभ्यास को करना है . साफ़ कपडे पहने हुए हो.

जितने दिन भी आप ये अभ्यास करेंगे कोई और उस कमरे या स्थान पर न जाये इस बात का विशेष ध्यान रखियेगा.और जब भी आप कोई चीज खाए पीये तो खाने या पीने के पहले थोडा सा हिस्सा जमीं पर डाल दिया करे.और ये कहे की लो आदित्य तुम खा लो या पी लो.ये तुम्हारा हिस्सा है.

यदि आपने ये क्रम बगैर चुके ९० दिन कर लिया तो निश्चित ही एक सौम्य परन्तु तीव्र शक्ति शाली हमजाद आपके कामो को सरल करने के लिए आपके वश में होगा, ये धीरे धीरे आपके सामने आते जाता है और अंततः आपके सामने प्रत्यक्ष हो जाता है , फिर आप जो भी आज्ञा देते हैं वो उसे पूरी करता ही है ,

हाँ एक बात याद रखियेगा की जब भी आपके किसी काम को पूरा करने के लिए जायेगा उतनी देर तक जब तक वो वापिस नहीं आ जाट तब तक के लिए आपकी परछाई गायब ही रहेगी.ये आपको अन्य हमजाद प्रयोगों जैसे कोई नुकसान भी नहीं पहुचता. साधना बीच में बंद होने पर कोई अहित भी नहीं होता है.ये आपकी अपनी वो शक्ति होगी,जो की हमेशा श्रेष्ठ कार्यों में आपकी मदद

whenever anything either you eat or drink , a little portion of that be place on the floor/earth and said lo Aditya "lo khalo ya pi lo ye tumahara hissa hain "(here is aditya your share eat it or drink it) if you are successful doing this for 90 days without any gap definitely a soft but highly powerful hamzaad is in your control to make easy your work, and slowly and slowly this appears in front of you , and finally he fully appeared in front of you. whatever you ordered him, he will follow that , yes til that he returned from completing the task given by you , your shadow will be invisible. In this prayog you do not have to face any danger like in other hamnzaad prayog. If sadhana breaks than too not have any danger to you. This is the power who helps you in all the good works, there is not any other restriction.

I am highly oblized to Hasad Baqsji for giving me such a rarest gyan to me, if have blessing of Sadgurudev I will open many more secretive aspect and dimension of that.

किया करेगा. इस क्रिया में और कोई बंधन भी नहीं है.

मैं बहुत शुक्र गुजार हूँ हसद बक्स जी का की ये दुर्लभ ज्ञान उन्होंने मुझे दिया. यदि सदगुरुदेव का आशीर्वाद रहा तो और भी गोपनीय पक्ष व प्रयोग भविष्य में आपके सामने रखूँगा.

Mahakali - Sadhana

(काल के किसी भी क्षण में उपस्थित देव योगों को जानने की परम गोपनीय साधना)

the continuity of the Kaal is very micro micro. Kaal is not just a time only, it is a platform of mobility for living and non livings. there are myriad events are there in a single dot of kaal. we term this as Kaal yog or Kaal Khand. in Kaal khanad, there goes thousands processes altogether running, but the one event which is most heavier on others, those effect us. same way if we analyse those events, we find there are god and goddess mentioned in our scriptures for every task. you can take bramha, vishnu, mahesh, varuna, indra, laxmi, saraswati, mahavidhya or any god or goddess, they are adjoined with nature for particular task.

this way we find a particular effect of any god-goddess in every moment of the life. and this has also been said that in every moment one

काल की गति सूक्ष्म से अति सूक्ष्म हैं . काल केबल कोई समय मात्र नहीं हैं , काल सजीव व् निर्जीव की गतिशीलता की पृष्ठभूमि हैं . काल गति के हरेक बिंदु में असंख्य घटनाए समाहित हैं . इन्ही को हम काल योग या काल खंड कहते हैं . काल खंड में एक साथ हजारो प्रक्रियाए चलती रहती हैं , पर जिस भी प्रक्रिया का प्रभुत्व ज्यादा होता हे उसका असर हम पर प्रभाव ज्यादा रहता हे. इसी तरह अगर हम घटनाओ का अनावरण करे तो हरेक प्रक्रिया के लिए हमारे शास्त्रों में देवी एवं देवता निर्धारित हैं . आप ब्रम्हा, विष्णु, महेश, वरुण, इन्द्र, लक्ष्मी, सरस्वती, महाविद्या या किसी भी देवी देवता को देख लीजिए, प्रकृति में उनके कार्य निश्चित रूप से होते ही हैं .

अगर हम इसी बात को आगे लेकर बढे तो यह एक निष्कर्ष हैं कि पृथ्वी में जो भी गतिशीलता हैं या, काल खंड में समाहित जो भी घटनाए हैं उन हरएक घटना के स्वामी देव या देवी

or another god will be active in the body. with the help of sadhana we can take favour of the god or goddess and can fulfill our wishes. but we do not know that which god or goddess will be active in which moment. and if we know, then we do not have knowledge that what nature is going to do in very next moment and what the effect of the same would be.

very high accomplished yogis, do have this type of knowledge of kaal, they do know that in which moment what will happen and what and on whom would be effect of that. which god or goddess would be active in that moment and which god or goddess will be active in individuals body. on the base of this only, they get to know that in which moment what is going to happen and on whom it will give positive or negative effect, such a micro knowledge they do have.

As it has been told earlier, that in every moment one event out of every event would be having a biggest effect. it differs for every individual. and we term it as a life when we bind them altogether. actually, there would be hundreds of event happening with us in a single moment but the effect of those are so less that we do not

होते ही हैं.

हर एक क्षण में हमारे जीवन पर कोई न कई देवी देवता का प्रभाव पड़ता ही हैं . इसी को कहा गया हैं कि हरेक क्षण में कोई न कोई देवी या देवता शरीर में चैतन्य होते ही हैं . साधनाओ के द्वारा किसीभी देवी एवं देवताओ को सिद्ध कर के उनके द्वारा हमारी मनोकामना पूर्ति ,कार्य पूर्ति व इच्छा पूर्ति करवा सकते हैं . मगर हम ये नहीं जानते की किस क्षण में कौन देव / देवी चैतन्य हैं , और अगर हैं भी तो हम ये नहीं जानते कि प्रकृति आखिर कौन सा कार्य उस क्षण में करेगी और उसका हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा.

अत्यंत उच्चकोटि के योगी, इस प्रकार का कालज्ञान रखते हैं , उन्हें मालूम रहता हैं कि कौन से क्षण में क्या होगा और उसका परिणाम किसके ऊपर क्या असर करेगा. कौनसे देवी या देवता उस क्षण में जागृत होंगे और कौन से देवी देवता उस क्षण अलग अलग मनुष्य में चैतन्य रहते हैं . इसी के आधार पर वे भविष्य में कौन से क्षण में किसके साथ क्या होगा और उसे अलग अलग व्यक्तियों के लिए कैसे अनुकूल या प्रतिकूल बनाना हैं इस प्रकार से अति सूक्ष्म ज्ञान रहता हैं .

जैसे कि पहले कहा गया हैं , कि काल खंड में घटित असंख्य घटनाओ में से किसी एक घटना का प्रभाव सब से ज्यादा रहता हैं हर एक व्यक्ति के लिए वो अलग अलग हो सकता हैं . और हम उसी को एक डोर में बांधते हुए "जीवन" नाम देते हैं . दरअसल हमारे साथ एक ही वक़्त में सेकड़ो घटनाए घटित होती हैं पर उनके न्यून प्रभाव के

understand it. now, the incident which is going to be affect most, if we please the god or goddess of that event, then we will be able to make that incident in our favour for sure. but in such less time how we can understand that what is event, who is controlling god, what is result etc.for very high accomplished yogi, this would be possible. but for a common men, it is not. and to take this thing into mind, our sages made one such sadhana, that every devyoga of every moment becomes positive it self and the knowledge is possible of dev yog, through which we can understand that in which moment what work should be done. we get the ability to understand that the work in particular moment is going to be positive or negative and god gives comfort.

the goddess of Kaal is said to be Kali and Kaal stays in her total control. the people who wish to do this sadhana should also practice tratak on shakti chakra.

This sadhana could be started on Sunday or else any day of the week. one should wear black cloths only during sadhana. This sadhana requires Mahakali yantra and black Hakeek rosary. All the rules of the sadhana are applied.

कारण हम उसे समझ नहीं पाते. अब जिस घटनाका प्रभाव सबसे ज्यादा होगा उसके देवता को अगर हम साधना के माध्यम से अनुकूल करले तो उस समय में होने वाले किसी भी घटना क्रम को हम आसानी से हमारे अनुकूल बना सकते हैं . पर हम इतने कम समय में कैसे समझ ले की क्या घटना हैं देवता कौन हैं प्रभाव कैसा रहेगा आदि आदि ...उच्चकोटि के योगियों के लिए ये भले ही संभव हो लेकिन सामान्य मनुष्यों के लिए ये किसी भी हिसाब से संभव नहीं हैं . और इसी को ध्यान में रखते हुए , एक ऐसी साधना का निर्माण हुआ जिससे अपने आप ही हर एक क्षण में रहा देव योग अपने आप में सिद्ध हो जाता हैं और देव योग का ज्ञान होता रहता हे जिससे कि ये पता चलेगा कि कौन से क्षण में क्या कार्य करना चाहिए. अपने आपही क्षमता आ जाती हैं की उसे कार्य के अनुकूल या प्रतिकूल होने का आभाष पहले से ही मिल जाता हैं और देवता उसके वश में रहते हैं

काल की देवी महाकाली को कहा गया हैं और काल उनके नियंत्रण में रहता हैं . इस साधना के इच्छुक लोगो को साधना के साथ साथ शक्ति चक्र पर त्राटक का भी अभ्यास करना चाहिए

ये साधना रविवार या फिर किसी भी दिन शुरू की जा सकती हैं इस साधना में साधक को काले वस्त्र ही धारण करने चाहिए. इस साधना में महाकाली यन्त्र व काले हकीक माला की जरुरत रहती हैं साधना काल के के सभी नियम इस साधना

after 11pm in the night, sadhak should take bath and wear black cloths. should then sit on black Uni Aaasan. the picture of mahakali should be in-front. worship the yantra. light a lamp and Loban dhoop. then meditate through following lines.	में पालन करने चाहिए . रात्रि में ११ बजे के बाद साधक स्नान कर के, काले वस्त्र धारण कर के काले ऊनी आसन पर बेठे. अपने सामने महाकाली का चित्र स्थापित हो. यन्त्र की सामान्य पूजा करे. दीपक और लोबान धूप जरुर लगाए. फिर निम्न लिखित ध्यान करे
Mundmala dharini Digambara Shatrusamharini Vichitraroopa Mahadevi Kaal mukh Stambhinim Namami tubhyam matru swaroopa	मुंड माला धारिणी दिगम्बरा शत्रुसम्हारिणी विचित्ररूपा महादेवी कालमुख स्तंभिनी नमामितुभ्यम मात्रुस्वरूपा
After this pray for success to Mahakali and pray for success and chant 21 rosary of following mantra	इसके बाद साधना में सफलता के लिए महाकाली से प्राथना करे एवं निम्न लिखित मन्त्र का २१ माला जाप करे.
Klim Klim Krim Mahakali kaal siddhim Klim Klim Krim Phat.	क्लीं क्लीं क्रीं महाकाली काल सिद्धिं क्लीं क्लीं क्रीं फट .
Repeat this for 11 days. after that the rosary should be worn for 1 month and then dropped in river and Yantra could be worshiped by placing it in pooja sthan.	११ दिन तक प्रति दिन साधना निर्देशित जप करे . इसके बाद माला को १ महीने तक धारण करे फिर इसे नदी में विसर्जित करदे. यन्त्र को पूजा स्थान में रखा जा सकता हैं

Dreams indication And Mantra Siddhi

(साधना के सफलता /असफलता को जानने में सहायक संकेत)

The world of dream s is still as mysterious to us, how we can understand what are they trying to say us, or it is just reflections of our daily wish, hidden bhavna or reflection of our sex related thought. Very difficult to understand, but every now and then ,we listen of about so many such a dream of who become true. And many times our own friend and nears one tells us on this .

Generally we go by understanding the dreams pattern as their effect and cause stated by them, I am advocating again that try to understand their pattern seeing your life carefully, what the certain things means to you. may be it is saying something different to you, I am here mentioning here some of mine own and our guru sister examples so that it will help you to

स्वप्न जगत अभी भी हमारे लिए एक रहश्य हैं. हम कैसे जाने की वे किस और इशारा कर रहे हैं, या सिर्फ ये हमारी दैनिक इच्छाओं की प्रतीक मात्र हैं ,या हमारी शारीरिक /दैहिक सुख की अनुभूति मात्र हैं , बेहद कठिन हैं| हम सभी ऐसे स्वप्न के बारे में सुनते ही रहते हैं कि जो सत्य हुए.| और कई बार ऐसे स्वप्न के बारे में हमारे निकट के सबंधी और परिचित भी हमें बताते रहते हैं |

सामान्यतः हम स्वप्न संकेतों को उनके प्रभाव और कारण से ही समझने का प्रयास करते हैं |यहाँ पर मैं आपके यह कहना चाहूँगा कि इनको समझने के लिए आप इन्हें अपने जीवन के परिपेक्ष में समझे , तो आपको समझ में आएगा, कि ये कुछ ओर ही संकेतित कर रहे हैं | यहाँ पर मैं आपके समक्ष मेरे अपने ओर कुछ गुरु बहिनों के उदाहरण आपके सामने रख रहा हूँ, जिससे आप को कुछ इन्हें समझने में मदद मिलेगी |

understand the pattern.

1. While studying in my college very next day I had to go for a exam paper but I could not prepared well for that, I have seen in my dream that one goat is burning in fire. Immediately I woke up I consider sadgurudev ji s book, I find seeing goat and fire both are good, but what ,i have to do , I calmly sit, my inner voice calls me, indication is good why not I again go for study of selected four question more. And mine surprise, when paper given to me that all the four question is in it.

2. Once I dream I had seen , I was in midst of heavy water mass surrounded from all side and continuously rising its level., I was shocked, still seeing that and helplessly standing their ,one woman just came from my behind and push a little and smiled and moved ahead.(water is for knowledge, as mentioned some book, what I draw conclusion, something wrong is going to happen with me soon, and it happened, next three days was like hell for me, I faced all the trouble, but came

1. जब मैं कॉलेज में पढ़ रहा था , अगले ही दिन मेरा वार्षिक परीक्षा का पेपर था, ओर मेरी तैयारी कुछ अच्छी नहीं हो पाए थी |स्वप्न में , मैंने देखा की एक बकरी आग में जल रही थी | जैसे ही स्वप्न के बाद मेरी नीद खुली मैंने तत्काल ,सदगुरुदेव जी की किताब में देखा कि उसमें पाया की बकरी , आग देखना शुभ हैं |पर मैं क्या करूँ , मैं कुछ देर तक शांत बैठा रहा मैंने अंतर्मन से समझा कि , संकेत शुभ हैं तो क्यों नहीं ,मैं कुछ चुनिदा 4 प्रश्नफिर से पढ़ लूँ |,मेरे लिए बेहद आश्चर्य था की वे ही ४ प्रश्न, प्रश्न पत्र में ,मेरे सामने थे |

2. एक बार मैंने स्वप्न मे देखा कि , मैं एक चारों तरफ से पानी से घिरा हुआ हूँ, ओर पानी लगातार बढ़ता जा रहा हैं |मैं घबराया हुआ उसे असहाय सा खड़ा देख रहा था , |तभी एक महिला मेरे पीछे से आई , मुझे धक्का दे कर हंसती हुए आगे पानी में चली गयी |(यहाँ पानी -ज्ञान का प्रतीक हैं कुछ किताबों में ऐसा ही दिया हैं ,) परन्तु मैंने निष्कर्ष निकला कि अगले कुछ ही दिन में मेरे साथ कुछ अप्रिय होने जा रहा , और ये हुआ भी,|अगले तीन दिन मेरे जीवन के सर्वाधिक कठिन दिनों मेंसे एक थे , हर प्रकार की समस्या सामने आई पर सदगुरुदेव जी की कृपा

out successfully as sadgurudevji blessing always with me. Actually, I was going through very tough period not having any job too, water mass rising indicating the trouble coming, the woman is stand for shakti and pushing me and moved ahead, indicating why I was stand their in shock, why not try to do sadhana and moved ahead.

दृष्टी से में सफलता पूर्वक उससे बाहर निकल पाया | वास्तिविकता ये थी , कि मेरे पास कोई जॉब भी नहीं था मैं अत्यंत कठिन दिनों से निकल रहा था | (यहाँ पर पानी प्रतीक हैं समस्या का , वह महिला ,शक्ति के प्रतीक थी जो मुझे हटा कर आगे निकल गयी | जो बता रही थी की में क्यों असहाय सा खड़ा हूँ क्यों नहीं साधना के द्वारा मार्ग ढूढता |)

3. One of close friend ,always seen in dreams water, and also having some fear that, to remove that she learn swimming but still that fear walk side by side, once she asked me why this always happens, I could not have any answer, I simply said, instead of understand theoretically go for answer hidden in your life. later she confirm as she did suicide in the past lives in jumping in to water.(She still knew about her past lives details)

3. हमारी परिचिता को हमेशा स्वप्न में पानी जल ही देखता था ,ओर उन्हें उससे डर भी कुछ महसूस होता था ,इस डर को दूर करने के लिए उन्होंने तैरना भी सीखा पर, फिर भी भय तो बना ही रहा , एक बार उन्होंने मुझसे पूछा की क्यों ये हैं, मेरे पास कोई उत्तर नहीं था बस इतना कि आप स्वयं ही अपने जीवन में इसे ढूँढो , बाद में उन्होंने बताया कि पिछले जीवन में उनकी मृत्यु जल में डूब कर आत्महत्या करने से हुई थी |(उन्हें अभी भी अपने पिछले जीवन का कुछ स्मरण हैं)|

4. If I am right I have read one Russian great writer lawys had a same dream in that he saw one pair of foot print in sea shore and disappearing after a

4. यदि में सही हूँ तो हाल ही मैंने एक रुसी साहित्यकार के बारे में पढ़ा था कि उन्हें प्रतिदिन एक ही स्वप्न आता था कि एक जोड़ी रेत पर पैरों के निशान दिखते थे, जो कुछ दूर जा कर गायब हो जाते थे |उन्होंने इस स्वप्न को समझने के लिए हर संभव

distance he consulted all the possible things to understand but no help a one his friend gokri sitting he narrated all the things, he smiled, why to search for out side, see you life though you achieved all the things but still your life is not like foot print on a sandy ground. And the writer shocked he never thought that way, its amazing facts that on that night the dreams stopped coming...

कोशिश कि पर वे कामयाब नहीं हो पाए ,एक दिन उन्होंने अपने मित्र गोर्की जो कि एक साहित्यकार भी थे उनसे इसके बारे में चर्चा कि, उसने हँसते हुए कहा कि बाहर क्यों ढूढ रहे हो तुम अपना जीवन देखो ,सब कुछ तो प्राप्त कर लिया हैं फिर भी उन उपलब्धियों का रेत पर पड़े निशान से ज्यादा कोई अर्थ हैं | ये उत्तर सुन कर प्रश्नकर्ता हिल गया ,उसने इस तरीके से तो सोचा भी न था , ओर ये आश्चर्य जनक बात हैं कि उस दिन से उसे वह स्वप्न कभी नहीं आया |

I am not mentioning here what the good dream and what indicate nething bad, there are many article d books available on this topic, yes dgurudev ji write one complete book this subject

यहाँ पर में ये नहीं उल्लेख कर रहा हूँ कि कौन से अच्छे स्वप्न हैं और कौन से ख़राब संकेत देते हैं | इस सन्दर्भ में पहले से अनेक लोगों के लेख उपलब्ध हैं ,हाँ एक स्वप्न विज्ञानं पर सदगुरुदेव जी कि पूर्ण पुस्तक भी हैं |

Hope this help you little bit.

उम्मीद करता हूँ कि आपको शायद स्वप्न समझने में कुछ मदद मिले |

Dream and mantra Siddhi indication:

स्वप्न ओर मंत्र सिद्धि के संकेत :

Can swapan or dreams can be used as a instrument to learn about the mantra Siddhi purpose. Here my meaning is that are we moving in the right path or something wrong, mother nature always guide us in this connection.

क्या स्वप्न के माध्यम से हम मंत्र सिद्धि होगी या नहीं कुछ जान पा सकते हैं|यहाँ पर मेरा तात्पर्य इससे हैं कि हम साधना में सही रास्ते पर हैं या नहीं ,कुछ संकेतो के माध्यम से आप समझ सकते हैं , प्रकृति हमें इस बारे में भी संकेत देती हैं ही |

Our ancient master are aacharya guide us in this path, they provide us

हमारे प्राचीन आचार्यो ने इस बारे में काफी कुछ उल्लेख किया हैं कि हम अपनी साधना में सफलता

some clue by which we can easily understand the progress. In the sadhana field.	स्वप्न के माध्यम से भी जान सकते हैं	
Positive sign:	शुभ स्वप्न :
1. Sadgurudev, great person, saint ,mahatama darshan is very very good, 2. Big bungalow, red color flower, jewelry ,shivling, garden, Brahmin, meeting with person unknown, seeing temple ,terth. 3. Getting mantra in dreams. very good sign. Just use a signnot start reciting the mantra till you confirm with your guru.(shri ma sharda ,when some one asks her in this type of cause, if shashtriy way the construction of the mantra is right, she gave permission or she correct that, so directly not started chanted the mantra till you confirm from your own guru) 4. Getting Prasad from own guru or param guru, guru putra darshan, 5. apply as a lotion on your body ,with own blood, 6. even sadhak or guru brothers	1. सदगुरुदेव जी ,महान व्यक्ति ,संत , महात्मा , के दर्शन होना अत्यंत ही शुभ हैं | 2. बड़ा घर, लाल रंग के फूल, आभूषण ,शिव लिंग ,ब्राह्मण ,अज्ञात व्यक्ति के मुलाकात , मंदिर , तीर्थ के दर्शन , शुभ हैं | 3. स्वप्न में मंत्र प्राप्ति ,बहुत अच्छा प्रतिक हैं , इसे प्रतीक ही केबल माने , न कि इसे मंत्र का जप चालू कर दे जबतक कि आप अपने गुरुदेव से इस बारे में निर्देश न प्राप्त कर ले |(जब भी श्री माँ शारदा से कोई भी साधक इस तरह कि बात करता था तो वे पहले ये देखती थी कि मंत्र शाश्त्रीय रूप के शुद्ध हैं या नहीं, यदि हैं , तो आज्ञा दे देती थी या फिर उसमे सुधार कर देती थी) इसलिए स्वप्न में प्राप्त मंत्र का सीधे ही जप प्रारभ न कर दे |जब तक कि आप अपने गुरुदेव से दीक्षा निर्देश न प्राप्त कर ले | 4. गुरुदेव से या परम गुरुदेव से प्रसाद पाना , और गुरु पुत्र के दर्शन भी शुभ माना गए हैं | 5. अपने रक्त से अपने शरीर पर मालिश करना भी शुभ माना गया हैं | 6. किसी भी साधक के या गुरु भाइयों के

darshan, 7. also cow flesh (gou maans) and eating of go mans also assign of mantra Siddhi. **Negative sign:** physical relation with other woman, suicide, death, hit by some one else. Hit by Black colored man.etc. ***lord swapnesher sadhana appeared in earlier post in the blog, very important in understanding dreams.***	दर्शन भी शुभ माने गए हैं | 7. स्वपन में गो मास दिखना या खाना भी अच्छे संकेत माने गए हैं | 8. अशुभ स्वप्न : किसी भी अन्य महिला से शारीरिक संबंध ,आत्म हत्या , मृत्यु, किसी अन्य के द्वारा आपको चोट पहुंचना ,काले रंग के व्यक्ति द्वारा प्रहार होना | स्प्नेश्वर साधना जो कि ब्लॉग पर में दी गई हैं इन संकेतो को समझने के लिए बहुत ही महत्वपुर्ण हैं.|

" if through tough and difficult situation you face and turns toward the god than all theses situation like a boon for you." swami Vivekanand

यदि अत्याधिक कठिनाई से भरी परिस्थिति आप सहन कर रहे हो, और इस कारन से आप ईश्वर उन्मुखी होते हैं ये सारी परिस्थितियां मानो आपके लिए बरदान थी " .. स्वामी विवेकानंद

"As long as " TOUCH- ME- NOT- ISM" is your creed and kitchen pot your deity , you can not rise spiritually" .. swami Vivekanand

जब तक मुझे न छूओ (छुआ छूत) की भाबना और रसौई के बर्तन आपके देवता हैं तब तक आप आध्यात्मिकता में ऊपर नहीं उठ सकते हैं. स्वामी विवेकानंद

IKSHAMRITYU SADHNA

काल जयी होने मे सहायक दुर्लभ साधना

In present time when our body became the house of diseases and maximum portion of our income is been spent on curing such diseases.In such condition a big question arise i.e. how to keep our body fit nfine.Then we think is their any way to keep our body healthy and complete freedom from disease but also along live life as per our wish hmmm?

You know it is possible through RAS TANTRA.The same sadhna was performed by Devvrata (Bhishma)by permission of his father and blessed with long life. With complete devotion we can achieve above all fruits. Shree Sdgurudev explained in such manner..

This sadhna can be performing from third to eleventh of Shukl Paksha.Whole white cloths and asan should be used while sadhna.Very first use pure Ashta sanskarit Parad along with the Belpatra ras and do the kharal

आज के वर्तमानं समय में हमारा शरीर केबल रोगों का घर बन गया हैं ओर हमारी आय का एक बड़ा हिस्सा इन रोगों से मुक्त होने में ही लग जाता हैं . इन परिस्थिति में एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने आता हैं , कि हम कैसे अपने शरीर को स्वस्थ रखे. इसलिए हम ये सोचते हैं की क्या कोई ऐसा रास्ता हैं जिसके माध्यम से हम अपने शरीर को रोग मुक्त ओर लम्बी आयु प्राप्त कर सके .हैं न ..

आप जानते हैं कि यह रस तंत्र के माध्यम से संभव हो सकता हैं इसी साधना को देवव्रत (भीष्म पितामह) ने भी अपने पिता के आज्ञा संपन्न किया और लम्बी आयु प्राप्त किया था.. यदी हम पूर्ण श्रद्धा से यह साधना करे तो सारे शाश्त्रोक्त फल इस साधना के हमें प्राप्त हो सकते हैं .श्री सदगुरुदेव जी ने इसका विधान बताया था ....

यह साधना किसी भी शुक्ल पक्ष के ३ रे दिन से

process and make a gutika of it.Then in morning first worship the God Mahamrityunjay and Gurupujan and request for complete success and blessings.

After getting permission put that parad gutika on vilva patra and by concentrating your whole consciousness and by tratak do the chanting of below mantra for 108 malas. After completing mantras again repeat the same process means take fresh vilva patra then place the gutika and do the same counts In the same way do it on 108 fresh leaves. When u r done with the whole process then keep that Parad gutika at very safe place.Grind that leaves and take juice out of it and drink it.

Keep doing this series for 11 days.One important facts is that the green leave gets transform into golden color one by one after each 108 malas which indicates us that we are going in right direction.

MANTRA : om kleem mrityunjayaay kleem kleem phat

Via this article I was just trying to introduce this sadhana. Making understanding of Mantra and its pronunciation is guru's work. Therefore contact Gurudev for it. He would definitely make you understand its secrets.

११वे दिन तक की जाती हैं .श्वेत वस्त्र ओर आसन भी श्वेत होना चाहिए , ओर इस से पहले आपको अष्ट संस्कारित पारद को बेल पत्र के रस में घोट कर (खरल करके) एक गोली सी बना ले . पी प्रातः काल भगवान् मृत्युज्य ओर सदगुरुदेव पूजन करके पूर्ण सफलता के लिए प्रार्थना करे..

अनुमति मिलने के बाद पूर्ण ध्यान से पारद गुटिका (गोली) को विल्व पत्र पर रखे , निम्नाकित मंत्र का १०८ बार जप करे. जप पूर्ण होने के बाद इस पूरी प्रक्रिया को फिर से एक नयी ताजे विल्व पत्र पर पुनः पारद गुटिका रख कर , करे , इस तरह से १०८ विल्व पत्र पर करे . जब आप ये कर चुके हो तो पारद गुटिका को किसी सुरक्षित स्थान मैं रख दे . और पूजन में प्रयुक्त पत्तियों का रस निकल कर ग्रहण कर ले .

इस प्रक्रिया लगातार ११ दिन तक करें .,ये महत्पूर्ण तथ्य हैं की हरी विल्व पत्तिया १०८ बार मंत्र उच्चारण के बाद सुनहरी रंग में बदल जाएँगी ये इस बात का प्रमाण होगा की हम ओर प्रक्रिया सही रास्ते में जा रहे हैं .

मंत्र - ॐ क्लीं मृत्युंजयाय क्लीं क्लीं फट .

इस लेख के माध्यम से में आपको इस साधना से परिचित करवा रहा हूँ ,मंत्र को समझना ओर उसका उच्चारण तो गुरु ही समझा सकते हैं .इसलिए गुरुदेव जी से संपर्क करे वे निश्चय ही आपका मार्ग दर्शन कर इसके रहश्य आपको बताएँगे उनकी उदारता से ही आज यह

It is just because of his kindness this sadhana is in front of us. Definitely attempt this sadhana and dedicate our all gratitude to Sadgurudev.	साधना हमारे मध्य हैं .प्रयत्न कर इसमे सफलता प्राप्तकर उनके प्रति प्रणम्य ओर आभारित हो .

चाहे तोते कितना राम राम बोलता हो , पर जब बिल्ली उसको पकडती हैं तब टे टे ही उसकी आवाज निकलती हैं ,राम राम नहीं .... . श्री रामकृष्ण परमहंस

(सच्ची विद्या तो जो हैं वह अंतर मन में उतारी हो ओर कंठ में हो ,रट के पढ़ी पढाई विद्या काम की नहीं हैं)

Even if parrot speaks ram ram ,but when cat catch his neck only te te sound comes from his mouth, not ram ram … Sri Ram krishna Paramhansa.

(true /real gyan is that which obsorb inheart and store in neck ,that will not be valuable if gained only by memorizing power)

योग्य के लिए कोई कार्य कठिन नहीं , व्यापारी के लिए कोई देश दूर नहीं ,विद्वान के लिए कोई देश पराया नहीं ,मधुर बोलने वाले के लिए कोई पराया नहीं . .

Nothing is beyond from a person ability ,for a merchant nothing is distant land ,for a scholar no country is unknown , same way for a person with sweet voice everybody become friend means none is enemy..

kaal Sanklan and Vikhandan

काल संकलन एवं विखंडन

काल संकलन एवं विखंडन

(काल का एक क्षण का अत्यंत दीर्घ या अत्यंत लघु होना कैसे संभव हैं)

(काल का एक क्षण का अत्यंत दीर्घ या अत्यंत लघु होना कैसे संभव हैं)

Lost in the past few days, there lived a strange fun inside me. Vision of seeing the world was changed. pleased with sadgurudev's blessings I was getting knowledge of Shiva Shakti. Daily sadgurudev used to points out in regard Sadgurudev Shiv Shakti and I was trying to write it much as I could. The first time I realized that this whole World is "meithoon may". Shiva and Shakti are always going on for creation. And creation is only possible where shiva and shakti meets and this only gives birth to kaal, life and even death.... Sadgurudev was making me understand that secret which was base of the Vaaam Tantra... In those days only i came in touch with 2 different and opposite incidents in my life which were really strange but at last sadgurudev opened that

पिछले कुछ दिनों से मैं एक अजीब सी मस्ती में खोया रहता था. दुनिया को देखने का मेरा नजरिया ही बदल गया था. सदगुरुदेव की कृपा से इन दिनों शिव शक्ति के विषय में ज्ञान मिल रहा था. रोज सदगुरुदेव शिव शक्ति सबंध में बताते जाते और मैं उसे सुनके लिखता रहता था. पहली बार मुझे ये समझ में आया कि पूरी सृष्टि मैथुन मय ही हैं . शिव और शक्ति हमेशा गतिशील रहते हैं सर्जन में. और सर्जन केवल मात्र वहा सबंधित हैं ,जहा पर शिव ओर शक्ति का समन्वय हो और ऐसे ही तो सर्जन होता हैं काल का गति का जीवन का और मृत्यु का भी...सदगुरुदेव वो रहश्य समझा रहे थे जो कि आधार हैं पूरे वाम तंत्र का..इन्ही दिनों में मेरे साथ दो इसी विपरीत घटनाये घटी कि मैं आश्चर्य में डूब ही गया पर आखिर कर बस सोचा गुरुदेव ही समाधान करेंगे की आखिर वो साडे तीन घंटे गए कहा ? और इस ख्याल के साथ में सो गया...

secret in front of me that what those incidents were actually...

once I just entered into my room after roaming here there at that time only my one of the familiar spoke "I am waiting, please came down and then we will sit". Like daily, I asked him that I'll come in 15 minutes after having a bath. I looked at wrist watch was, it was, quarter past nine. and i just set down on. Just a moment of eye...my eyes closed and opened. That much of time only...And this was moment of change.

Wind became cold...the noise outer, was no more. I felt strange. I stood up to look out at window. In this second, how darkness had grown much...anyways when I went took towel to go for bath, I suddenly looked at wristwatch. It was 12:30. I laughed mentally, the watch gone. let see I may repair it tomorrow...with this thought I came out side and My eyes fell on the wall clock, It was 12:30!! Meance time was 12:30 actually. But How? Was I sleeping? No-No how could it is possible? I was completely awake just a moment was passed and to sit for these much hours...??? Have I

एक दिन रातको में घूम कर वापिस आ कर और अपने कमरे में प्रवेश किया ही था. कमरे के अन्दर गया तो नीचे से एक परिचित ने आवाज़ दी कहा कि "में इंतज़ार कर रहा हूँ नीचे आईयेगा फिर हम बैठेंगे." रोज की तरह मैंने कहा कि १५ मिनिट में आ रहा हूँ स्नान कर के. कलाई पर बंधी घडी में देखा तो सवा नौ बज रहे थे. और, पलकों की वह निमेष....मेरी एक पलक झुकी और उठी, बस इतना ही समय ...बस यही क्षण में सारा परिवर्तन...कुछ बदला बदला सा लगा

मुझे...हवा ठंडी हो गयी थी अचानक...बाहर का शोर गुल भी शांत हो गया था...कुछ अजीब सा अहसास हुआ मुझे..उठा और खिड़की से बाहर झाँका ...इतने समय में अँधेरा कैसे कुछ ज्यादा ही घिर आया ...खैर , नहाने के लिए तौलिया उठाया तो कलाई पर बंधी हुए घडी पर नज़र पड़ी...१२:३० बज रहे थे..मन ही मन हँस दिया कि घडी गयी कामसे. कल मरम्मत करवाऊंगा यही सोचके बाहर निकला की बाहर टंगी हुई घडी पर देखा...१२:३०...दौड़ के गया और दरवाज़े के बाहर देखा ...सब दुकाने बंद हो गयी थी ...कोई इंसान दूर तक नहीं दिख रहा था...मतलब की सच में १२:३० बज गए थे...मगर कैसे ...क्या में सो गया था...नहीं नहीं ऐसा कैसे संभव हो सकता हैं ...मैं तो पूर्ण रूप से जागृत अवस्था में था...बस एक पलक ही तो झपकी थी मेरी. और इतने घंटे

had something wrong food?,,, No No. it was complete truth...what to do.... finally just thought that Gurudev only will answer this that where had my three and Half hour went? And thinking this, I fall asleep.

स्थिर बैठना ..क्या हो रहा हैं ...मैंने कुछ ऐसा वेसा तो नहीं खाया...अरे नहीं...क्या करू...बस सोचा गुरुदेव ही समाधान करेंगे की आखिर वो साडे तीन घंटे गए कहा ? और इस ख्याल के साथ में सो गया...

I was just thinking that let me ask about that incident to gurudev but at 8'o clock in the morning gurudev had started directly making me understand about Shiva and Shakti, he was speaking it fluent. in the begin, I felt good but today it was felt a bit strange..Anyways, removing all these thoughts I started noting down. When I was having any query, I used to ask. But today it was letting a more time...thought, 2 hours had been passes. Then 3,4,5 hours. Now I was bit tired even then too i was nodding my head. I was aware that gurudev must know that I do not understand anything now.

सोचा था कि आज पूंछ ही लू सद गुरुदेव से उस दिन की घटना के बारे में मगर आज सुबह ८ बजे से ही गुरुदेव शिव शक्ति के ऊपर सीधे ही समझाने लगे हैं और धारा प्रवाह वे इस पर बोले जा रहे हैं ...पहले तो मुझे बड़ा अच्छा लगा...लेकिन आज रोज से कुछ अलग लग रहा था....कुछ अजीब...खैर खयालो को दिमाग से हटा के नोट करना शुरू किया...जहा समझ नहीं आता , वही पूछ लेता, लेकिन आज कुछ ज्यादा ही समय हो रहा हैं ...लगता हैं २ घंटे हो गए हैं ..मैं सुनता रहा...फिर ३ ४ ५ घंटे..अब मैं थोडा थक भी गया था फिर भी सर हिला के हूँ हूँ कर रहा था...मैं जानता था की गुरुदेव को पता ही होगा कि अब सब कुछ सर के ऊपर से जा रहा हैं ...

But 2 more hours passed i think. I thought that should I ask gurudev to Stop? in this confusion only, I was wondering that to note down everything what gurudev told, I will need 5-6 register. after sometime when it became too tough for me then I told gurudev, that I am now not able to

लेकिन...और २ घंटे का समय हो गया लगता हैं ....मैंने सोचा कि गुरुदेव को कहू कि अब..इसी उहापोह में ,मैंने मन ही मन हिसाब लगाया की आज तो जाके ५-६ रजिस्टर लाने पड़ेंगे जो गुरुदेव ने आज बताया ,लिखने के लिए. कुछ समय बाद अब मेरे लिए असह्य हो गया तो मैंने कहा गुरुदेव, अब कुछ भी समझ नहीं आ रहा हे...में थक गया हूँ लगता हे...गुरुदेव मुस्कुराये बोले थक गया...२ मिनिट नहीं हुए और थक भी

understand anything...I think I am tired...With smile gurudev told. You tired. Not even 2 minutes passed and you tired, you just feel good to sleep. You will keep sleeping or what..

.I said. What guruji..if some one will listen on Shiva shakti theory for 7-8 continuous, then sleep will automatically come. This time gurudev smiled and said...7-8 hours. Not even 2 minutes had been passed...acting smart?...I said guruji what 2 minutes. you see...with these word I turned back towards wall clock. it was 8 and 1 and half minute...it was sunlight out side, meaning was clear it was 8 of morning only. I felt I was getting made. I bowed down to his feet and made a sincere request that what is this all...bliss me...I wouldn't be able to understand all these At that time he accepted my request and made me understand that the speed and continuity of the Kaal is very micro. But what speed we can catch, we designed time base on it. yogi, with the power, catches any of the moment and can make it micro or macro based on its will...mince, with that one moment either he stretch the moment or compress it (sankalan evem Vikhandan). This

गया, तुझे सिर्फ सोने में ही आनंद आता हैं ... नींद ही लेता रहेगा...

मैंने कहा क्या गुरूजी, अब ७-८ घंटे कोई शिव शक्ति के ऊपर बैठे बैठे सुनता ही रहेगा तो नींद तो आएगी ही....गुरुदेव फिर किंचित व्यंग से मुस्कुराये और कहा अच्छा ७-८ घंटे. दु ष्ट २ मिनिट भी नहीं हुए और...चालाकी करता हैं ...मैंने कहा गुरूजी कहा दो मिनट!!आप देखिये कहके मैंने अपनी नज़र घडी की ओर घुमाई जो पीछे की और थी.. ८ बज के डेढ़ मिनट...बाहर धूप थी मतलब साफ था कि दिन के ८ ही बजे हैं ...मतलब की सच में सिर्फ डेढ़ या दो मिनट हुए हैं .....मैंने पागल हो जाऊंगा...तुरंत उनके चरणों में लेट गया....नम्र निवेदन किया कि गुरुदेव ये सब क्या हैं ...कृपा कीजिए...मैं ये सब इसे नहीं समझ पाऊँगा...

तब उन्होंने निवेदन स्वीकार करते हुए समझाया कि काल की गति अति सूक्ष्म हैं...मगर जिस गति को हम पकड़ पाते हैं उसी के आधार पर हम समय की संरचना कर देते हैं ...योगी अपनी इच्छा से किसी भी एक क्षण को पकड़ के उसकी गति को लम्बा या छोटा कर देता हैं ...मतलब उस एक क्षण का वो संकलन या विखंडन कर देता हैं... इसी प्रकार से योगी चाहते तो हजारो सालो को एक क्षण में परावर्तित कर सकता हैं ...इसके द्वारा वह अपना समय संकुचित करके सीधा एक हजार साल आगे निकल जायेगा..उसे फिर

way only, if yogi wishes, he can convert thousands years in one moment. with this after compressing thousands years, in a moment he will directly go to thousands years in future, he need not to wait for thousands year for to dork in that particular year which will come after thousand years. or else Yogi can stretch a single moment and make hundred years out of it. for the world it would have been just a second but for a yogi, he could have lived hundreds of years in this. The both incident happened with you had been done by me just to make you understand this, so that you can understand better now, what I just spoke.

एक हजार साल के बाद का कोई काम करने के लिए इंतज़ार करने की जरुरत नहीं रहती. या फिर योगी चाहे तो एक क्षण में सिर्फ काल विखंडन कर के अपनी सेकड़ो साल की साधना ख़तम कर लेगा..दुनिया के लिए उसने सिर्फ आँखे बांध की और खोली पर इस समय तक उस योगी ने न जाने कितने साल जी लिए होंगे...तुम्हारे साथ हुई ये दोनों घटनाये मैंने इसी लिए करवाई थी की तुम्हे जब में ये बताऊ तो तुम्हे समझ आ जाए.

My confusion was over now. I asked that with which sadhana this is possible? Gurudev said that this is possible through any of the way. Like yoga or tantra..When I asked about process, he let it went off with a slight laughter. I understood that this is very high level of sadhana and to know the secret of this sadhana is not possible for me/ but what ever he made me understand of this process is very far then explanations. After that I came to know that only siddhas of

मेरे मन पर से पर्दा हट गया था. मैंने पूछा गुरुदेव ये कौन सी साधना से संभव हैं ...इस पर गुरुदेव ने उत्तर दिया की किसी भी मार्ग से इसे सिद्ध किया जाता हैं ..चाहे तंत्र हो या योग मार्ग...जब मैंने प्रक्रिया के बारे में पूछा तो वे हँस के टाल गए.

मैं समझता था कि शायद ये बहुत ही उच्च साधना हैं ओर इसका रहस्य जानना मेरे लिए इस वक्त संभव नहीं हैं...मगर इस प्रक्रिया के बारे में उन्होंने जो ज्ञान दिया वे शब्दों से परे हैं...आगे जानकारी मिली कि सिद्धाश्रम से संस्पर्षित योगीयो को ही इस प्रकार की साधना या अनुभूति करवाई जाती हैं ...मगर हमारे

siddhashrama are applied to do such sadhanas and made them realized about these things with experience. But heart of our beloved gurudev is so much big that he let us such common men experience such divine things sometimes. For him all these things are love toward us. Being in the love toward us, he bless us the way, word them self could not explain this.	गुरुदेव का ह्रदय इतना विशाल हे की हम जैसे तुच्छ लोगो को भी वे यदा कदा ऐसे अनुभव करा देते हैं की...उनके लिए ये सब प्रेम ही हैं.. प्रेम के वशीभूत वो शिष्यों पर इतनी कृपा बरसाते हैं की शब्द से उसको जाना नहीं जा नहीं सकता ...

Fear comes from the hreat if you ever feel over come by dred of some illness or accident, you inhale and exhale deeply ,slowly and rhythmically several times, relaxing with each exhalation, this help the circulation to become normal, if your heart is truly quiet, you cannot feel fear at all.

.. Parmahansa Yoganand

भय ह्रदय के रास्ते से आता हैं ,यदि आप कोई दुर्घटना या स्वाथ्य सम्बंधित परेशानी से परेशान हैं तो , धीरे धीरे ,एक लय में गहरी स्वास ले , बार बार .और हर स्वास के साथ अपने आपको ज्यादा आराम में पाए.इस क्रिया से अप जल्दी ही सामान्य हो जायेंगे | यदि आपका ह्रदय पूर्ण रूप से शांत रूप से हैं तब कोई भी भय आपको महसूस नहीं हो सकता |

परमहंस योगानंद

Kaal Gyan And Shakun

काल ज्ञान और शकुन

How we can know our future , there are several method available to us but which one is suitable, is accurate too, is a very tough question to decide. Do we have to depend upon meth's or have to get knowledge about big mathematical calculation .mother nature in all forms standing in front of us to help, but we treat her as a enemy instead of friend. whole branch of this kaal gyan is available in midst of us but in part by parts .who ever consider mother nature as a sahyogi (helper) ,all that great yogis formulated so many rules and provided to us, but do society still understand their contribution?.

कैसे जाने भविष्य को पर हजारों विधाओ में कौन सी ठीक रहेगी कौन सी नहीं ये तो बड़ा ही कठिन सा प्रश्न हैं .पर क्या हमेशा गणित पर ही निर्भर रहना पड़ेगा , वडे बड़े गुणा भाग जानना पड़ेगा ही ,प्रकृति तो अपने समस्त रूप मैं हमारे सामने सहयोग करने को कड़ी हैं पर हम ही उससे मित्र की जगह उसे शत्रु मानते हैं . इस पूरी शाखा कालज्ञान की हमारे बीच है जिसे हम आज मात्र खंड खंड के रूप में ही पाते हैं, जिन्होंने भी प्रक्रति को सहयोगी रूप में स्वीकार किया उन परम योगियों ने ही सूत्र रूप में अनेको चीजो को समाज के सामने रखा , पर ये क्या समाज उनकी देन समझता हैं.|

Still today, when crow sounds comes in the morning, we guess that some guest will come our home, many of us stand still in fear when cat crosses our way. And blame her

आज भी कौवा के सुबह घर पर बोलने से हम अंदाज़ लगाते हैं, कोई मेहमान आने वाला हैं . बिल्ली के रास्ते काटने पर हममें से कुछ, भय से खड़े हो जाते हैं, और उसी ही दोषी मानते हैं, पर क्या ये ऐसा ही हैं, नहीं ब्रम्हांड में अनेको घटनाये एक साथ होती

for our misfortune, is it the valid reason/cause to understand that, no. in this universe several incident happen side by side ,and can be understand by law of synchronicity, so by knowing one ,we can easily guess other incident. Now it is well proved theory and knowledge that each animal has some peculiar ability (gift of mother nature)to understand the sign of astral world or sookshma jagat .

Not only a astrologer but common mans also need to understand these sign, in ancient time astrologer had unique ability to understand these sign, you can read/see in the books that they already mentioned so many quality and pre condition to be an astrologer, not like that if not able to get any job than become a astrologer, this field is not such a small or low class one. The sign provided by mother nature is known as SHAKUN. They are so effective that understanding it,you need not to take advice from astrologer. sadgurudev ji always told that "**baba vakya prmanam**" ,(means what has been told by higher one is always right)should not be followed. Accept the

रहती हैं , और दो घटनाओ के एक साथ होने के नियम के सिद्धांत के अनुसार एक साथ दो या अधिक घटनाये एक साथ होती रहती हैं उसमें से किसी एक को देख कर दुसरे के बारे में सहज ज्ञान लगाया जा सकता हैं, अब तो ये वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो ही चूका हैं ही इन सभी पशुओं में भी सूक्ष्म जगत के संकेतो को पड़ने की प्रकृति रूप से प्रदत्त क्षमता रहती हैं.

एक ज्योतिषी को ही नहीं ,सामान्य मानव को भी इन सामान्य प्रकृति प्रदत्त सूत्रों को समझने की आवश्कता रहती हैं ,पहले के ज्योतिष्यों में इन संकेतो को पढने की अपूर्व क्षमता रहती थी, आप देखेगे की उन्होंने ज्योतिषी बनने की भी शर्ते / योग्ताये बताए हैं, न की कोई कार्य नहीं मिला तो ज्योतिष बन गए, इतना छोटा और उपेक्षित नहीं हैं ये क्षेत्र. प्रकृति प्रदत्त इन संकेतों को शकुन भी कहते हैं. ये इतने प्रभाव शाली हैं की अनेको समय आप को किसी भी ज्योतिष की भी सलाह नहीं क\लेनी पड़ेगी. सदगुरुदेव जी हमेशा कहते हैं की " बाबा वाक्यम प्रमाणं " न माना जाये , प्राचीन बाते स्वीकारे पर, अपने विवेक के साथ ही , अपनी कसौटी पर उसे परखे भी .मैंने अनेकों बार देखा की बिल्ली के रास्ते काटने से भी कोई फर्क नहीं पढ़ा , कुछ भी समस्या सामने नहीं आई.

ancient wisdom but try it your own knowledge/wisdom with applying your brain. i have seen many time cat crosses my way, does not bring any bad effect or accident.

Prof krishmurti (well known astrologer and inventor of krishnamurti paddhti) also pointed out many places in his books about this science.

प्रोफ. कृष्णमूर्ति जी (प्रसिद्द ज्योतिष , एवं कृष्णमूर्ति पद्धति के जनक)ने अपनी किताबो में इस विज्ञानं के ओर इंगित किया हैं.

While going to start any important work or going to solve any astrological query about future or related to ant work, if electricity gone, surely that work or result will not be find as desired.

किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को प्रारंभ करते समय , यदि बिजली चली जाये, या किसी भविष्य सम्बंधित प्रश्न को करने जा रहे हैं यदि कार्य के लिए जा रहे हो तब भी , निश्चय ही मानिये , वह कार्य नहीं होगा. (या वह परिणाम न ही प्राप्त होगा|

Once he had been asked whom I would merry tell me about his complexion? , one boy bring a cup of tea for him just on that time, he replied the query mentioning the boys color and other related things without doing any astro calculation. That prediction proved very correct too.

एक बार उनसे पूछा गया की मेरा विवाह जिससे होगा उसका रूप रंग कैसा होगा |तभी एक चाय उन्हें देने के लिए एक बालक उनके पास आया | उन्होंने उस बालक के रंग रूप के हिसाब से बिना ज्योतिषी गणना के उत्तर दे दिया | जो पूर्णत सही निकला |

Once he had been asked about a woman (pregnant) ,whether she would have boy or girl child .suddenly he saw outside find that one woman carrying a

एक बार उनसे पूछा गया की किसी महिला को पुत्र या पुत्री होगी ? ठीक उसी समय उन्होंने बाहर देखा, पाया की एक महिला ,जो झोले में कुछ सामान ले जा रही थी , झोला फट गया और दो फल उसमे से बाहर निकल आये |उन्होंने ये देख कर ,जुड़वाँ

bag, and the bag torn and two fruits came out, on that bases he predicted that twins would come, and that also proved very correct.

बच्चे होने कि भविष्य बाणी की जो कि पूर्णतया सही निकली|

To understand these shakun you have to use your brain, knowledge too. while understanding their meaning one thing will be always keep in mind that they not tells us the meaning what we understand commonly ,if we have already some related conclusion in this regards in our mind.

पर इन शकुनो को समझने में आप को विवेक का भी बहुत इस्तेमाल करना पड़ेगा, साधारणतः इनका मतलब वह नहीं होता हैं जो आप सुनते आये हैं यदि इनसे सम्बंधित को धारणा आपके मन में पहले से ही हैं. |

I m just giving example of swapan science (from dream) to understand it..

हालाकि मैं एक उदाहरण स्वप्न विज्ञानं का दे रहा हूँ , पर इस तथ्य को समझने में सहायता करेगा कि इन्हें कैसे समझा जाये .

Whether boy child or girl child will be born in family, I tried to get the answer through astrological way, but one of mine relative, without any calculation, easily predict the things, if she saw in dreams a girl that means boy child will come, and vice versa too, and many times her prediction correct. Like that way we can use our intuition to understand the sign given by mother nature to understand their meaning.

किसी के यहाँ लड़का होगा या लड़की होगी , मैं ज्योतिष गणना से उत्तर जानने कि कोशिश करता था. पर मेरी एक परिचित बहुत आसानी से बता देते थे , यदि रात स्वप्न ,में उन्हें लड़की दिखी तो , जो प्रश्न पूछ रहा हैं उसके यहाँ लड़का होगा , और यदि लड़का दिखा तो , प्रश्न कर्ता के यहाँ लड़की , मैंने पाया उनके बाते अत्यधिक सही निकली| ठीक इसी तरह हम अपने स्वभाबिक ज्ञान को विकसित करे ,प्रकति प्रदत्त संकेतो को समझने में |

- While going to do any good work and see someone quarreling to others this

- पर ये शुभ कार्य में जाते समय किसी की लड़ाई होते हुए दिखे दे , तो उस कार्य में समस्या / विघ्न की सम्भावना बताता हैं, |

shows some trouble/obstruction in the work. • Like same way if you see , that some meeting very happily to others, is a sign of positive result. • If anyplace you herd the voice of giddh bird is sign of coming various troubles.	• किसी भी कार्य पर जाते समय यदि कोई प्रसन्नता पूर्वक मिलता दिखाई देता हैं तो ये शुभता का प्रतीक हैं। • किस स्थान पर गिद्ध का बोलना सुनाई दे तो बिपत्ति का सूचक हैं।
Is this so simple to understand that	क्या इतना ही आसान हैं|
Are you aware of the fact that if bad shakun happen on the left hand direction and shubh shakun happened on the right hand direction consider shubh or good.	पर आप क्या ये जानते हैं कि अशुभ शकुन बाये ओर हो और शुभ शकुन दाहिनी ओर हो तो लगभग शुभ माने जाते हैं।
For example take chhink, suppose it occurs while you are going to do any work, think that bad sign and wanted to stop the work	उदाहरण के लिए ,छींक को ही ले ,किसी भी कार्य के प्रारंभ में आई , आप अशुभ मान कर उस कार्य को रो क ने लगे|
• At the time of eating, marriage time, beginning time of study, the chink consider good. • Chink of child, old person, ill/sick person, or attempted knowingly does not carry any weight. • sneeze of cow consider	• भोजन करते समय ,बिबाह के समय ,विद्या आरंभ के समय , हुए छींक शुभ मानी जाती हैं • बालक ,वृद्ध, रोगी , और जान बूझ कर की गए , छींक महत्व हीन हैं। • गाय की छींक मरण प्रद मानी जाती हैं।

English	Hindi
death inflecting.	
How to remove the ills of bad shakun:	अशुभ शकुन दोष का परिहार कैसे करे -
Whenever you come into the contact or observe bad shakun, start the work after taking first 10 minute rest. But if the bad shakun repeats three time stop the work for the day.	जब भी कभी अशुभ शकुन दिखाई दे तो १० मिनिट रुकने के बाद कार्य प्रारंभ करे | यदि तीन बार अशुभ शकुन हो तो उस दिन कार्य को टाल देना चाहिए |
Poojan of lord shiva removes the ills of bad shakun.	अशुभ शकुन होने पर शिवार्चन करने पर दोष परिहार हो जाता हैं |
Poojya sadgurudevji describe in details about the bad or good shakun and also the chink and their result according to the direction in his book **MAHURAT JYOTISH**, iam not mentioninghere the list of somany good or bad Shakun , you have already read manytimes .so come forward and learn this science, to understand the gift of mother nature.	पूज्य पाद सदगुरुदेव जी ने ,"महूर्त ज्योतिष " में दिशा के अनुसार छीकों का परिणाम ,साथ ही साथ अनेको शुकन (शुभ /अशुभ) के बारे में विस्तार से समझाया हैं | तो आप आप आगे बढ़ कर इस विज्ञानं को आत्मसात करे , और प्रकृति के इस देन को समझे |

Always think positive even the circumstances totally adverse to you,nothing stay the same than how can bad sitution always stand infront of you.

हमेशा आशा वादी रहो चाहे वर्तमान परिस्थितिया कितनी भी विपरीत न हो , जब कुछ भी स्थायी नहीं हैं तब विपरीतता कब तक आपके सामने रहेगी .

Mantra Yog se Kaal Gyan

मंत्र योग से काल ज्ञान

Our ancient sages were real scholars of the science whose basic aim was to make invention through which the mankind can attain total happiness or the magnifying joy termed as "Anand" in the scriptures. Mean while they developed particular systems for the path of spirituality which lay the option of comfortable selection according to one's nature.

In this regard's total 108 system were been designed like Mantra, Tantra, Yoga, Dhayana, Darshana, Yagna, Paarad, Sury Siddhant etc. these were the particular branches leading to the same goal with different ways. As one is independent with differentiation of thoughts and way of conduct to live the life, they can select particular path in which they do attend a spiritual goal with best of the comfort.

हमारे प्राचीन ऋषियो ने सही अर्थो में विज्ञानं का अभ्यास किया था जिनका मूल उद्देश्य मनुष्य जाति के लिए इसे अविष्कार करना था जिससे वे उन खुशियों को प्राप्त कर सके जिसे हमारे शास्त्रों में आनंद कहा गया हैं . इसी दौरान उन्होंने आध्यात्मिकता के पथ पर कई इसी क्रिया पद्धतिओ की रचना की जिससे हर एक अपनी मानसिकता के अनुरूप पथ को चुन सके.

इसी राह में १०८ पद्धतिओ की रचना हुई जैसे मंत्र, तंत्र, योग, ध्यान, दर्शन, यज्ञ, पारद, सूर्य विज्ञानं,...ये सब अलगअलग खास पद्धतिया थी जिनका उद्देश्य एक ही था. जरुरी हैं की मनुष्य अपने जीवन में एक ऐसा रास्ता चुने जोकि उसे अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करे क्यूँ की हर एक मानव एक अलग विचार पद्धति एवं जीवन जीने का के लिए स्वतंत्र हैं .

But when the time passed, more research had been carried out by our Maharishis. They made a core balance between these systems and started innovating best possible systems, which can give quick and best results. Meanwhile they started combining various methods with each other and it gave a birth to very new and effective systems.

For example Sury Vigyan was complete science of atoms. When it was applied a bled with tantra it became easier. And a new way was found in which the lens used for Sury Vigyan was not required and the atoms of matters could be change with medium of eyes only, it became sury vigyan tantra. The same goes for Paarad Tantra, when paarad vigyan was combined with various tantrik processes, it became easier to handle paarad and take benefit of it.

In all Indian spiritual system, the most famous systems to everyone had remained Mantra and Yoga, though both are very different from each other. Mantra is science of Sounds only. Our ear can hear sounds up to some decibels, but sound is everywhere rather we can hear it or not, and sound do prepare a particular energy vibration. This

मगर समय चलते हमारे महर्षियोंने ज्यादा खोज की, उन्होंने पद्दतियो के मध्य स्थिरता स्थापित की और सबसे सहज पद्धतिओ के लिए खोज की, जिसमे जल्द और बेहतर परिणाम प्राप्त करे. इस दौरान , उन्होंने क्रिया पद्धतिओ को एक दुसरे के साथ मिलाना शुरू किया जिससे और नयी पद्धतिया सामने आई.

जैसे की सूर्य विज्ञानं पूर्ण रूप से अणु आधारित विज्ञानं हैं , जब उसे तंत्र के साथ सम्मिलित किया गया तो वो और सहज हो गया. और एक नया रास्ता मिला जिसमे सूर्य विज्ञानं लेंस की आवश्यकता न होके मात्र नेत्रों के माध्यम से पदार्थ परिवर्तन संभव था, इसी क्रिया को सूर्य विज्ञानं तंत्र कहा गया. यही तथ्य पारद तंत्र के ऊपर भी लागु होता हैं . जब पारद विज्ञानं का समन्वय तंत्र की विभिन्न क्रियाओ के साथ किया गया, तब पारद से लाभ प्राप्त करना और भी आसान हो गया.

भारतीय आध्यात्मिक प्रणालियों में सबसे ज्यादा प्रसिद्द प्रणाली मंत्र एवं योग रही हैं , वैसे तो दोनों एक दुसरे से बिलकुल अलग हैं . मंत्र सिर्फ ध्वनी का विज्ञानं हैं . हमारे कान सिर्फ कुछ एकं निश्चित आवर्ती तक ही ध्वनि सुन सकते हे, लेकिन ध्वनि तो हर जगह होती ही हैं . चाहे हम सुन सके या नहीं, ध्वनि से एक विशेष उर्जा का निर्माण होता ही हैं . इस तरह विशेष ध्वनि विशेष उर्जा का निर्माण करती हैं और जब अलग अलग ध्वनियो का निर्माण एक साथ किया जाता हैं वे एक साथ एक अलग ही उर्जा को जन्म देती हे. यही मंत्र विज्ञानं का सही

way, particular sound prepares a particular energy and combining various sounds it gives a set of specific energy. This is the actual concept of Mantra Vigyan. On the other side, Yoga deals with spiritual attainment with the help of body. In Yoga system body is counted as medium only. With particular exercise they generate energy in the body with leads a soul to the spiritual way. Well, in yoga even we have various types.

संकल्पना हे. दूसरी तरफ योग में आध्यात्मिक अनुभूतियो के लिए शरीर का सहारा लिया जाता हैं . योग पद्धति में शरीर को माध्यम मात्र ही गिना जाता हैं . विशेष प्रकार के व्यायाम से आत्मा को एक विशेष उर्जा के द्वारा आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढाया जाता हैं , अलबत्ता योग में भी विविध प्रकार हैं .

When this both science were combined for to invent a new system, it became Mantra Yoga. In this system, energy of the sound generated through specific chanting was combined with various yoga techniques. This made various accomplishments easy to achieve. Again they went deep and started researching more.

जब इन दोनों प्रणालियों को , एक विशेष प्रणाली खोजने के लिए एक साथ जोड़ा गया, तब वह मंत्र योग बना. इस प्रणाली में मंत्र जाप से निर्मित ध्वनि को , योग की विशेष तकनीक से जोड़ा गया. इससे कई सिद्धिया प्राप्त करना आसान हो गया. और इसमे भी आगे शोध कार्य हुआ. इसी दौरान ये तथ्य सामने आया कि कुछ विशेष तरीको से निर्मित ध्वनि की उर्जा, कुण्डलिनी में कोई विशेष चक्र को स्पंदित करती हैं . काल ज्ञान के विषय में, अनाहत चक्र जोकि ह्रदय पटल के पास स्थित हैं वही काल ज्ञान को समेटे हुए हैं . और उन्होंने खोज की काल ज्ञान के लिए उपयुक्त क्रिया की.

This way, they found that with some methods a vibration could be generated to activate particular chakra of Kundalini. In regards of kaal gyan, it is found that Anahat Chakra situated to side of Heart is the main holder of Kaal. And they innovated special method for Kaal Gyan.

इस प्रकार की पद्धतिया हमेशा ही गोपनीय रखी गयी, क्यूंकि इस प्रकार की प्रणाली को अभ्यास में लेने के लिए गुरु की तरफ से शिष्यों को ये शर्त हुआ करती थी कि वो मूल दो प्रणालियों पूर्ण हो. जैसे की यहाँ

Such exercises and Processes had always remained secret; because, to go through with such process, there was a condition for the disciples to master in both the sciences. Like in this case Mantra and Yoga. Or else if Guru is very pleased with disciple he will provide such process. Such processes are very easy in nature to perform and can be added into day to day life. Or else there are very less boundaries. It makes it very easy for householders. I have seen many yogis to give such process at very last time of their life to the chief disciples or to particular people which had been in very touch of them. One of such process I am sharing with you all.

....

One should practice Poorak, Khumbhak and rechak of Yoga for some days. Simply to breath-in, Hold and Breath-out, but one should do it as long as they can and with no force at all. In some days it became very natural to do this.

After that one should follow the particular practice.

When Doing poorak Chant beej Mantra "Hreem".
At the time of Khumbhak chant " Hraam"

मन्त्र एवं योग. या तो गुरु शिष्य से अत्यंत खुश हैं तो ही वो इस प्रकट की प्रक्रिया दे देते थे. इस प्रकार की प्रक्रियाए बहुत आसान होती हे और रोजबरोज के जीवन में की जा सकती हैं . या फिर इसमें इसमे ज्यादा बाध्यता नहीं हैं . इस लिए ये गृहस्थो के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं . मेरे देखने में आया हे कि ऐसी पद्धतिया गुरु अपने जीवन के आखरी क्षणों में अपने मुख्य शिष्य को देते रहे हैं या फिर कुछ इसे इंसानों को जो की उनके ज्यादा नजदीक रहे हो. में आप लोगो के सामने एक इसी ही प्रक्रिया रख रहा हूँ .

....

कुछ दिनों तक पूरक कुम्भक रेचक का अभ्यास करे. मतलब की सांस अन्दर खींचना अन्दर रोकना और फिर बाहर निकलना. जितना हो सके उतना लम्बी प्रक्रिया हो मगर कोई बलपूर्वक प्रयास नहीं. कुछ दिनों में ये क्रिया प्राकृतिक हो जाएगी.

इसके बाद नीचे दी गयी क्रिया का अभ्यास प्रारंभ करना चाहिए

पूरक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रीं " का उच्चारण करे .
कुम्भक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रां " का उच्चारण करे .
रेचक करते वक्त बीज मंत्र " ह्रूं " का उच्चारण करे .

कुछ दिनों तक मन ही मन जाप होना चाहिए. फिर

At the time of Rechak chant " Hroom" In practice first you can chant in Mind, then practicing it for some days, you chant it with mouth. The eyes should be closed and concentration should be at anahat chakra with in. slowly you will start watching various scenes which previously you have not seen. Practicing it make you catch any moment of any tense and you will be able to see anything you desire when Anahat chakra becomes activated.	अभ्यास हो जाने के बाद उच्चारण भी हो ,अभ्यास से यह सहज संभव हो जाएगा. आँखे बंद होनी चाहिए और अनाहत चक्र पर ध्यान करे. कुछ समय बाद आपको कई द्रश्य दिखने लगेंगे जो की आपने पहले कभी नहीं देखे होंगे. इसी का अभ्यास आगे करते रहने अनाहत चक्र जाग्रत होने से आप काल खंड के किसी भी क्षण को पकड़ के देख सकते हैं .

सदगुरुदेव भगवान् ने हमें जैसा निर्देश दिया हैं हम वैसा ही करे , न किसी भी अन्य सन्दर्भ में कहे उनके वाक्यों को अपनी सुविधानुसार परिभाषित करें. गुरु क्या करते हैं उस पर नहीं, बल्कि हम क्या उनके अनुसार कार्य कर रहे हैं ? उस पर ध्यान दे.

what sadgurudev bhagvaan told us ,we have to do that way .we should not define his words,spoken in other context ,use them suits to our desire/selffishness . instead of what guru does, we have to care what we are doing.

Panchanguli - Sadhana

पंचान्गुली साधना

(भविष्य दर्शन की सरल अद्भुत साधना)

Panch aungli or five finger without that life hardship can not be imagined . is it any special deity who rules on that . you want to be a good astrologer, or palmist, and worry how far your prediction will be true, is any sure way, by which name and fame can be achieved, all the questions answer lies on a single answer –Panchanguli sadhana.

पांच उंगली या पंचागुली इनके बिना जीवन की कठिनाइयों को बताया नहीं जा सकता|क्या कोई विशेष देवी हैं जो इन की आधिष्ठार्थी हैं ,इसी तरह कुछ प्रश्न पूछे जा सकते हैं कि कैसे अच्छा ज्योतिषी या हस्तारेखाविद बना जा सकता हैं ,आप चिंतित हैं कि कितने आपकी भविष्यवाणी सत्य होंगी . क्या कोई ऐसा तरीका हैं जिससे यश ,नाम भी प्राप्त हो सके | इन सारे प्रश्नों का एक ही उत्तर हैं पंचागुली साधना |

Next question is why we need to do that ,when so many astrological books and institution available today, and people are running from one astrologer to other. but could not get the proper advice, when all the astrologer's prediction is based on this or that books, why some time their prediction fails. All the answer depend upon. The lack of spiritual power.

अगला प्रश्न ये उठता हैं कि हमें इसकी आवश्यकता क्यों हैं ,जबकि आज इतने संस्थान और ज्योतिष पर किताबे उपलब्ध हैं |.और लोग एक ज्योतिषी से दूसरे के पास भागते फिर रहे हैं |सही परामर्श प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं जबकि सारे परामर्श किसी न किसी किताब पर अधिकांशतः आधारित होते हैं ही , फिर क्यों भविष्य वाणी गलत हो जाती हैं |

If any one who studied astrology could easily amazed that our ancient astrologer known as "jyotirvid". They asked for many qualities to be

यदि कोई भी जिसने ज्योतिष का अध्ययन किया होगा तो वह निश्चय कि आश्चर्य चकित हो जाता हैं कि प्राचीन काल में ज्योतिषियों को ज्योतिर्विद कहा जाता था |और उनसे बहुत सारे गुणों/नियमो को

present/followed by a astrologer, but in modern times, very few, can maintain that label or try to follow that .reason may be any .

There are many kundli(horoscope) charka about 16 in a horoscope , how many astrologer able to read pred. according to following all 16 chart ,that, if all the 16 chakra are not having any omportance than why they are made, most of the astrologer follows lagna chakra and moon chakra kundali chart , and some also has a ability to read navmaansh chakra.

There are many sadhana Sadgurudev ji mentioned in the mantra Tantra Vigyan magz.like **karna pishachini**(do not get afraid by name , and do not just go by name, this has a varga , and this sadhana can be completed by rajsic manner too), **madalsa sadhana**, **karna matangi sadhana**, **chaaya purush sadhana** and so many more. Sadgurudev ji also mentioned described Panchaguli sadhana many times and he has written one book names "HASTA REKHA VIGYAN AUR PANCHANGULI SADHANA" still available.

In the very young age, very interested in palmistry, always reading book of only poojya

मानने या पालन करने के लिए कहा जाता था/या अपेक्षा होती थी , कारण चाहे जो भी हो ,आज के इस आधुनिक समय में बहुत कि कम लोग उनको मान या पालन कर सकते हैं, |

कुंडली में १६ प्रकार के चक्र होते हैं, आज कितने ज्योतिषी हैं जो इन सब का बारीकी से अध्ययन करके परिणाम दे सके ,यदि इन चक्रों कि उपयोगिता नहीं होती तो ये क्यों बनाये जाते|अधिकांशतः ज्योतिषी जन्म चक्र और चन्द्र चक्र और कुछ विशेष ही नवांश चक्र को समझने कि योग्यता रखते हैं |

सदगुरुदेव जी ने अनेकों प्रकार की साधनाये इस सन्दर्भ में , मंत्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं पत्रिका में दी , जैसे कर्ण पिशाचिनी साधना (नाम से भय न करे ,क्योंकि इस नाम का एक वर्ग हैं और इसकी राजसिक रूप से भी साधना संपन्न होती हैं) |मदालसा साधना ,कर्ण मातंगी साधना छाया पुरुष साधना इसके अलावा कई ओर भी साधना हैं |सदगुरुदेव जी ने कई बार इस पंचागुली साधना के बारे में बताया हैं |और उनके द्वारा लिखित एक किताब हस्त रेखा विज्ञानं और पंचान्गुली साधना अभी भी प्राप्य हैं |

बहुत कि कम उम्र से ही मुझे हस्तरेखा विज्ञानं में रूचि थी ओर मैंने सदगुरुदेव जी कि ही किताबे पढ़ी (कारण मैं भी नहीं जानता था) तो यह बहुत ही प्राकर्तिक था कि मुझे इस साधना में रूचि हो ,ओर

Sadgurudev ji (reason I know not).so its natural that I also quite interested in this sadhana, I have got a PANCHANGULI YANTRA from jodhpur gurudham and start chanting the mantra 21 times daily (wearing while colored dhoti) and nothing more ritual is needed, MENTIONED IN MATRA TANTRA VIGYAN MAGZ. in a month or 2 /3 month you would get result. I was not hoping that I could get result so early ,so I included it, in my daily pooja . days passing by so monthA, I could not get any divine exp at all.

My prediction ability was very good. later I started learning how to read horoscope and started predicting (off course my initial and only client were my friends ,their family and mine relative) here also mine predicting ability shine again. I was able to predict even without asking any details /horoscope chart.

As it should not happened , but happened when I could not any so called divine exp. I carelessly stopped the mantra. years later , again I started reading /revisiting the horoscope science, now I found it, to much difficult and very conflicting theory, every one claiming that they view are right, on application of theory in practical ,if one case that

मैंने जोधपुर गुरुधाम से यह पंचागुली यन्त्र प्राप्त कर प्रति दिन २१ बार इस मंत्र का जप किया करता था | कोई भी अन्य नियम कि आवश्यकता नहीं थी|पत्रिका में दिया था कि २/३ महीने में परिणाम कि प्राप्ति होगी |मैं इतने कम समय में परिणाम प्राप्ति कि कल्पना नहीं कर रहा था ,इसलिए इस प्रक्रिया को मैंने अपने दैनिक पूजा में ही शामिल कर लिया था|दिन गुजरते गए उसी तरह महीने भी |मुझे किसी भी प्रकार का दिव्य अनुभव नहीं हुआ |

मेरी भविष्य वाणी करने कि क्षमता बहुत ही अच्छी थी ,मैंने ज्योतिष सीखना भी प्रारंभ करदिया था और उस के माध्यम से भविष्यवाणी करना भी ,(निश्चय ही मेरे प्रारंभिक सलाह लेनेवाले लोग मेरे परिवार के मित्रों के परिवार के ही लोग होते थे)मेरी भविष्यवाणी करने कि क्षमता बढती जा रही थी ,मै उस समय कुंडली के बिना भी भविष्यवाणी कर सकता था |

परन्तु जो होना नहीं चाहिए था वह किया , कि मैंने इतने समय तक जब कोई दिव्य अनुभव नहीं हुआ तो इस साधना को असावधानी पूर्वक बंद कर दिया| कुछ वर्षो बाद मैंने पुनः ज्योतिष को सीखना, विस्तार से प्रारंभ किया ,अब मैंने पाया कि यह ज्योतिष शाश्त्र तो बेहद कठिन बल्कि आपस में विरोधाभाष लिये हुए था |यहाँ हर कोई अपनी बात/तथ्यों को ही सत्य बता रहा हैं |जब इनको प्रायोगिक रूप में परखे तो पाते कि किसीएक केस में तो सही साबित हुए पर दूसरे केसों में नहीं हो

right ,than fails in others cases.

I go through, many great giants books specially Late DR.BV RAMAN books, in that he also emphasized the need to have divine power,(and mentioned one such exp of him.)in his book "my exp in astrology."

Now, I puzzled, why I mine prediction were accurate even when I knew very little in this oceanic field ,and failed miserably, not able to get successful pred. now even when I knew something.

It was the power of GODESS PANCHANGULI MANTRA SADHANA, I was expecting only miracle, did not understand until a stage sadhak reached, divine forces worked silently.The complete sadhana details mentioned in Sadgurudev ji 's book and many exp of sadhak and sadhikas are also in the book. Who do not have much time to go for that , surely go for this simple procedure.If any one can, get panchanguli diksha and sphotikaran kirya from Sadgurudev ji at jodhpur, then result will be remarkable, name and fame both can be easily gain, and success in the palmistry/horoscope field is sure. You can get this mantra from jodhpur office or siddhhram.org site or Sadgurudev ji book hast rekha vigyan and panchanguli sadhana.(this 5/6 line large

पाए|

मैंने बहुत ही आधुनिक उच्च ज्योतिषियों जिनमे डॉ *B V RAMAN* भी हैं उनकी किताबो को पढ़ा |,उन्होंने भी गहरी अंतर क्षमता या दिव्य क्षमता के बारे में स्वीकार किया(उन्होंने इस संदर्भ में अपना एक अनुभव भी दिया ,) जो कि "MY EXPERIENCE IN ASTROLOGY" नाम कि किताब में वर्णित हैं |

अब मैं बेहद अनिर्णय कि अवस्था में था की क्यों ,जबकि मेरा ज्ञान बहुत ही कम था ,लगभग नगण्य जैसा ,तब तो मेरे परिणाम बिलकुल सही साबित होते थे, ओर जब आज देखता हूँ तो क्यों गलत हो जाते हैं |जबकि अब तो कुछ जानता भी हूँ| बास्तव में पहले पंचागुली साधना का ही परिणाम था , मैं केबल चमत्कार ही अपेक्षा कर रहा था ,नहीं समझ पाया इस बात को कि जब तक साधक का स्तर एक अपेक्षित स्तर तक नहीं आ जाता तब तक ये दिव्य शक्तियां चुप चाप ,छुपे रूप या प्रछन्न रूप में ही काम करती हैं|बहुत सारे अनुभव साधक ओर साधिकाओ के , सदगुरुदेव जी की इस किताब में दिए हुए हैं पूर्ण साधना विधान भी दिया हैं ओर जिन्हें उतना समय न हो वे इस सरल प्रक्रिया को कर सकते हैं . यदि कोई साधक या साधिका पूज्य सदगुरुदेव जी से जोधपुर जाकर पंचागुली साधना दीक्षा ओर स्फोटीकरण क्रिया भी प्राप्त कर ले ,तब निश्चय भी परिणाम आश्चर्य चकित प्राप्त होंगे साथ ही साथ नाम ओर यश की भी प्राप्ति संभव हैं |आप इस बृहद पंचान्गुली मंत्र को (५/६ लाइन के इस मंत्र को स्थानाभाव के कारण नहीं दे रहा हूँ) सदगुरुदेव जी की कृति " हस्त रेखा विज्ञानं और पंचान्गुली साधना " में से या मन्त्र तंत्र यन्त्र विज्ञानं पत्रिका या जोधपुर कार्यालय से पंचान्गुली यन्त्र प्राप्त करते समय या www .siddhrshram .org साईट में से भी देख /प्राप्त कर

mantra , due to increase in size ,not mentioning here,) chanted/recited 21 times daily, after taking bath and wearing a while colored dhoti.	सकते हैं , जिसका मात्र २१ बार जप सफेद धोती धारण कर नहा कर करके प्रतिदिन किया जा सकता हैं ओर व्यक्ति कि श्रद्धा भावना के अनुसार परिणाम प्राप्त होते ही हैं	

श्री माँ शारदा के जीवन का एक गुरुत्व युक्त , ममतामय घटना क्रम

Due to misforchune /bad luck one shishy was leaving sangh , onthe time of his leaving shree maa sharda weeping .seeingthis the shishy also weep. after some time mother ,clear her tears with the aanchal and ask him to wash his face and very blessfully ask him "do not forget me, though i know that you will not forget me ,but still i am asking to you " shishy also asked mother " will you forget me?.

shree maa replied " how can a mother forget his child , always remember that i am with you , not to fear " and she was standing onthe door till that shish reach out of her material vision.

(moral of the great incident that how can sadgurudev forget us, it is us who always think on seeing this or that , he forget us ..but he never ..)

दुर्भाग्य से एक शिष्य ,संघ छोड़ कर जा रहा था .उसके जाने के समय श्री माँ शारदा स्वयं भी रोने लगी साथ ही साथ वह शिष्य भी रोने लगा कुछ देर बाद आचल से मुह पूछ कर उसे भी मुह धोने कर आने के लिए कहा .फिर स्नेह पूर्वक कहा " मुझे न भूलना , मैं जानती हूँ कि तुम भूलोगे नहीं पर फिर भी कह रही हूँ " .शिष्य ने पूछा "और आप तो नहीं भूलोगी .." श्री माँ ने कहा " क्या माँ कभी बच्चे को भूल सकती हैं ?जानना कि मैं हर घडी तुम्हारे साथ ही हूँ कोई डर नहीं " शिष्य को जाते देख कर वे तब तक खड़ी रही जब तक कि वह आँखों से ओझल नहीं हो गया .(इस घटना से यही पता चलता हैं कि सदगुरुदेव कभी भी अपने शिष्यों को कैसे भूल सकते हैं , हाँ ये जरुर हैं कि हम ही कभी इसे या उसे देख कर कह उठते हैं ही वे हमें भूल गए , जबकि ऐसा तो कभी संभव ही नहीं हैं .)

Sammohan se Kaal Gyan

(काल ज्ञान की अद्भुत सरल प्रक्रिया - सम्मोहन विज्ञानं)

Sammohan or hypnotism is the word nowadays every body nows, this is also a complete branch of our ancient culture . though it may possible that in modern era this branches can be highly practiced in western world and in our country it is once again gaining ground. now a day not only medical field but in military /war zone , solving personal problem , to make employee more obedient to become popular means almost every field this is being used. Now you all are well informed that through hypnotism a person can be easily taken back to his past .and the cause of various illness known and unknown can be easily know and also	सम्मोहन या हिप्नोटिज्म आज का एकजानाप हचाना शब्द हैं, हर कोई इससे परिचित हैं ही ,क्या आप जानते हैं कि ये भी हमारे प्राचीन शास्त्रों के मध्य में उपलब्ध ज्ञान की एक अद्भुत शाखा हैं जिसे आजक ल पाश्चात्य जगत मेंज्यादा उपयोग किया जाता हैं अब हमारे देश में भी इसका प्रच लन धीरे धीरे बढ़ रहा हैंन केबल चिकित्सा क्षेत्र बल्कि सेना में भी व्यतिगत समस्या को सुलझाने में ,कर्मचारियों को और अधिक अनुकूल बनाने में इसका अधिक प्रयोग किया जा रहाहैं अब आपजानते हैं कि इसके माध्यम से आप किसी भी व्यक्ति को उनके भूतकाल में आसानी से ले जा सकते हैंऔर बिभि न्न रोगों (ज्ञात या अज्ञात)के कारण को जान सकतेहैंऔर यह विज्ञानं आपके ब हुत सारी मानसिक ,काल्पनिक रोगों के उ पचार को भी आपके सामने रखता हैं . परन्तु यहाँ विषय हैं **क्या इसके माध्यम से काल ज्ञान संभव हो सकता हैं**

this science very helpful to provide remedy of various mental illness . but here our topic is on the kaal gyan . how authentic is to bring back to past . naturally you can check up with the person and check the event date and time and confirm the event . if theses all proved very correct than same thing can be easily tried for past lives where the same acid test applied , since mind is very powerful medium and he can play with us through such a way we can not understand the things and its play. If the event provided or narrated by person through in hypnotic sleep condition proved to write. Than only authenticity of the person can be well understand .

? , क्यों नहीं , ज्ञान कि हर शाखा अपने आप में पूर्ण होती हैं आवश्यकता इसमें उसके प्रामाणिक ज्ञान और उसमें सिद्ध हस्त व्यक्तियों कि ही हैं. क्या यह विज्ञानं इतना प्रामाणिक हैं किसी भी व्यक्ति का भूतकाल में जाना जा सकता हैं ? तो इसका यही उतर हैं कि,व्यक्ति द्वारा बताये गए घटनाओं को दिन औरसमय द्वारा /या वहां जा कर खुद निश्चय कर सकते हैं यदि वे बताई गए सारे तथ्य और जानकारी सही उतरती हैं तो यह विज्ञानंसहीहैंतब आप पिछले जीवन के बारे मेंभी यही प्रक्रिया पालन करें , सिर्फ " बाबा बाक्य प्रमाणं " न माने .क्योंकि ये मन , वह बहुत ही शक्तिशाली माध्यम हैंवह कब हमारे साथ ही खेल करने लगे ये बताना पानां बहुतही कठिन हैंअब जब सभी घटनाये सही निकले तब आप मान सकते हैं कि जो बताया गया था वह सत्य कि कसौटी पर खरा निकलातभी व्यक्ति/ओरइस विज्ञानंकि प्रमाणिकता सिद्ध हो सकेगी .

But kaal is the unbroken unending link , past present and future is just the name given by us , he knew nothing. Sadgurudev ji clearly mentioned that until outer mind and inner mind can be unite together till than any concrete gain is not possible.

ये काल ज्ञान या काल तो एक अंतहीन श्रंखला हैं जिसका कोई ओर छोर नहीं हैं इसे भूत काल वर्तमान काल , भविष्य काल के तीन भागों में तो हमने बाटा हैं इसे कौन बिभाजित कर सका हैं? .सदगुरुदेव जी नेकहा था कि जब तक बाह्य मन और आतंरिक मन एक नही होंगे तब तक इस विज्ञानं में भविष्य सम्बंधित कोई ठोस उपलब्धियां प्राप्त नहीं हो सकती हैं .

But the question is how that can be possible, shakti chakra is the first

पर अब भी प्रश्न ये सामने हैं

answer, if person try to have Tratak on that at least 32 minutes with taking every possible precaution mentioned in Sadgurudev ji book PRACTICAL HYPNOTISM and quality of Tratak is maintained . than he is able to have vision either past or present future. And than he can move forward for next step, Tratak on the mirror on yourself image also proved to be very helpful. Same way Sadgurudev motioned some step like moon Tratak , agni Tratak, and finally sun Tratak . sun Tratak can be very harmful until practiced very competent and expert but its result can be very encouraging . off course some very important mantra if practiced along with the Tratak various step than what can not be achieved .

कि कैसे इसे प्राप्त किया जाये , पहला उत्तर तो शक्ति चक्र हैं , इसके माध्यम से ये संभव हैं .यदि कोई व्यक्ति इसके ऊपर 32 मिनिट का त्राटक जैसा कि सदगुरुदेव जी ने अपनी किताब "प्रक्टिकल हिप्नोटिज्म " में दिया हैं उसके पालन करते हुए करे और इस त्राटक कि गुणवत्ता बनायीं बनाये जा सके तो भूत काल या भविष्य काल को जानना कोई कठिन नहीं हैं इसके बाद व्यक्ति दर्पण त्राटक को कर सकते हैं जिसमें आप अपने प्रतिबिम्ब के ऊपर भी त्राटक को करेंगे .यहाँ पर भी 32 मिनिट की लिमिट कम से कम करनी ही होगी .ये बहुत ही उत्साहवर्धक रहा हैं सदगुरुदेव जी ने इसके आगे चन्द्र त्राटक तारा त्राटक अग्नि त्राटक और फिर सूर्य त्राटक के बारे में विस्तार से लिखा हैं . सूर्य त्राटक बहुत नुकसान दायक हो सकता हैं यदि इसे किसी अच्छे जानकार या एक्सपर्ट कि सलाह बिना न किया जा रहा हो ,इस तथ्य का ध्यान रखे .पर सफलता पूर्वक करने पर इसके परिणाम बेहद उत्साहवर्धक रहे हैं. यदि इन प्रक्रिया के साथहीसाथ कुछ विशिस्ट मन्त्रों का

why mantra jap is essential think for a minute have you not seen various photo of sun namskar in that various mantra also mentioned who has time to follow the same way here also some mantra jap is essential for that your Gurudev can be best guide. Use the mantra and various Diksha are related to this field if taken with Sadgurudev ji bless, your success in the path is sure only your little effort is needed.

जप भी किया जाये तो सफलता मानो हाथ बंधे ही खड़ी रहती हैं . पर इसकी क्या आवश्यकता हैं ?आपने सूर्य नमस्कार के चित्र तो देखें ही होंगे

Slowly and slowly person knew that how can he focus on the future of not only his but anybody else. hypnotism purify you, all your so called bad thought can be easily eliminated and once your inner mind becomes still (free from all the disturbances) so once mind is calm than any image of past and future can be easily seen. That is not single day show you have to work very seriously and very discliepine your life only than the fruits of hypnotism can be achieved.

while practiced some of the precaution/ essential must be practiced ,

1. You should not wear very tight clothes ,
2. place will be neat and clean , and
3. open air fresh and natural will be available ,
4. your eye sight should be perfectly normal and if having any problem than plz do not practice this , this could be very harmful to eye.
5. Place will be naturally lighted .
6. if possible your stomach should

जिसमें अनेक मंत्र भी बताये गए हैं अब किसे टाइम हैं उन्हें करने का , तो यदि इन प्रक्रिया को गुरुदेव से निर्देशन प्राप्त करके करे तथा साथ ही साथ दीक्षा जो भी वे निर्देशित करे उसे ले कर इस विज्ञानं में पारंगतता की कोशिश करे तो सफलता तो मानो वरमाला लिए ही कड़ी होगी बस आपके थोड़े से प्रयास कि ही अब जरुरत हैं . धीरे धीरे व्यक्ति ये स्वयं जान जाता हैं की उसे कैसे भविष्य के किस भाग पर अपना मन या ध्यान केन्द्रित करना हैं जिससे न केबल वह अपना बल्कि किसी का भी भविष्य जान सकता हैं . सम्मोहन आपको भी शुद्धता प्रदान कर देता हैं कर आपके तथाकथित बुरे विचारों को भी दूर कर देता हैं और जब आपका अंतर मन शांतहो जायेगा (सभी प्रकार के विक्षोभो से हटकर पूर्ण शांत)तब किसी के भी मन का प्रतिबिम्ब या भविष्य का भी प्रतिबिम्ब बन जाना स्वाभाविक ही हैं

पर ये सब कोई एक दिन का चमत्कार नहीं हैं आपको अधिक गंभीरता से प्रयत्न करने पड़ेंगे ओर अपने जीवन को ज्यादा अनुशाषित करना पड़ेगा तब ही आप इस ज्ञान का प्रतिफल पा पाएंगे जब आप ये प्रक्रिया प्रारंभ करे तब ये सावधानी /

be empty,

7. Morning time should be for practicing the Tratak is good. And

8. Very importantly the practice can be start with little time and slowly the time duration should be increased.

9. Informed your family member that you should not be disturbed suddenly or any heavy noise has to be created that could be very harmful And

10. Finally shavasan at the end of practice will be the best.

Final level Tratak like Agni and sun can only be taken in hand when your Gurudev allowed for that , it is notthe things that until you reached that level only than uou can be success even in first or second leval (means shakti chakra and mirrir Tratak , if quality is best than uour goal is reached no need

आवश्यक बाते ध्यान में रखें .

1. आपने अधिक कसे हुए वस्त्र धारण नहीं किये हुए हो ,
2. वह स्थान साफ ओर स्वक्छ हो .
3. प्राकर्तिक और ताजा हवा वहां उपलब्ध हो .
4. आपको नेत्रों मैं किसी भी प्रकार का कोई रोग नहो अन्यथा आपको ये प्रक्रिया जय नुक्सान दे सकती हैं.
5. प्राकर्तिक प्रकाश की व्यवस्था हो . न ज्यादा तेज़ न कम .
6. आप का पेट खालीहो तो अच्छा हैं
7. प्रातः काल के समय इसका अभ्यास ज्यादा अच्छा होता हैं .
8. प्रारंभ में कमसमयके लिए अभ्यास करे फिर धीरे धीरे इसका समय बढ़ाये .
9. अपने परिवार के व्यक्तियों को पहले सेहीसूचना दे दे ,जिससे की अचानक कोई तेज आवाज आदि व्यवधान न आये ये नुक्सान दायक हो सकते हैं .
10. अंत में शवासन का अभ्यास जरुर ही करे .

अंत स्तर के अग्नि ओर सूर्य त्राटक तभी हाथ में ले जब गुरुदेव ने इसके लिए आपको अनुमति दे दी हो . ये आवश्यक नहीं हैं की यदि आपइसस्तर तक नहीं आ पाए हैंतो उपलब्धिया न मिलेंगी,

to go for further step , I personally meet a sadhak who only practiced til second level and he was successfully able to bear the very fruits of that level) In my view pleas once carefully study the Sadgurudev ji book and take guidance from Gurudev Trimurti at jodhpur and than success will be yours…..	में एक ऐसे साधक से मिला था जो मात्र शक्ति चक्र और दर्पण त्राटक के माध्यम से ही सफलता प्राप्त कर चुके थे मेरे अनुसार तो आपको पहले सदगुरुदेव जी की किताब इस हेतु अच्छी तरह से पढना चाहिए फिर गुरुदेव जी से जोधपुर में उचित मार्गदर्शन प्रा कर के आगे बढे , सफलता आपके सामने हो गी

When mahatma vijay krishndev was young and went to a saint for asking some direction and told him that though he was studying and giving pravchan on brahma and shastra , but still why his mental peace was not gained , how could he achieve that. On asking by the saint he replied that he still not had any guru nor he had any faith on guru vaad . the saint replied with smile that was the reason , what would happen/achieve even if he not believe in guru? even he(mahatma vijay khishan dev ji) well versed in shashtra than why spoke that way .avatar like ram and krishan too had guru .you people have made so good home but forget to made foundation. (later a very high accomplished yogi gave diksha to vijay krishan dev ji and later shri vijay krishan dev ji became a highly accomplished yogi and guru.)

जब महात्मा विजय कृष्ण देव युवावस्था में थे तो वे किसी अन्य संत से मार्ग दर्शन के लिए गए और उन्हें अपनी अवस्था के बारे में बताया था कि ब्रह्म ज्ञान ओर शास्त्रों कि आलोचना तो मैं बहुत करता हूँ पर मेरे मन में क्यों नहीं शांति हो पा रही हैं किस तरह से मैं ये प्राप्त करूँ .उन संत के पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि अभी तक गुरु धारण तो नहीं किया हैं ओर मैं गुरु मानता भी नहीं . वे संत मुस्कुराये ओर कहा इसलिए तो सब गड़बड़ हो गया ,तुम्हारे नहीं मानने से क्या होगा ? गुरु करण आवश्यक हैं तुम शास्त्रग्य हो कर भी कैसी बाते बोलते हो .राम ओर कृष्ण जैसे अवतारों ने भी गुरु धारण किया था , तुमने मकान तो बहुत अच्छा बनाया पर नीव नहीं होने से सब गड़बड़ हो गया . (आगे स्वयं उन्हें एक अति उच्चावस्था प्राप्त सदगुरुदेव से दीक्षा प्राप्त हुए ओर वे स्वयं एक उच्च कोटि के योगी , ओर गुरु बने)

Soot Rahshyam Part -2

सूत रहश्यम -2

(पारद विज्ञानं तंत्र के अप्रकाशित , अप्राप्य गोपनीय ग्रन्थ की श्रृंखला का अगला भाग)

While describing surya vigyan told that where there is nothing ,that is shuonya .and existence of everything in that shuony, is known as purntv or completeness. Surya or sun represents purntv i.e. completeness. and getting purntv from shuonya is possible through sun , there are three form of sun(surya).	सूर्य विज्ञानं को समझाते हुए बताया की –जहाँ कुछ नहीं है वह शुन्य है और इसी शुन्य में सभी कुछ की उपस्तिथि पूर्णत्व कहलाती है . सूर्य का पर्याय पूर्णत्व भी है , शुन्य से पूर्णत्व की प्राप्ति सूर्य साधना से ही संभव हो सकती है , सूर्य के तीन ही रूप हैं :-
Ghranim	घृणि
Surya	सूर्य
Aaditya	आदित्य
The whole sun science is depend on those upper mentioned form, this fact we all knew that or read that through sun science creation of everything/making is possible .but..what will achieve by this conversion or making of substance ??? can we have ability to conserve this science,? can we have ability to conserve and digest/absorbs in heart the	इन्ही तीनों रूप पर ही सूर्य सिद्धांत टिका हुआ है. ये तो हम सभी जानते हैं या हमने पढ़ा ही होगा की सूर्य सिद्धांत के माध्यम से पदार्थों का सृजन संभव है . पर..... क्या होगा पदार्थों का सृजन या रूपांतरण करने से ??? क्या हम इस ज्ञान को संरक्षित कर सकते हैं , क्या हम इन दिव्य ज्ञान परंपरा को आत्मसात कर रोक पाएंगे ??? इस प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए चेतना

parampra (orders) theses divine sciences.

To have this type of divine gyan ,one must have /raise the level of his chetna (mental attentiveness) up to a divine standard and same level of chetna , one has to pass to coming generation. We have to understand the sanskars (a special ways by which purification body, mind and soul is possible) through which not only our coming generation but our self ,can too become sanskarised and become purn chaitnya . all the 16 sanksar ,have special meaning in human life. They are a not any general karam kand (simple procedure). But carries a special meaning and effectiveness . through theses a person can equipped with / have with bal, buddhi and veerta (courage ,wisdom, and manliness)and brilliance .

A complete man /person can only born when his ,the seed time/tithi and time is finalize after taking care planetary bal .completing the special mantra's jap as instructed by a competent guru for the instructed period and then husband and wife physically unite ,than outcome of that i.e. seed , is fully be with Garbhadhan

का एक दिव्य स्तर चाहिए होता है. और हमें इस स्तर की चेतना ही अपनी आने वाली पीढ़ियों को देनी होगी . हमें उन संस्कारो को समझना होगा जिनके द्वारा अपने वंशजों और स्वयं को भी हम पूर्ण चैतन्य हो सकते हैं. जिन १६ संस्कारों का मानव जीवन में उल्लेख होता है , वे कोई सामान्य कर्मकांड नहीं है अपितु उनका विशेष महत्त्व है , इन संस्कारों से ही तो तेजस्विता, बल, बुद्धि और वीरता से मनुष्य युक्त हो जाता है.

पूर्ण मनुष्य की उत्पत्ति तभी हो सकती है जब ग्रहों का उचित बलाबल देखकर बीजारोपण की तिथि और समय तय किया जाये, गुरु से उन विशेष मन्त्रों को प्राप्त कर उसका नियत समय तक विधि पूर्वक जप किया जाये और तत्पश्चात सहवास करने पर जो बीजारोपण होता है वो गर्भाधान संस्कार से युक्त होता है या ये कह लो की बीजारोपण के साथ ही गर्भाधान संस्कार प्रारंभ हो जाता है .तब जो संतान होती है वो पूर्ण ही होती है.

इसी प्रकार सूर्य सिद्धांत के माध्यम से भी बिना गर्भ के संतान उत्पन्न की जा सकती है , उसका सृजन किया जा सकता है , जरुरत है प्रामाणिक क्रिया की. और ये कोई नवीन बात नहीं हो रही है अपितु पौराणिक काल से ऐसा होता आया है. यदि उचित मंत्र हो , सूर्य सिद्धांत का ज्ञान हो तो

Sanskar. Or you can say through beejaropan (seeding) garbhadhan sanksr starts, then whatever child male or female born become complete i.e. purn.

Through the same way without any garbha (womb), child can be born or created. The need is to have authentic gyan and process. Theses are not any new facts but it happening from very puranik age, if having appropriate mantra and knowledge of surya vigyan correct procedure than it is possible.

If we try to understand the various symbol like there is the story comes in shiv puran that lord ganpati is created by ma parvati through her ubtan only. Theses are not any imaginary things. Through this process if any one want to create any child than reverse process (vilom prakriya) can be done on ubtan of human body, through each part of the ubtan , same portion of the new created one ,has to be made. This creation has to be done through vilom gati means first foot has to be created than as.. to proceed upward means slowly and slowly toward head. Than the sun (sury) mantra comparise of 21 rays has to be used to inducing the pran to the

ऐसा संभव है .

यदि हम प्रतीकों को समझे तो शिव पुराण में विवरण आता है की भगवान गणपति की उत्पत्ति माँ पार्वती ने अपने उबटन से किया था . ये कोई कल्पना मात्र नहीं है , पुंसवन संस्कार का प्रयोग करके ही ऐसा संभव हो पाता है . इस पद्धति के द्वारा जब बिना गर्भ के सृजन करना हो तो शरीर की उबटन से विलोम गति से निर्माण कार्य किया जाता है. प्रत्येक भाग के उबटन से सृजित का वही भाग बनाया जाता है , निर्माण विलोम गति से होता है मतलब पहले पैरों का निर्माण होगा इसी क्रम से धीरे धीरे शीश तक पंहुचा जाता है.

तत्पश्चात सूर्य मन्त्रों में समाहित २१ किरणों के द्वारा पूर्ण चेतना को प्रदान कर प्राण दिए जाते हैं. तभी उत्पन्न जीव पूर्ण होता है, सामान्य मानवों के जैसे आभास न होकर सार्थक व्यक्तित्व लिए होता है. और ये सभी ज्ञानसे परिपूर्ण होते हैं आप जैसे ही ज्ञान से इन्हें युक्त करना चाहोगे ये उस ज्ञान से परिपूर्ण ही होते हैं. मेरी बात को आप अन्यथा न ले क्योंकि आधुनिक विज्ञानं भी किसी प्राणी के डी.एन.ए. से ठीक उन्ही गुणों से युक्त वैसा ही प्राणी बनाने की तकनीक प्रस्तुत कर चुके हैं , और ये डी.एन.ए. शरीर के मैल से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है .यहाँ मैं वैज्ञानिक विस्तार पर नहीं जाना चाह रहा हूँ.

body. Only than created being is called complete. and carrying the real personality not any shadow of that. Do not take mine thought as other wise, through modern science also demonstrate the process to create the same living being through DNA. and this DNA can be easily gained/found through ubtan (mail) of human body.

और ऐसा भी नहीं है की गर्भस्थ शिशु को या हमें पुंसवन संस्कार की उपलब्धियां प्राप्त नहीं हो सकती. जीवन के कैसे भी अभावों को इस क्रिया द्वारा दूर किया जा सकता है . और यदि ये मन्त्र जो की अत्यधिक गोपनीय है , मात्र इनका मूल ध्वनि में श्रवण किया जाये तो पूर्णता प्राप्त करने से हमें कोई नहीं रोक सकता .

And also this is not the situation that unborn child or us can not be benefitted by the PUNSWAN SANSKAR. And any type of misery of life can be removed easily through that .this mantra that is too much hidden and secretive if we only listen that ,so that result can be easily gained and completeness can be achieved. If listen in their original voice and pronunciation than completeness is at our door. We are still fortunate that this mantra still available to us as in its original voice and pronunciation. That too in Poojya Sadgurudev ji divine ,time less voice . **मैं गर्भस्थ शिशु को चेतना देता हूँ**"" (I am giving the chetana to unborn child (in womb)) this audio cassettes carries the mantra in its original form. Those who want to have

और हम भाग्यशाली हैं की आज भी ये मंत्र हमें ब्रह्मांडीय मूल ध्वनि में प्राप्य हैं वो भी सदगुरुदेव की कालान्जयी वाणी में. "**मैं गर्भस्थ शिशु को चेतना देता हूँ**" नामक कैसेट में वो दुर्लभ मन्त्र मूल ध्वनि में ही उपस्थित है. जिसे सौंदर्य चाहिए उसे सौंदर्य को प्रदान करने में ,जो तंत्र में प्रवीण होना चाहता है उसे तंत्र प्रावीण्य प्रदान करने में, जो आर्थिक उपलब्धि चाहता है उसे मनोवांछित उपलब्धि देने में ये मंत्र समर्थ हैं.

जरुरत है इसे श्रुति करने की. मैंने जो कुछ लिखा है वो कुछ भी नहीं हैं उस संस्कार को समझाने में. जिसे की कही अधिक सरलता से और विस्तार से सदगुरुदेव ने समझाया है , यहाँ विषय को विस्तार देने की जरुरत नहीं थी,इसलिए मैंने यहाँ वो विस्तार नहीं किया है , सूत रहस्यम सूर्य विज्ञानं, तंत्र विज्ञानं और पारद विज्ञानं का योग

beauty for that it works, those who want to be expert in tantra for that too, like that in financial field too. The need to listen it. What i have written here, just stand nowhere ,while understanding Sanskar as Sadgurudev ji define in that. here there is no need to elaborate that topic that s why I did not. soota rahshyam is the complete combination of surya vigyan, tantra vigyan and parad vigyan. Since this Sanskar is realted to kriyatmak aspect of sun science that's why I write it here just for having little glimpse . In next issue the topic of the article of this series is based on how to get ever youthfulness through surya mantra.	विधान है . और ये संस्कार क्यूंकि सूर्य सिद्धांत की क्रियात्मक पद्धति से ही सम्बंधित है इसलिए मात्र उसका दिग्दर्शन करने के लिए ही ये लेख इस बार संक्षेप में यहाँ दिया गया है . अगले अंक का लेख सूर्यमन्त्र के द्वारा चिरयौवन प्राप्त करने से सम्बंधित रहेगा.

Swarn Rahshyam Part -2

स्वर्ण रहस्यम-2

कालज्ञान और औषधियों से रस सिद्ध दर्पण निर्माण

To achieve siddhita in ras karam (parad tantra science) , the type of Aaoshidhi (herbs) used known as siddhoshidhi ,divyoshidhi and mahaoshiddhi . punanrnava ,sahdevi, tarmprabha , mahabala, kakjangha , dhatura , ravi, sarpunkha ,matsyakshi,khadinjari, indrayan,shinhika are the important herbs that provide/gives his abhisht /goal/ aim. only criteria is need that sadhak will be well informed about their inherit qualities.

Its very important that while attempting metal transmutation that keep in mind that the herbs used in that are belongs to the donar or accepter varga /section. Here we need to understand the proper meaning of that words. Accepter herbs are those who accept only a very small part of any metal's metallic element. And donor are those who provide

रस कर्म में सिद्धि पाने के मार्ग में जिन औषधियों का आश्रय लिया जाता है उन्हें सिद्धौष्धियों,दिव्यौषधि तथा महौष्धियों में विभक्त किया गया है . पुनर्नवा, सहदेवी, ताम्रप्रभा , महाबला,काकजन्घा , धर्तुर,रवि,सर्पोंखा, मतस्यक्षी,खंड्जिरी, इन्द्रायण, सिंहिका आदि प्रभुतिकी वनस्पतियां हैं जो रस शास्त्र के साधक को उसका अभीष्ट प्रदान कर देती हैं, शर्त मात्र यही है की साधक को उसके गुण धर्मों का भली भांति ज्ञान हो.

धातु परिवर्तन करते समय इस बात का ध्यान रखना अत्यधिक अनिवार्य है की हम जिस वनस्पति का प्रयोग रस कर्म के लिए कर रहे हैं , वो ग्राहक है या दात्री. यहाँ इन दोनों शब्दों के उचित अर्थ को समझना आवश्यक है. ग्राहक वनस्पतियां वो कहलाती हैं जो किसी भी धातु के धात्विक अंश को मात्र ग्रहण करती हैं. दात्री वो कहलाती हैं जो भूमि में प्राप्त धात्विक अंश को किसी अन्य धातु या पारद में प्रदान कर देती है . परन्तु कुछ वनस्पतियां ऐसी भी होती हैं जो की किसी काल विशेष में ग्राहक का गुण रखती है और किसी

metal's metallic portion to other metal or in mercury. And some of the herbs has the quality of accepter and donor both on the time based means on some part of the day /month /year they behaves as the donor and other time like accepter. for example one such a herbs is sarpunkha and we are using it for silver making purpose. if we do khral with her juice with silver or kharal with silver kamdheny with that and after 4/5 hours we set aside silver for one side and the remaining juice is again kharal with mercury and use for mardan Sanskar, and after tighten it, as per sharab samput and heat up as appropriate than the mercury present in that samput get into contact with herbs ansh and behave like kshetra and accept silver seed present in that juice .and in the out come ,he left its water ansh and became solid silver. And the same process is done with dhatura plants juice for making gold here only the difference is that juice of dhatura is, khral with (mardan) with swarna kamdhenu only than process happened.

कालविशेष में दात्री के गुणों से युक्त हो जाती हैं. मान लो की तीव्र प्रभावों से युक्त एक वनस्पति है सर्पोंखा जिसका प्रयोग रजत निर्माण के लिए किया जाता है तो यदि हम उसे प्राप्त करके उसके स्वरस में रजत चूर्ण का मर्दन करते हैं या रजत के काम धेनु का मर्दन करते हैं और ४-५ घंटों के बाद उस रजत में से रस को प्रथक करके ठीक उसी स्वरस में पारद का मर्दन या संस्कार करते हैं और शराव सम्पुट करके जब हम उस सम्पुट को वांछित अग्नि देते हैं तो उस सम्पुट में उपस्थित पारद का उस वनस्पति से संपर्क हो जाते के कारण वो पारद क्षेत्र धर्म का निर्वाह कर रजत बीज का चरण कर लेता है और स्वयं का जलीयांश त्याग कर स्वयं रजत में परिवर्तित हो जाता है , ठीक यही क्रिया वो धतूरे के साथ स्वर्ण में परिवर्तित होने के लिए करता है. अंतर यहाँ सिर्फ इतना ही होता है की धतूरे के स्वरस का मर्दन स्वर्ण कामधेनु के साथ किया जाता है तभी ये प्रक्रिया होती है.

परन्तु एक महत्वपूर्ण तथ्य भी मैं आपको बता देता हूँ की वनस्पतियों के ये गुण ऋतु अनुसार कम या ज्यादा होते जाते हैं. मुझे स्वामी प्रज्ञानंद जी जब ये प्रक्रिया समझा रहे थे तो उन्होंने अलग अलग ऋतु में ठीक उसी पौधे के रस से ये क्रिया करके दिखाई परन्तु प्रत्येक बार पारद में क्षेत्र रूप में जो बीज चारण हुआ था उसके परिणाम स्वरुप पारद उससे १०० गुना ही रूपांतरित हो पाया. तब मैंने उनसे निराशाजनक स्वर में पूछा की तब तो शत प्रतिशत परिणाम पाने के लिए अनुकूल ऋतु का इंतजार करना होगा?

And one more important fact I will describe here that theses quality of herbs increases and decreases as per the season. when **swami pragyanand ji** describing this process he did the same process in different, different season with the same plant's juice and the seed accepted by the mercury various differently and in result only 100 times mercury get transmutation , than sadly I asked him than I have to wait till the appointee season comes.

He answered no. in every 24 hours theses all the season comes one by one that means in time of summer season definitely summer will be prominent but winter and rainy season also come one by one. Than we can use the herbs for to get desired result as per according to their season and our need. Its very important facts that one ras shashtri must/ should know that when any herbs is have their full effect only than with the use of proper mantra herbs juice should be taken out. These herbs has their own section like rakt varga (red color based secation), swaet varg (white color), yellow and blue section like that. Theses herbs works with the mercury give their respective color means

तब उन्होंने उत्तर दिया की नहीं २४ घंटों में भी अलग अलग समय ग्रीष्म,शरद,शिशिर, बसंत आदि ऋतुएं प्रकट होती हैं और प्रत्येक मौसम में सभी ऋतुएँ आती हैं. मतलब ग्रीष्म ऋतु के २४ घंटो में ग्रीष्म तो आएगी ही परन्तु बसंत और शरद आदि ऋतुयें भी आएँगी ही. तब उस वनस्पति का प्रयोग उनके गुणों के अनुसार अल्प या अधिक परिणाम पाने के लिए किया जा सकता है. एक रस शास्त्री को ये जानना भी आवश्यक होता है की वनस्पतियों अपने पूर्ण प्रभाव को कब देती हैं. तभी उचित मन्त्रों के द्वारा उनका आवाहन करके उनके अंग विशेष को प्राप्त कर उनसे स्वरस निकालना चाहिए. वनस्पतियों का अपना अपना वर्ण वर्ग होता है , रक्त वर्ग, श्वेत वर्ग,पीत वर्ग , नील वर्ग आदि आदि. ये वनस्पतिया पारद से क्रिया कर उसे रग प्रदान करती हैं अर्थात रंजन कर अपना वर्ण प्रदान कर देती हैं . और यही राग गुण पारद तब धातुओं या शरीर को प्रदान करता है जब उसका क्रामण उन पर किया गया हो.

यदि विशिष्ट क्रम और अनुपात से इन औषधियों का योग कराया जाये तो ये विलक्षण प्रभाव दिखाने में समर्थ होती हैं . मुझे भली भांति याद है की जब मैंने पहली बार स्वर्ण तन्त्रं पढ़ी थी तो उस ग्रन्थ को पढ़ कर मैं सदगुरुदेव के पास गया और मैंने उनसे प्रश्न किया की सदगुरुदेव क्या कोई ऐसी पद्धति है जिससे उन रस सिद्धों का आवाहन किया जा सके जो की इस ग्रन्थ में वर्णित हैं, क्यूंकि जैसी

ranjan kriya happened, and the same color or rang mercury or parad provide to other mental or body if kraman kriya is done on that .	पारद गुटिका आपने बताई है, वो बनाना कम से कम मेरे लिए अभी तो संभव नहीं है , तब क्या कोई उपाय नहीं है ,जिससे मैं उन्हें आवाहित कर सकू??
If through a specific way and specific ratio theses herbs are mix together than un imaginable effect can be seen. I still remember that while I first read the SWARNATANTRA and after reading that I went to Sadgurudev ji and told him that if there are any paddhati through that I can also aawahan to ras siddh mentioned in that books , but incurrent it s very difficult me to make such a gutika as mentioned in the books. Are their not any process by which I can aawahan to them.	सदगुरुदेव ने कहा की है क्यूँ नहीं , पर बात रस सिद्धों और साधिकाओं की है तो इसके लिए माध्यम रूप में पारद को लेना ही पड़ेगा और ये पारद ६ गुना गंधक जारण से युक्त हो(ये संस्कार साधक स्वयं ही करे तभी ये क्रिया हो पाती है)फिर इस पारद का संयोग कुछ वनस्पतियों से करके उसके द्वारा एक विशिष्ट पद्धति से दर्पण बनाया जाये तो इस प्रकार के दर्पण के द्वारा रस सिद्धों का आवाहन किया जा सकता है और उनसे अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी प्राप्त किया जा सकता है .
Sadgurudev ji replied why not, but the question is about aawahan of ras siddh and sadhika than we have to use parad as a medium and that parad should be of six times Gandhak/salpher jarit (all the necessary sanskar needed for that already be done bythe sadhak who want to have this mirror) and through application of various herbs to this parad and finally a solution is prepared and through a specific way a mirror Is	इस दर्पण का निर्माण किस प्रकार किया जा सकता है ? और इसकी ये योग कैसे कराया जाता है? तब गुरुदेव ने रस सिद्ध दर्पण निर्माण की तीन विधियाँ बताई जिनका मैंने प्रयोग करके देखा ,उनमे से एक प्रक्रिया को मैं आप सभी गुरुभाइयों के समक्ष रख रहा हूँ. ८ वे संस्कार से युक्त पारद से शिवलिंग तो बनाया जा सकता हैं पर इसके साथ अग्निक्रिया नहीं की जा सकती हैं .अर्थात अग्नि के माध्यम से इसका बंधन नहीं कर सकते हैं .वाम मार्ग में ऐसा कर सकते हैं पर गंधक जारण नहीं कर सकते हैं. शिवलिंग निर्माण के लिए अष्ट संस्कार वाले पारद

prepared and on this mirror any ras siddha can be aawahan and person get the answer of any queries to them.

How this mirror scan be prepared and what is the process by which herbs are used in that ?.

Sadgurudev ji describe to me three way , that I practically did all , one of that I am here describing you my guru brother.

Parad with having stage of asht Sanskar , can be used for shivling \making but on that parad agni kriya/using fire is not allowed means through fire we can not make bandhan /solidifying that .vaam marg we can do that but using gandhak is not permissible . for shivling making asht sankar parad is needed, but for this prayog we require at least six times Gandhak jarit parad , prepare at least 100 to 200 gram of such a sankarit and jarit parad by self only (no other person help can be taken), since if other person touch this type parad the mercury accept his mental and physical vibration. That creates obstruction. In fulfilling our procedure / kriya.

की आवश्यकता होती हैं, पर इस प्रयोग के लिए तो ६ गुना गंधक जारित पारद की अनिवार्यता हैं ही . स्वयं के द्वारा कम से कम १०० ग्राम से २०० ग्राम तो पारद गंधक जर्न संस्कार से संन्सकारित करे, किसी अन्य से प्राप्त किया पारद इस प्रक्रिया में उपयोगी नहीं हैं .क्योंकि किसी अन्य के हाथ लगा पारद उस व्यक्ति विशेष के शरिरुइका और मानसिक स्पंदन को ग्रहण कर लेता है जिससे क्रिया में व्यवधान उत्पन्न होता है.

इसके अतिरिक्त निम्न पदार्थों की भी अनिवार्यता होगी , इस दिव्य तेजस्वी दर्पण के निर्माण में..

1. पीपल की अन्तः छाल का रस
2. अकरकरा का रस
3. वज्र(सेहुंड /त्रिधारा) का रस
4. काला संखिया
5. सरपुंखा का रस या दूध
6. बड (वरगद) का दूध
7. काली तुलसी का रस
8. काले धतुरा का रस
9. स्वर्ण क्षीरी का दूध
10. शंख की भस्म
11. धान्य अभ्रक
12. इन्द्रायण का रस
13. रक्त पुनर्नवा का रस /अर्क
14. अपामार्ग का अर्क
15. अगस्त्य वृक्ष का अर्क
16. माँ भगवती कामख्या महा पीठ का स्वयं निस्रत पवित्र जल

इन सभी पदार्थ की सम्मिलित कुल मात्रा उतनी

In addition to that following things are required for that making brilliance ,most divine mirror.

1. Inner core juice of pepal tree
2. Juice of akarkara
3. Juice of vajra (sehund)
4. Kala sankhiiya
5. Juice of bargad tree
6. Juice of kali tulsi
7. Juice ofblkack dhatura
8. Milk of swarna kshiri
9. Ash of shanksha
10. Dhyany Abhrak
11. Juice of indrayan.
12. Ark of rakt purnnava
13. Ark of apamarg
14. Ark of agstay tree
15. And the holy water comingout of ma kamakhya maha yoni peeth.

All the above mentioned juice total quantity should be just equal to as the weight of mercury is to be taken.mix all the substance in any series and in a khral and while doing khral chant mentally

ही होना चाहिए जितनी की पारद का वजन लिया गया हैं .

इन सभी को किसी भी क्रम से खरल में डाल कर खरल प्रारंभ करे , और एक विशेष मंत्र का लगातार उच्चारण करते रहे .जब सभी पदार्थ और पारद मिल कर एक रस हो जाये . वह मंत्र है **'ओम ब्लूम् ओम'**. इसके बाद उस मिश्रण को सामने रख कर स्नान कर के पश्चिम मुख होकर निम्न मंत्र का १०००० बार जप करे , याद रखिये किसी भी प्रक्रिया के क्रम को स्वयं के मन से परिवर्तित ना करे अन्यथा क्रिया की सफलता संदिग्ध ही रहेगी.

मन्त्र- ओम चले चुलेचंडे कुमारिक्योरगं प्रविश्य यथा भूतं यथा भव्यं यथा भवति सत्यं दर्शय दर्शय भगवति मा विलम्बय विलम्बय ममाशां पूरय पूरय स्वाहा

तब एक आयताकार या गोलाकार कांच का टुकड़ा ले . एक इसके अनुरूप आकर का फ्रेम भी ले जिसमें की यह अच्छी तरह से फिक्स हो जाये .एक लाल रंग का मख मलमल का कपडा भी ले ले .

प्रक्रिया प्रारभ करने से पहले स्नान कर के पूर्ण शुद्ध हो कर पूर्ण सदगुरुदेव पूजन करे सिद्ध कुंजिका स्त्रोत के ११ पाठ ,महा मृत्यु न्जय मंत्र का ११ माला जप करे इसके बाद अघोर मंत्र का जप करे .समस्त रस सिद्धो के पूजन के बाद खरल में पारद मिश्रित लेप को उस फ्रेम और

the mantra **om bloom om** after that take bath and than facing west chant 10,000 times following mantra ,be careful do not modify the process mentioned here to suit you , other wise the success will be doubtful .

Mantra

Om chale chulechande kumarikyorang yatha bhutam bhavyam yatha bhavti satyam darshay darshay bhagvati ma vilambay vilambay mamansha puray puray swaha.

Than take any glass mirror either rectangular or circulare size and appropriate frame also take so thatit properly get fixed inthat. Take red colored makh mal mal cloth.

Before starting the process wash properly and have full complete Sadgurudev poojan and do 11 paath of Siddh kunjika strota, Maha Mritunjaya mantra 11 round rosary (mala), and then chant Aghor mantra .than after all the ras siddha poojan use that mixture of parad and herbs fill in the middle hollow portion of mirror and frame , and apply makhmalmal cloth on the mirror so that no other person see that .

दर्पण के मध्य खाली स्थान मैं भरना होगा . इस दर्पण के ऊपर मख मलमल का कपडा डाल दे .इसे आपके अतिरिक्त कोई ओर देखे नहीं . फिर एक स्टूल ले इस पर एक घी का दीपक लगा दे , और हमें दर्पण को ऐसे लगाना हैं कि कि दीपक कि लौ ओर इस दर्पण के मध्य का मध्य बिंदु एक सीध में ही हो . मतलब जब आप अपने आसन पर भूमि पर बैठे तो ये दीपक आपकी कि लौ और दर्पण का मध्य बिंदु एक ही सीध में ही होगे . अब इसको प्राण चेतना से अपूरित करने के लिए सिद्ध कुंजिका स्त्रोत के ५१ पाठ व गुरु मंत्र की ११ माला करे.आसन के लिए श्वेत कम्बल , स्वेत रंग का वस्त्र धरण करे , फिर रात्रि के १२ बजे के बाद से लेकर प्रातः के ५ बजे के मध्य में ही प्रयोग करें. पर इसके लिए पहले ५ माला गुरु मन्त्र का जप करे. फिर दीपक कि लौ (जो दर्पण में बिम्बित हो रही है)में अत्यंत ही विनीत भाव से आवाहन करे तो दर्पण में संबंधित रस सिद्ध आपके सम्मुख होंगे और आप उनसे पहले से ही लिखे प्रश्न नम्रता पूर्वक पूछे . सब्बंधित रस आचार्य या आचार्या आपके प्रश्नों के उत्तर देगे जो कि आपको सुनाई देगें

इसके बाद आप उन्हें नम्रता पूर्वक विदा करें , शांति पाठ करे पुनः एक माला गुरु मन्त्र जप करे . और उस दर्पण पर लाल रंग का मख मलमल का कपडा डाल दे.ये तो वनस्पतियों की सिद्धता का प्रमाण है जब आप इसे करके देखेंगे तो सत्यता और असत्यता का खुद ही पता चल जायेगा. इसी प्रकार इन वनस्पतियों में प्राकृत

than take any wooden stand of such an height and put a ghee Deepak on that , and fix the mirror on the wall such that middle portion of the mirror and flame of Deepak be in a staright line, means when you sit on the floor on your aasan than your eye , flame and middle portion of that mirror be in a line. Then for pranschetana a do chant 51 paath of siddh kunjika strota , and 11 round rosary of guru mantra . for aasan (sitting mat) it should be of while color kambal and white colored clothe should be used by you. And do this process in between 12 Am in night to 5 am in the Am morning only but for to use that 5 round of rosary of guru mantra is must. Tan see the reflection of the Deepak flame in the mirror concentrate on that and with full politeness have aawahan of any ras siddha. Ask him any of the question already written with you in this field related, the related ras acharya and achray will definitely give the answer which will be clearly audible to you.

After that very politely ask them to leave. Again do the shanti paath and 1 round of rosary of guru mantra. And red colored

धात्विक अंश तरल या द्रुति रूप में उपस्थित होता है और हमें काल का विशेष अध्यन कर ये जाना जा सकता है की किन क्षणों में स्वर्ण चैतन्य होता है और किन क्षणों में रजत बीज की प्राप्ति की जा सकती है . इसका ज्ञान भी अत्यंत आवश्यक है.

(क्रमशः).............

[गंधक, शहद,पारद को एकत्र कर के ४८ घंटे खरल करें यहाँ एक बात ध्यान रखना जरुरी है की पारद और गंधक संस्कार तथा बीज युक्त होना आवश्यक हैं अन्यथा क्रिया बिगड सकती है फिर उस मिश्रण को आतिशी बोतल में भर कर ३५ दिनों के लिए जमीं में गड्ढा खोदकर दबा दे और ऊपर की भूमि पर दिनभर सूर्य का प्रकाश लगता रहे , ऐसी जगह पर ही ये क्रिया करें . अवधि पूर्ण होने पर इसे निकाल ले और इसकी एक माशे के बराबर की मात्रा १ तोला रजत को स्वर्ण कर देती है.]

makhmalmal cloth again put on that mirror. Theses are the authentication of herbs siddhita, when you yourself try that you can understand fully yourself. Like the same way various herbs has metallic ansh in liquid or in druti form. And can calculate the specific proper time when swarna (gold) becomes chaitnya, and in which moment silver… that gyan is also must.

In continue….

[Gandhak (sulpher). Shahad (honey) ,parad (sankarised mercury) mix together and khral for 48 hours, here note that parad and Gandhak should be of sakarait and beej yukt. Other wise the process could not be successful. Fill that mixture in any aatishi shishi (glass flask) and kept in earthen hole already created for 35 days , and that earthen hole should be situated in such a way that day light of sun should be onthat. after that duration complete take out that flask , this paste one masha can convert 1 tola of silver in gold.]

Ayurved

आयुर्वेद के अचूक सिद्ध सरल प्रयोग

if on the place of burn applied the pulp of gwarpatha 's green leanes than burn pain gets down and no mark will appear on that place infuture.	हर जगह आसानी से प्राप्त ,घृत कुमारी या ग्वार पाठा के हरे पत्ते को काट ले इसका आंतरिक गूदा यदि जले हुए भाग पर लगाया जाये तो तत्काल ही जलन शांत होती हैं तथा दाग भी नहीं पड़ता हैं
take juice of dudhi plant's juice and apply onthe place where waist pain happens. it will reduce that .	दुधि नाम की वनस्पति का रस लेकर हाथ से मसल ले या फिर पीस ले इसे कमर में अचानक उठे दर्द के स्थान पर लगाये दर्द शांत हो जाता हैं.
properly heat up the laung on the round plate of iron and grind it and if taken it very small quantity with honey than it will very helpful inreducing the khansior cough but after time plz do not drink water nearly 1 hour.	लौंग को तबे पर सेंक ले और पीस कर इसकी अल्प मात्रा को बहुत थोड़े से शहद के साथ चाटने से खांसी में आराम होता हैं पर कुछ देर तक फिर पानी न पिए.

Saral Lakshmi Prayog

लक्ष्मी प्राप्ति का अत्यंत सरल सहज प्रयोग

To become wealthy is a dream of any human being , and now a days situation is so difficult that , this became bitter truth . how to make her stationary i.e. who is ever moving. How many type of sadhana and how many ways are of goddess lakshmi in sadhana field, but when time is less and one has to get his desire aim ,than no one can turn his face towards the usefulness of small sadhana means prayog . I am here mentioning a very small prayog if done with full faith than you can yourself see the changes in your financial life.

Take one small earthen pot normally used for keeping coin by small children (gullak) and whenever you want to deposit any amount (greater or lesser it does not matters) first chant the mantra 108 times only than place that amount in that. Gradually goddess lakshmi bless your home with her presence.

Mantra

Shreem hreem hreem shreem om||

लक्ष्मी वान बनना तो मनुष्य का सपना रहता आया हैं कम से कम आज के जीवन की कठोर परिस्थितियों को देख कर के तो यही कटु सत्य लगता हैं ,पर इन चंचला को कैसे स्थायित्व दिया जाये.कितनी साधना , कितने ही पद्धतियों इनके बारे में साधना जगत में प्रचलित हैं पर सबका मूल मन्त्र तो यही हैं की जल्द से जल्द इनकी कृपा प्राप्त हो पर कैसे ? जब पाना हो अभीष्ट, और न हो समय तब इन प्रयोगों की उपयोगिता से कौन मुंह मोड़ सकता हैं .नित्य प्रति के जीवन में सफलता प्रदायक एक ऐसे ही प्रयोग को आपके समक्ष रख रहा हूँ, यदि आप इसे पूर्ण विस्वास से करेंगे तो इसके परिणाम आप स्वयं ही अनुभुत कर आश्चर्य चकित हो उठेंगे .

घर में पैसे जोड़ने में उपयोग आई जाने वाली मिटटी की गुल्लक ले ले . ओर जब भी आप इसमें कोई भी धन राशी कम या ज्यादा डाले(इससे फरक नहीं पड़ता हैं) तब निम्न मंत्र का उस धन राशि को हाँथ में रखते हुए १०८ बार केबल उच्चारण कर ले ,फिर गुल्लक में उसे डाल दे धीरे धीरे आप के घर में स्वयं ही लक्ष्मी वास /स्थिरता होने लगेगी .

मंत्र :श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं ॐ ||

We Have Got a Mail

You have said it

Dear Arif Bhai,Your efforts are really admirable as this is excellent knowledge sharing.
.................................*Stephan Jose*

its my pleasure that you have sent me the first issue of E Magzine so nice and great. Congrates for the same and may your all dreams come true this is the pray from the bottom of my heart --- ....*priti rathore*

ap logon ko sadhuvad and dhanyad. Ap logon ka prayas sarahneyya hai. Gurudev and Ishwar se prarthana hai ki vo ap logon ki sada sahatya karen jis se ap log ye subh karya kartay rahein.. **.....omnimnikhil@gmail.com**

bahut bahut dhanyawad is ke liye. pustak padne ke baad aap ko apna aur dhanyawad bhejunga ... **....... t p singh**

This magazine is really very good. Once started, I could not control my self and completed this. It is such a valuable magazine. I want to thank you for all the efforts and care which you have for us. Bhaiyya, is it possible to have Guru Sadhna special edition of this magazine**?** **----------** **--------- manish sharma**

ye mera farj banta hai bhai,ki aapne es ullekniya karya e-magazine ko nikal kar kiya hai,jyada nahi kuch kar sakta to kam se kam sarahna to kar hi sakta hoon.kyonki kafi gurubhai sochte hoonge kuch karne ke liye kintu aapne bahut kuch kar dikhya---- ....**bhupendra**

have received the "tantra Kaumudi" Magazine. I have gone through it and its quite knowledgeable. I m very grateful to you for this e-magazine-- -- ....**Basudev**

I received the magazine. The sadhanas given in magazine are really very useful and amazing. We are thankful to have such divine sadhanas in the form of magazine. Thanks to nikhil alchemy team- - ....**pritesh**

I recieved the E-magzine and when i went through it i found myself with amazing feeling which i really cant express in words..Well what to say abt e-mag...wordless---......... ....**suvarnashilpi**

It is really awesome magazine.I will try few stuffs. ....**vaibhav**

I copied magazine from yahoo group. Please tell us how can we help you. Again many thanks.--..... ... **navin**

......Thanks to freely provide it to us.-- .... **Taiyakes**

In the End

ये अंक भी इतनी जल्दी समाप्त पर आ गया गया, ज्ञान के एक नयी किरण आपकेजीवन में .. प्रवेश कर रही हैं .हमें बिस्वास हैं की ये अंक आपकी आशाओं के अनुरूप रह कर, उस पर खरा उतरा होगा .

इस अंक में लगभग ७० पेज की सामग्री को बढ़ते हुए आकार को देख कर विवशता में रोकना पड़ा हैं , ये सामग्री पुनः जब कभी काल ज्ञान का अंक निकलेगा तब आपके समक्ष रखी जाएगी इसके अतिरिक्त कर्ण पिशाच या कर्ण पिशाचिनी जैसी साधना पहले से ही ब्लॉग पर हैं उन्हें यहाँ पुनः देना , मात्र विस्तार करना था जो उचित भी नहीं था .

अगला अंक - गुह्य तंत्र साधनाओ पर आधारित होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

now this second issue comes to end so early ,a new chapter of our great divine gyan opens to you , we are confident that this issue is upto your expectation .

nearly 70 pages of sadhana related article has to be set aside since keepinginmind the growing size of the e mag. And that will be inclided in any future issue of e mag if based on kaal gyan.and sadhan like karan pishach and karan pisachi is already onth eblog so reapeating here is just the waste of time.

Our next issue will be based on guhy tantra sadhanas , for details ofthat plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com

and

yahoo group

Nikhil alchemy

We all here , as a member of

Tantra kaumudi

E - magazine Team

praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI GURUDEV